

A.C. Joshi Library  
P.U. Chandigarh

MSS No. 298 Subject PHILOSOPHY  
Name of MSS अलंकार कला निधि.  
Author कृष्ण भट्ट  
Period \_\_\_\_\_ Folios 99  
Script Sanskrit Source Prithi Pal Singh  
Missing Folios N.A.



A. No. 298. 000

श्रीलंकार कला निधि

भक्तिकोटी  
हस्त लिखित  
संस्कृत

भक्तिकोटी  
हस्त लिखित  
संस्कृत

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीराधां नमरो जयति ॥ अथ श्रीलंकार कलानिधिलिख्यते मंग  
लाचर्नको सवैया ॥ कुंडलमंडिकपोलमंडिमसंडलीयै मलिमंडलमंडन ॥ मंडततंडवसंड  
प्रचंडतुंडमहामदकुंडमंडन ॥ कुंडलीको उपवीतमखंडसुधाकरखंडधरै तमखंडन ॥ ध्या  
वितुंडमखंडलघोरघुमंडिनरहे मयकुंडविहंडन ॥ १ कवित ॥ सकल कलानिधान ज  
यसिंहमपधरै प्रभुताई मयवानमदधरीनो है कविता केर सपररी जतर सगुपवर सव कवि  
लोगन प्रमोद जिन दीनो है तिन कविलाल कलानिधिसो सनेह कर की योजवहु कम कछु कर  
सभीनो है तवतिन भाषा मै मसख कविनी तमान श्रीलंकार कलानिधनाम ग्रंथ की नो है २  
दोहरा ॥ सभव संत की पंचमी करत मने कवितान ॥ हुकम पायन पकोत हां भयो ग्रंथ मवतान ॥  
३ ॥ वसंत वर्नन कवित ॥ अडत मंवीर सोई कुसम पराग पर के सर पिचक मधुनीर के शला  
की सरस सिंगारी भारी नचै नटनारी धरै सो भाव दुनंग वनवेली के समाज की वीरगावेर गु  
मुन जमदंग डफ ताल धुनि होत समताई मलिको काल मवाज की जय सिंह मप के भवन रस  
मी मजलसि की जलस कि जलसरितु राज की ४ ॥ वीततसि सरितु सै सव विकासल

५५

५५

क  
विल  
गुदेत  
रुवि  
मभिल  
लहि सरै



है चारु सरसी नहु वदन न साई है सरसों सफुली फूल न ही सो न जु ही ता की इह संग रुच रुचि न  
 हाई है ॥ फूलो गुल लाला घाई छित पै छवीली छव सुहा सारी पहिने सदाई मन माई है साह  
 व सवाई जय सिंह सखदाई वन म्राजन ववाला ज्यों वसंत रितु माई है ॥ ५ ॥ वसंत केल वन न  
 के सर के रंग भरी धूटे पिचकारी भारी तेई वहु नीर धुरवान कहु लेखीये वाजत मृदंग तेई ग  
 जत मधुर धुनि न पर मधुर मोर नादन विसेखीये बैठे नंद लाल प्रभु खेलत सरस फागुत  
 हार सवर सत पावस सी पेखीये ललत गुलाल मई लाल लाल वादर मैवाल नि की देर  
 दुति दामनि सी देखीये ई दोहरा ॥ तिह मजलसि की नोहु कम श्री जै सिंह भुवाल वर नो  
 सोरहि राव कवि इही फागु के खाल ॥ १ ॥ कोऊ तेरहि वर नही कोऊ सोरहि राव सकविक  
 लानि धवरन तसु दोने मत के भाव ॥ २ ॥ कवित ॥ सोतिन की हेल कयै धरै ने हली लाम  
 तललित समद भरी विभ्रम सों सैन है ॥ लजीले विहत वंत सविलास छये किल किंचत विवोक ।  
 यो कवि छितिके सैन है भाव के डरावन को मोदयत मनोहर केल के कलहि मध कुटमित ले  
 बहै राखे नंद लाल पीय प्रीत नीत बोध कि एतेरहि हंतावनिके भौन तेरे नैन है हेल



मूल  
माता  
शेषप

लाहावही के मत न तो है इहामित्र करने  
माता वहात है माली लाहावही केवल प्रेम  
वाह्यादि सुभावे ॥

नास नरा प्रमद निरनज

माला

1A

लघन॥ दोहरा॥ नैकन लाज समाज की जहां मानीयत कान हरत ही घोषीत मपीया हेला हावस  
मान॥ यथा॥ केसरीया सारी कसे चोए भीनी मंगी अरधमत सोलहिंगाल ललित लाल लाही  
के॥ लीये एक कर मै गुलाल भम मठी कर दजे गघटी धनै रूप चंचला ही को आगे दौन आई  
नंदलाल मन भाई घेली फा गुजहां भयो लाभ भदन कला ही को सौतिन की हेला हेली राखिर  
सरे लारे लीयुली लाज स्यो मुख मोट संचला ही को ॥ लीला हावल दोहरा पीयप्पारी ली  
लाकरत सपने चित के भाव॥ बहुभात निम्र भला धिसो वर न्यो लीला हाव॥ यथा॥ कहुं डहुं म  
ठनि मै डारत गुलाल भन कहुं त कमारत है पिचक की धार को कहुं सांखि सांजत पकर को कैं सोदा  
व पाय कहुं हो हो होरी वोलै करत विहार को कहुं फेंग हग हग फगुवा को मांगत है कहुं संग राय संस  
डारै भुजभार को नंदलाल प्यारे वाढी वाल नेह लीला वेल विरह के वासर वितावै सौही वार को ॥  
ललित हावल॥ <sup>स्वन</sup> वोल निम्र वलोकनि चल निविहर नि संदर वानि॥ काम कलित मति रसा  
वलित ललित हाव अनमान १४ यथा॥ राग ही गुलाल रूप के सरस रंग सौ सिंगार चो वानेह को  
फुले ललै चलत है॥ सीची आनि नंदलाल प्यारे प्रीत कुंम कुमालोचन म नौधौ चाह चायन वलत

यथा वा॥ तुझे फा गुधेल त सनत नंदलाल  
लप्यारे प्यारे का सौतेली रूप है  
फेंग मै गुलाल भन राय भे पिचक धरत  
कस कस सीत न घेलताई कहुं यही प्रेम  
निम्रति वेल कनेति परति र कि विहर  
ति चो पकार चाउ चित सैरही प्रेम के त  
रंग रंग ललना की लीला ललित  
है सौन चो किचकि ससी एक देर ॥ १४

समय



ई॥ मरसपरसडहंसनसपरसपरमानंदकेसौघत नकेलनिकलतई॥ सकलसमाजरसोखवी  
 लीखव<sup>न</sup>काकनेंआजुवनसाईफागखेलकीललतई १५ मदहावल॥ अपजतमदमभमानसें  
 परनप्रेमसमाज ताहीकोमदहावकरवरनतसवकविराज॥ १६॥ यथा॥ सवतनचाहिने  
 नपिचकनिभरवोरीडारिवोसरंगमनुगहीगुलालको नेहचतुराईचारुमंतरिमैवो  
 रिवोरीटोरवोसंगारचोयेकूपनकोम्यालको वाहीतनचाहिचाहिनंदलालप्यारेकीयो  
 वारवारडारिवोगुलावदलमालको॥ खवीलीखवनिश्चकिजायवोहूंदेखसाईहीयोऊम  
 दानोप्रेममदहीसोवालको १७॥ विभ्रमहावल॥ प्रियमवलोकनिचावसेंभवनवसनवना  
 व॥ करतसौरकेसौरठांसोमनविभ्रमहाव॥ १८॥ यथा॥ फलीवनवेलनिमैनंदलालप्यारे  
 रेफागुविंहरतसनतसिंगारीवालसंगको भवनवसनसंगरागसौरसौरठोरुचपच  
 रचीरुचरुचरिसुरंगको॥ सैदुरंगीलेपांयचलिआईदेखीदगजावकरंगीलेमुखपायस  
 ससंगको॥ खेलनिजेलेगेतोगुलालसेंपिचकभरीफैटभरीकेसरिपतंगचारुरंगको॥  
 १९॥ विदुतहावल॥ जाहिनबोलनदेतहैलाजलपेटतआय विदुतहावसोवरनीयेकवि



राघनसिरनाथ २० यथा॥ नैननकीमठीमनुरागहीगुलालभरभरीरूपकेसरिसरुं  
 गपिचकारीहै सरससनेहकोफुलेललैश्रंगारचोवाप्रीतकुमकुमाभावकुमनिमैडारीहै  
 साजफागुधेलवेकोसाजसजवानिकसोसाईवननागरीनवलरंगनारीहै रतिरतिराजधा  
 यलाजकेसमाजधायरहीतकिथकितचकितचौपकारीहै २१ विलासहावल॥ मतिचंच  
 लखेलतहसतवोलतविवधदुलास॥ निसदिनपीयप्पारीडुहंकरतमनेकविलास २२  
 यथा॥ प्रीतकुमकुमाकोछिरकिंठारिमनुरागसरुंगगुलालमडुहसनिसंवीरको सरस  
 कटाक्षनिकीचारुपिचकारीभरिछिरकैसहागसखकेसरिकेनीरको नंदलालप्रीतम  
 विलासरससानेपीयासंगरंगमानतहरतकामपीरको॥ सरसपरसडहंखेलतसरसफा  
 गुदेतफुनफगुवासमोलमनिहीरको॥ २३॥ किलकिंचितहावल॥ अममभिलाषगर्वम  
 रुविस्मयकौंधहर्षभयभारी॥ एकहवारहोतहावरनहिकिलकिंचितसखकारी २४ यथा  
 अभिलाषलाषभरिखेलतिसरसफागुममकदिहारिहारिजातहोतथकीसी डरतिगुला  
 लहिसरोसभौहमंगभरीगरवीलीमधीयनिसोतितनतकीसी नंदलालपीयत्पोंसंस



कचितचितवतदधिनाछलीहियहरेसोंछकीसी केलिकलाकलितमनपरूपमाधुरीको  
 चाहिचाहिस्रतिस्रचरजुचौंकचकीसी २५॥ विवोकाहावल॥ रूपप्रेमममिमानतेकपटमनाद  
 रहोय॥ ताहीकोविवोककरिवरनतहैकविलोय २६ यथा॥ गावतहीगारिरूपप्रेमकेगुमान  
 भरीनेहकेमनादरसोंनैनसरसाधीहै अततेश्वीलैनंदलालपियम्रायेफागुषेलसजिदे  
 षदेवमानंदसोंनाधीहै॥ भावसोंछकायकाहूदावसोंपकरयाएकमलनिगारिफूलमाल  
 निसोंवांधीहै॥ म्रांमम्रांजफेंठगहिठाटीफगुवाकेमिसहोहोकहिकरतमंवीरानिकीम्रां  
 धीहै २७॥ विष्टितहावल॥ सहिजमंगकीम्रोपसोंरहेनभमघनचाऊ॥ सुविष्टितहावव  
 घानीयेपरमरसीलोहाऊ॥ २८ यथा॥ छवीलीसहिजमंगम्रोपसोंछकीयेरहेभमघनव  
 सनकोनम्रादरकरतहै तापैनंदलालपीयरतिरसरोसभरीकोनसषीवातनमंगारको  
 मरतहै कोऊकप्रवीनम्रलिफागुषेलवेकीसोंजम्रागेथरहरेहरेमानहिहरतहै केसरि  
 पासारीठानिचोएकीदैटिपकानीहायपिचकारीधरधीरजदरतिहै॥ २९॥ मोटाशतहाव  
 ल॥ पीयवातनिकेचलतहीअपजतिरतिपतिम्राय॥ तीयमगिरायजेभायम्रतिसोमोटाशत

हरेम

कामदेव

तिसकामकीचछाकोभुखीमंगरायजेभायकेविपावेतहामोटाशतहाव



हाय ३० यथा॥ नंदलाल प्यारे आज वेलें रंगभीनी फाग के सरिके नीरकी मनी सीवर सात है  
 मानत गुलाल यौ संधीर की संधेरी जामै सभ के मनोरथ की वेलि सर सात है यों सून सधी के वै  
 न सैं डति जंभाति संग नाति संग ममे ठति सति सर सात है जंपी स्रावै पलकैं दग न नीर गल के  
 श्वीली श्वि श्वल के श्व की सी दर सात है ३१ कुटमित हावल छन॥ पीय पर न मन करत ती  
 प करै रहा <sup>करहाय निसाना ही नाही करे</sup> करनाह॥ हाव कुटमित सो सर स सभ हाव निके माह॥ ३२॥ यथा॥ केसर के रस प  
 गी संगी लघलै ह घगी देखत गुलाल रंगी छाती छे ह धारै गी॥ अतर संधीर चो वाचंदन  
 गुलाव निकी लै लै वे स वास मो पै वाली वडु डारै गी॥ नंदलाल प्यारे फागु खेल निकी ध  
 म संग मुसकनि हारै गी मल रत न हारै गी॥ ३३ डर डर पोय पर हाहा कर जावों वलि छाडा सा  
 स न नदि जि ठानी मोहि मारै गी॥ ३३॥ वोध कहावल॥ कोऊ वात ज ताई ये क दि कै कोऊ  
 भाव॥ तासों वोध कहाव कहि भासत है क वराव॥ यथा॥ केसरी या चोली चारु चोये सों  
 विचित्र कर चंपक की दाम संग इंदी वर गंद कै॥ मिलत कदं वनि सों कोयल कुसम पोहि भ  
 खन स जाये सान चतुराई <sup>राक</sup> द कै॥ मग मद ले प पीरे संगै सों मिलाय नंदलाल प्यारे भेज्यो भा  
 राग



8

4

जनसोमंदरकै नैनननचायप्रीतिपुलकरचायतीयलीनोमुसकायषेदविरहिकोसुंदरकै  
 ३५ दोहरा॥ मोगधतपनविषेयमरुहावोवरनतहाव इहविधमौराचारएकरहोकीये  
 वनाव ३६॥ मोगधल॥ मढभावक्योंडुनछुटैसरसतितीयासुभाव मोगधहावसुव  
 रनीयेकरकरचितमोचाव ३७॥ यथा॥ चलवलितिनसरताकेपुलनिम्रलिजहांकी  
 धरनहैमंवीरमौगुलालकी कैसीहैवेमहीमालीकेसरजहांकीद्वरंगल्यावेसादी  
 जोगफागुनकेम्यालकी॥ कैसीहैवसंतफलेगुललालालालीकैधोंकाहूकैसहा  
 गिलकेडकूललाललालकी कैसेपुनखेलहोंगीप्यारीनंदलालसंगरंगभरीहोरी  
 किनदेतसुखहालकी ३८॥ तपनहावल॥ पीयसमीपमावेनहीतातेतीयमकुलाय॥  
 निंदैमखनभागनिजवहेतपनदरसाय॥ ३९॥ यथा॥ मागंलीमागजरसीगुलाल  
 लालगीलोचननिमहकीमंवीरवीरपीरकरैहीयको तीरसीतरेरीधारकेसरके  
 नीरकीनधीरनहैखेलतिविलोककाहूतीयको॥ फलेहैवसंतमायेकिंसकमसो  
 कमंवजाहरमंगारेसेजरतजारैजीयको मावैमनमैसीअडियाहीमैलियानलसै

नि



केसंगजाइमिलोप्यारेनंदलालकौपीयके॥ ४० ॥ विष्टेपतावलछन॥ सकलवातचलविचलमरुतनकी  
 मरुतनहोय॥ जौवनगरिलीरहितसोकरिविष्टेपंकवलोय॥ ४१ यथा॥ आठहंजामसंवीरगु।  
 लालकीमूठऊडावतिसंवरंगति देतिनकेपिचकारीकीधारनिगारीकोगावततानतरंगति  
 आयोवचावतिधावतिहैफैटगहैसीरहैमनमैसेजमंगति गोकलचंदसोंफागुनचोचहैनिंद  
 तिवालसखीहंकीसंगति ४२ हावलत्तन॥ अपजैसंकरमदनकोकछूकतीयकेदेह पीयदेव  
 तिचौकैडरैहाववसान्योएह॥ ४३ यथा॥ सखीसंगरंगकीसीवेलीफागुखेलतिहीफूले  
 केलिकुंजमधिरससगवगीहै तैहंवीचनंदलालपीयनैदिवाईदईतवतिहिकेचखनिचका  
 चौंधीलईहै पिचकारीइसीडारिनंगकेसारिकेफैटगुलालकीगारभगीधीरताहंड  
 गीहै डारडारकौंचौंकिसखिनकेडोटदुरीचंचलानिपाछेचंचलाज्यो जगमगीहै ४४ ॥  
 इतिहाव होरीकेलिबर्नन॥ खलैमनुरागभरेफागुपीयनंदलालसाजैपटभखनखवीली  
 खविष्टलकै॥ बालनिकेजालजहाडारतिगुलालएकैसाथभुजनालमतिलोभलेतललकै  
 तिनकेकरनिनखसंगुलीकेहीरनिकीफैलतिकिरनिलसलागतनपलकै मानोसागरस

गी

कवित कादपिचकारीभरिकेसखिचकि  
 यतिकाहुनिशुलालभरिमिनिवसेसाहे  
 काहुनिशुवीरकाहुचंदनकपनकरकाहु  
 निचितोनिवानडारिजियजेसाहे होरीके  
 समैमैभरिगामनीनिनंदलालकेलि  
 केरैतरंगयोनागवगेहेसाहे दरपि  
 दरपिदेरेप्यारेपनप्यानीमानोतरपि  
 तनपितरतानियनयेसाहे ॥ ३॥



कवित्त घोनी घोनी वै सभनी मोनी ॥  
 मोनी भाग्यदेग वानी एक डमकी सी तोरी  
 वनी ज्ञानी की नाचें गोनी गानी वीजुं डी  
 री सी वि सोनी वर जानी की न चोनी चित्त च  
 चलच कोनी की भवि भवि मोनी घोनी रो  
 री गुलाल चह घोनी छिन्न कति घोनी  
 केसरिक मोनी की जय सिंह भपके ज  
 न मनस न पभनी भपन मन पभनी है  
 के लोहा नी की ॥ घुम डिगु लाल यन उ  
 म डिगु दंग घा मु के सदि के नी न गनी ला  
 गी धूम की ये ही नम के म कि च न च  
 पलाच भकि नही नाचति जु पात रिगु घा  
 ह म रिही ये ही कवि कुल के की को कि  
 लनिक लकुह काये के पान म घुवान की  
 म्रम ह म विषी ये ही यात्र भल जय सि  
 ह भप के ज न म द्यो स रंग भनी होरी को  
 समाज संगली ये ही ॥ २६ म पिच का  
 दिन ते रंग भनी के सदि के नी न की त रंग  
 अठे पनी लाग पाग सो आलुन से मा वे ला  
 ल वाद र लो गुलाल ने के गा वे पुन वा  
 लन के जाल मनु नाग सो या न दे वि  
 लास न स न ग का निवास ज न्यो राव  
 न ज न मन ति रा ज के स हाग सो या  
 ते सो हे रंग भनी पाग साल गिर हि  
 सो सो है साल गिर हि त्यों रंग भनी  
 पाग सो ॥ ३॥

केसर न घन मांग कहे धावत धंस धाकर पै तारागन गलकैं ॥ ४५ ॥ मत्त तीय गुंड निमै वेलें फागु  
 नंद लाल रहसिर रहसिर सकेलियों निहारी है केसरिके रंग भरि डारति गुलाल तापै चलति  
 खंवीरनिकी मूठ सत भारी है धावत मलिंगन को आवत पीयहि देख चली कुंज महल ते सवैन  
 वनारी है मानो लाल सुने पाये खेलनिको धिल वार पांतिन की पांति पिंजरानिते निकासी है ॥  
 ४६ होरी साल गिर ह डहं को वर्नन ॥ दूने दूने गावै दूने वाजने वजावै दूनी के लिउप जावै दूनी  
 रुचिवर सार है दूनी भीर भाई दूनी की जाति वधाई दूनी दूनी में ज पाई दूनी पीत पर सार है ॥  
 दूने ही समाज वन्यो होरी के समें को म्रम डुनी पै ज न म द्यो स सो भासर सार है ॥ दूने भाग  
 भरे जै य भप के भवन म्राज सादी साल गिर हि की दूनी दर सार है ॥ ४७ ॥ गावत धमार संग  
 गहरी वधाई त्यों त्यों डुनी के गुनी निकहि दूनी मोज दीनो है वाजति डफनिसा घसाजत स  
 दाने सख महिल निमाग गाई गन कस गीनो है सो घे भरी के सरिके नी न की गरी भै घरी घ  
 रीयों गुलाल घन घुम डनिलीनो है भाग भरे भले जय भप के भवन म्राज सादी साल गिर हि  
 डहं न रंग कीनो है ४८ ॥ सख साल गिर हि वर्नन ॥ सोने के सित न निमै जीनत जवाहर की



जाहरजगतिजगमगजोतजोहीये चांदनीफरसपरजेवमसनंदकीसुतहांकोरचंदसुनदीहडतदेहीये  
 मोतिनकीमालरैनिसायेवानतुंगतनेजरदोजीडोरनिकीसोभामनमोहीये वैठेजयसिंहभपन  
 कौनिधवरसतमैसीसालगिरहिकीसादीआजसोहीये ४४॥ जैसीजेवसादिपैसुलतमसनंदपर  
 तैसीकहासुनससिमंडलकभीनेमै केतीसौरतारागहिजोतिवारडारियतहीरामनिमोतीम  
 लनौछावरकीनेमै संपतविसालकरसादीसालगिरहिकीवैठेजयसिंहभपवानिकनवी  
 नेमै केतेकविजाचकनिभालकीगिरहिबुलै परेसालगिरहगनीमनकेसीनेमै ५०॥ अथ  
 धामवर्नन॥ इतिहोनीकीकेलिमैश्रीजयसिंहभुवाल हुकमकलानिधकोदीयोकीजैग्रंथर  
 साल ५१॥ काव्यभेदरसभेदमरुमलंकारगुनभेद॥ एकग्रंथमैआनीयेकरिकरिसुमितअभेद  
 परमसीवीदकोकवित्त॥ केसरकपरकैसीसोनजायजायजैसीकेसुकुंदकलीकैसीभांतरि  
 भजतसी पावैसुधानिधसीतारकासुधाकरसीदामिनीसुधाघनसीसोभहिसजतसी मंग  
 लीसौचंदनसीचंपकसौसेवतीसीकेतकीसौकेतकसीधवसोंश्रजतसी जयसिंहभपतिको  
 सदासुभरूपरहोमरतकिसोराकैकंचनरजतसी ५३ ॥ इतिश्रीमत्समहाराजाधिराज ।



६  
६

श्रीजयसिंहभपालवचनाग्रपतकविचूटामणिश्रीकृष्णभटकविकलानिधविनचितेसलंकारक  
लानिधोप्रथमानिदेशिकलासमापतं॥ अथभारतीवर्नन सवेया॥ धारतिहैविधकोनहिनेमजु  
एकस्रष्टंमनंदमईहै नाहिनसैनकेनैकस्रधीननवोरसकीनिधहैजनईहै नीकीलगेचितको  
वितसीहितकीकरनीनितहीजुनईहै सैसीधरैरचनाकविकेमुखभारतीजोतप्रकासमईहै ५४  
अथकाव्यकेप्रयोजनदोहरा॥ कीरतिधननपजोगगुनस्रसुभनासरसरास तीयजिमसतअ  
पदेसकोकवितादेतहुलास ५५ श्रुष्ये॥ कालिदासजिमस्रजसंधावजिमहरखनपतिसौ वितपा  
वतमनगिनतहोतविवहारस्रमतिसे। <sup>सुखी</sup> स्रहपतिगायमयूरस्रकविजिमस्रसुभनसावहिं स  
कलप्रयोजनमैलिसरसरसमानंदपावहिं <sup>जैसेसुतअपदेसकोवेदसुमनतेहै</sup> श्रुतिसुमरतस्रधिकससरसविधतियजिम  
<sup>अत्यंतसरस विधसौकवितादर सावतेहैदिखावतेहै किवाजाकेवेदसुभनतेहै जैसेसुत अपदेसकोभाव स्त्रीजोकाविता इमयाप्रकाशदरसावतेहै किरावन</sup>  
सतअपदेसइम कवितादनसावतभावजिनरावनज्योरहिरामजिम ५६॥ अथकाव्यकेकायन॥  
<sup>नज्योमतरेहो रामजिमरेहै॥</sup> डुमिलाश्रंद॥ कविताकहुवीसक्तिप्राचीनजुसंसकारमनमाहधरै <sup>ज</sup> अल्लोकखेदकाव्यादिक  
केअविलोकतिनिपुनताजुअधरै पुनकवितहिकरविचारजेजानततिनअपदेसअभासव  
रै इनकायनकनकविताहिकरैकविताहवदुनअल्लासकरै ५७॥ अथकाव्यलक्षण॥ दोहरा  
<sup>॥पदचय॥</sup>



दोषरहितगुनकेसहितसरसमलंकितजुगत सवदारथकोजुगलसोकवितालघनजुंजकत॥ ५८॥ र  
 सकीजहांप्रधानताप्रगट्मलंकृतिनाह 'सवार्थकोकछुनकवितकीहानतहायोंभावतकवनाह ५९  
 यथा॥ प्रथमकुमारपनहस्योजिहसोईवररसकसिरोमनिश्रीनंदलालपियहै तेईपौनपूरेफूल ?  
 मालतीकेसौरभसोंतेईचेतनिसादेखलीकुलतियहै होंहंपुनवहेतऊवेहीरतिहेतआवागमनवि।  
 नोदलीलाविधहंमैजियहै वैहंसरताकेकूलवैहीकुंजतरुमलचितचाहचावकेहिंडोसपस्योजि  
 यहै॥ ६० अथकाव्यभेद॥ उत्तममध्यमसुधमश्मसोपुनत्रिविधमनंत॥ धुनिउत्तमजहांवाच्यतेव्यं  
 गचमत्कृतिवंत ६१॥ गुनीभितजहांव्यंगसोमध्यमवाच्यसमान सवदसरथचित्रसंसुधममन  
 सुव्यंगसुजान<sup>६२</sup> धुनिकाव्ययथा॥ प्रथमपियाकेकरकंजमकतंदमईवदनतियाकेसुलिम।  
 मीजानीभरमै ॥ कछिनविरमीविसुखिवरुनीनपरवहुतेनेरीकरीतादनसुधरमै अरजनि  
 ऊपरपरीतेचूरचूरगईदूरदूरगईत्रिवलीनिकेनिकरमै तरनतनजातीरवारिकेविहावकी  
 चनीठनीठकंदैनियरानीनामसरमै ६३ यथावा॥ अमजलसीकरसीसोहतिसरीरपरसर  
 मिसमनमकरंदकन<sup>६४</sup>रसी किंसककलीनिकीलसतअरमालकैधोंकंटककलतकेतकीकेव



७  
7

नपरसी कुंजकीगलीनफलवीनतविहारवीचबुलीमलकनिपरदनीडुतेदरसी आजरितुडा  
जहीकोदेखनगईहीसठकानपैनगईकतआईहरवरसी ६४ गुणीभतव्यंगयेथा॥कुंसमपरा  
गरंगरंजतसरंगमंगपहिरेविसालमालसंदरसमनकी लासमभिलाषधायेप्यारेकरली  
येसायेकोआककलीवैहीगहिवरवनकी चंदमुखीचाहिचाहिचाहिनेकतताहिकहेयहवातका  
हिघातजुसतनकी॥ तायभस्योसोनोजैसेहोतसियरानिसमेंलागीपीयरानिरुचिवालकेव  
दनकी ६५ यथावा॥ पहिरवितीतमयेमैहोंकैधोंडुपहरतीसरेपहिरकिधोंजानीनपरतहै  
कौदिनवतायेहीवियोगरवतायेतनमयाकरमैहोंमतधीरनधरतहै इहिविधियोंससतदूरकै  
विदेसजातवालपीयसंगनिसवातनिकरतहै नैनजलजातजातसासनकेपांतितातेसासनके।  
घातप्रातगौनहिहरतहै ६६॥सदचित्रयथा भलेभायभासमानभासमानभानजाकेभान  
तमिषारिनकेभरभयजालहै भोगनकोभोगीभोगराजकैसीभांतभुजाभारीभमभानकेअभा  
रनकोष्यालहै भावनोसभानभमभामिनीकोभरतारभसनभरतखंडभरतभुवालहै विमो॥  
कोभंडारमैमलाईकोभवनमासैभागभरैभालजयसिंहभुवालहै ६७ अर्थचित्र यथा॥

अनुसयान



कमलकुमोदकविकोविदविलासलहें दानदतिमनजगनैकुनरहितहै विप्रवरचक्रवाकजाचकच  
कोरचितमानंदममितजाकेऊदैमैलरितहै जयसिंहभयोपतापजसमागेदोऊस्तरससवधाजव  
विधयोचरितहै पोथीकेस्रसङ्गस्रककीसीनाईछेकेतवमंडलहैवैठेतिनैयोजनकरितहै ६८  
इतिश्रीमत्तमहाराजाधिराजश्रीजयसिंहमुवालवचनासप्तिकविकुलचूटाणिश्रीकलभट्टवि  
रचितेस्रलंकारकलानिधौद्वितीउकाव्योदेसकला २॥अथसव्दार्थनिरूपनं॥ दोहरा॥  
वाचकलक्षकव्यंजकोसवदतीनविधजान वाच्यलक्ष्यस्रव्यंगयुनतिनकेस्रर्थवसान॥  
६९॥ वाच्यकीव्यंजकता यथा॥ घरबाहरसरमनरहेस्रवयागोकलगांऊ पान्योआन्योचा  
हीयेतातेजमुनाजाऊ॥ ७२॥ यथावा॥ कवित्त॥ सास्रकूढरहोरिसननदिजिठानीकरोलोकनावधो  
तराकछुनवसातहै आजतैनजाऊजमुनाजलकोलेनसखीनाजकसरीरसवमेरोस्रकुलातहै कुंजप  
यजातस्रलिपुंजचहूंऔरगतघोरकैकरतयातरादैनटरातहै नतनदलनिजानलीनेआनकोकला  
निस्रधरस्रवानिकोसम्रहमंडरातहै ७३॥ लक्ष्यकीव्यंजकता॥ यथा॥ साचभदेसतभायसरूपस्र।  
धाईकेसोधसनेहकेसागर॥ औरकहाकहीयेकछुआस्रलिहैंसवहीव्रजकेनवनागर वांवरीतें

नायकादूतीसोंकरितै



हितलागीशतेपरमेरेहीभागमहागुनसागर॥ कुंजनिडोलतहेरतहीअभिलाषभरीदिनरैनअजा  
 गर॥ १४ व्यंगकीव्यंजकतायथा॥ जाकेसासपासरितुपावसविकासीवनकरकनिकेतकेतकनिको  
 सहायोहै तामाधिसतलफूलफूलदलभारभरीललतलतानिलैकैमंडपुवनायोहै मदश्केखा  
 पजिमश्चयेष्टपदनिष्टविष्टाजतश्चवीलीमिंजुगुंजादवगायोहै॥ मैसोहमसाजाएकुंजलषपा  
 योजहांवैछोनिहिचिंतसलगकुलसुषपायोहै १५ मथवाचकलश्चन॥ साक्षातजुसंकेतकोमर्थ  
 करेअभिधान सोईवाचकसदहैजानोसकविसजान १६॥ सोपुनचारप्रकारकोजातसो  
 रुगुनहोय॥ वदुरकीयासरुद्रव्यहैयोंभावतकविलोय १७ यथा॥ प्रथम<sup>प्रथम</sup>पुहमिपयपावक  
 पवन<sup>साकाश</sup>नभयेषीयतपरनमनेकठोरुतुहीहै देखियतरातोपीतहरितसितसितभांतभांतरे  
 तेरीकांतिचुहचुहीहै करैधरैहरैमरैफूलैफरैगरैपरैतंहीकामधेनुसमकामिनकोदुहीहैं  
 तोसोब्रह्मरूपकहिगावतपुरानेजनतेरेगूढगुननकीमालाहमगुहीहै १८ मथलश्चक  
 सदनिरूपण॥ कहैलश्चनावृत्तिसोंसोलश्चककविलोग॥ मुख्याशयकेवाधमैसरुमुख्याशय  
 जोग १९॥ गूढप्रयोजनपायकेलखीयतमन्पजुमर्थ वहेलश्चनाजानीयेभावतसकवि



जहासः ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥  
 पादाः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

समर्थ ८० ॥ कनमकुसलकवितासुधरवहेनिरूढानाज ॥ लघोप्रयोजनलघुनाज्योगंगामैगां  
 ३॥ ८१ ॥ अथप्रयोजनवतीलघुनाकेभेद ॥ अपादानर्कहोयजहांनिजसिधकोपरलेय द्जलील  
 त्तनलज्जनापरकोआपुहिदेय ८२ ॥ सारोपातीजिहांविषयविषयकहंत ॥ चौथीसाधवसान  
 यहविषयहिविषयगिलंत ८३ ॥ येडभेदसादृश्यस्वरूपसंबंधहिपाय तातेषटविधलत्तनावर  
 नतहैकाविराय ८४ ॥ छहोंलघुनाकोजडाहर्नसबैया ॥ एरजनीरतिरंगसुचानकआयेहैपांयच  
 लायअंधेरे कोवहिरुंजलतानिकोमंडपुमौविरहाजिहिसाजुसवेरे कौनकेनैनचकोरपीछें  
 गेपयुधतिपरनचंदाउजेरे ॥ बगलैचित्तकीचातुनीजेलगछाढेहैंआनंदआंगनमेरे ८५ ॥ व्यंगरहि  
 तयहकूटमैसहितप्रयोजनमाह सोपुनगूढस्रगूढपौत्रिविधलघुनाआहि ८६ ॥ गूढव्यंगए  
 कलघुनाएकस्रगूढव्यंग ॥ तातेयाकेतीनभेदेहैंजातेएकस्रव्यंग ८७ ॥ गूढव्यंग यथा वद  
 नसुवासमूढहासकेविकासस्रविलोकनिविलासवसकीनीकुटलाईहै अश्लतविभ्रमवि  
 राजैगतमंदमरदवगनायेमतिहीयेसरसाईहै मुकलतमंजुलजरोजअनदेखियतअकृतजघ  
 नजोतजाहनजनाईहै नंदलालप्रीतमप्रवीनमनभाईस्रगनैनीतनमोतनमधुरतरुनाईहै ॥

धरोयतोसुद्धासाधवसान येवरभेदलत्त  
 नाकेहैं ॥

उति



८८ यथा॥ अरुनोदयमौसरकेनवनीलसरोजकीलक्षहिलटतहै अतसुंदरतारसरंगतरं  
 गतनैननिघंगतेष्टतहै अतिसौपरसीसैसीइनपैनीअनीनतैलाजतिघटतिहै तरुनीतु  
 वतीषेकराक्षअनेदितसैंतिनकेमदहूटतहै ८९॥ अगढव्यंगायथा॥ कुलकेपुलकेसंग  
 संगनिसेनिसवासरमाधुरीसारगुरै॥ अकस्पेअरअचअरोजनिसेरुचिआकरपरनताईकरै  
 अतितीक्ष्णईक्ष्णकीगतिसेंशिसताईकेसोअनिभावभरै तुवजोवनजोतिजवाहरसीपटवा  
 हरजाहरजानीपरै ९० यथावा॥ कछुवेलिनजानतवातनिकोपरछेपसुपेंछिनहूँतेपरै  
 जनतेजदुहलहिलक्षप्रसादिप्रवीनविचित्रचरित्रधरै अडहासर्विलासोंकराक्षकलागति  
 विभ्रमभावनिजेनभरैं तिनमूढनवोढनिजोवनकेमदहीतिनकोअपदेसकरै ९१ दोहरा॥  
 निजअपास्मितलक्षनाजिह्मप्रतीतकेभाय सोफलकहीयतसवदसोविंजनिपायसहाय ९२  
 याभांतलक्षनामूलव्यंजनावतायअविधामूलव्यंजनाकहितहै ॥ दोहरा॥ जहासवदबहु  
 अर्थकीअविधानियमीआय संजोगादिककरतहाअन्यजुअर्थलसाय ९३॥ सोअवाच्यही  
 जानीयेतिहप्रतीतकेहेत शक्यंजनव्यापारहीसकविनकोसुखदेत ९३॥ अविधानियाम



कसंजोगादिगनावतहै दोहरा॥ इकसंजोगवियोगमरुसाहचर्यसुविरोध मरुधरप्रकुरणलिं  
 गपुनमन्यसवदमनुरोध ४४॥ हैसामर्यरुमौचितीदेसकालदरसाय व्यक्तिम्वराकजानी  
 येसवदहिहोतसहाय ४५ संजोग यथा॥ मंगलकारीसंतकोहारीभारीमोह संघचक्रधा  
 रीसुहरिमंतरचारीहोदु ४६ वियोग यथा॥ संघचक्रम्रायुधविनाहैहरिकूपनसाल सं  
 तनिकोप्रतिपालनितम्रीनघुवीनमुवाल ४७॥ साहचर्जयथा॥ धननिभानहरधन्यतरधनुष  
 वानधरधीर॥ राजतडुहाराजीवद्वगरामलधनरघुवीर॥ ४८ विरोध यथा॥ दरसावनली  
 लारसानिसरसावनसुभधाम॥ मनरंजनमंजनवरनरावनगंजनराम॥ ४९ मरुधरकेहेप्र  
 योजनयथा॥ चरनजपासतकमलभवभक्तमवनसुषदेत भवकोमजलैमूढमनभवमैय  
 मंजनहेत १००॥ प्रकरण यथा॥ धरतमंगतुवदरसतेपुलकमंजुरीमाल ज्योमगमरितु  
 राजकेराजतसरसरसाल १०१॥ लिंगकेहेचिनुसों यथा॥ मानकमकरध्वजकुपितजारकजो  
 नुप्रकास पीयतुवविरहिप्रसंगमैम्रातयतयतरुसास १०२॥ मन्यसवदकोजोग यथा॥ दा  
 रुमलोयहिजीतकोलियावनधनसोनेह ध्याऊदेवत्रिपुरारकोम्रायुसफलकरलेह १०३



सामर्थ्य यथा ॥ कौकिलमधुसोमत्तमनकुंजतकुंजनिकुंज ॥ लघुलघुम्रवतकलतनिप्रतिडोल  
 तम्रलीसगुंज १०४ श्रौचितीयथा ॥ जोभवतीधनतापतेधारतवेदहिवित्त तोभजलैहरिचरन  
 जुगपनमसयानेमित्त १०५ देसयथा ॥ जौलौंक्षीरसमुद्रमैहैहरित्रिभुवनपाल तौलौंचिनज १  
 वीरहोश्रीरघुवीरभुवाल १०६ कालयथा ॥ चित्रभानकोतेजज्येभासतभयेप्रभात त्पोरनडुर्ज  
 नतिमरहरतुवमुषरुचिदरसात १०७ ॥ वक्तिकहेखीलिंगपुलिंग यथा ॥ पटभवनमंगनराग  
 ज़ुतमंगनिपरमरसाल रुचिरचंदसेवदनसोराजतहैयहवाल १०८ ॥ स्वरकाकुकोमादिसो यथा  
 केतोकरहारीसखीमानीनहीसुजान ॥ म्रवलालनदीनोदनसतौहुनतजहैमान १०९ आदि  
 पदिसोचेष्टादिकयथा ॥ सवैया ॥ परमौरपरारहतेइतेरूपवरावरीकामगिलोलनकी पु  
 नलटंकलासरसीरहुकोरकमंदसमीरम्रडोलनकी इतनेसेविराजतम्रैसेम्रलीमलीजोरी  
 वनीकुचगोलनकी परलौंपुनहोनेकितेककछुगतजानीपरैनअलोलनकी ११० यथावा  
 इतनेअनकेतोलसोसखप्रसादहितपाय सोनतोरिवेअचितम्रलिज्योतरुआपलगाय १११ ॥  
 म्रविधामूलव्यंजना यथाकवित्त ॥ दीरयडुनधिरोहुमंगअचअतमंगमंगलनिधानहैदरसर्द<sup>म</sup>



जियतहै जाको अति अत्रत प्रसंसित विसाल वंस गुंजत सिली मुख निजी तली जीयतहै वीरन को धुंधन  
 धीरगत धरनी मै नाम परवान प्रसिद्ध की जीयतहै भोगी भोग भावन को राम चंद्र जा को करदान  
 जल सेक सो सदाई भी जीयतहै ११२॥ अविद्या संजोगादिक न नियत करी इक ठौर॥ हेत विना नहि  
 लखना मानत कवि सिरमौर॥ ११३॥ ताते एक व्यंजना ही सो व्यंग्य पाद को लहीये होय व्यंज  
 ना जुक्ति <sup>जो</sup> व्यंज सोई व्यंजक कहिये ११४॥ आसी की दको कवित्त॥ अनन पै को हकराते मोर मानस  
 मचंद से विसदने न मंगल सभाय है जाके द्विष्टि बुध सो हरित होत उडहो सुको ऊ विपन तरु फा  
 लर हाय है गुन सम पीरी वामराजै वाम अंग अक्रज ब्रलह सनियी वमंद कै सी काय है राहु मई मा॥  
 लाध रे सो है ब्रह्म के त संभन वयहिरूपी नंद लाल को सहाय है ११५॥ ३३ ति श्री मत महाना ज्ञाधिना  
 ज श्री जय सिंह भूपाल वचना गप्लिक विकुल चढा मणि श्री कल्प मट्ट कविकलानिध विरचि  
 ते अलंकार कलानिधौ सवदत्रय निरूपण नाम त्रितीय कला ३ अथ अर्थ की व्यंजकता क  
 लावत है ॥ दोहरा ॥ वक्ता वर्न रुका क पुन वाक वाच्य पर जोग ॥ देस काल प्रसता दिदै आदि  
 कहित कविलोग ११६ श्रंद ॥ इन के वसते प्रति भावंत निम्र और अर्थ जो भासै सो व्यंजन व्यापा



रम्यकी व्यंजकता प्रकाश ११७॥ वक्ता के जोग ते व्यंग यथा कुंज निमै रितु नाज विराजति  
 ताहि विलोकनि आ जगई ही फूले पलास मसो कलता वन लाली चहूँ दिस आनंर ही ही॥ कंच  
 न के तु की कानन के रज कंज पराग निधू मई ही आन परे मधि आन भरे मज हं न मरे किती वे  
 र मई ही ११८ वरण के जोग ते व्यंग यथा॥ कवित॥ देह डवराई सरभंग संग वै न कैं नै कहं  
 न नैन नि कैं नींद स मुहात है चाह चौं प चिंता चित चौं गनी चटी ये आन वान मलिसान रस सानि  
 ये सहात है आन तै असा सही ये आन न विलास घान पान नि रुदा सकरि कै सी भई जात है दिन दिन  
 दूनी दूनी मेरे हित लागी याते मेरी वीर मेरी दसा ते रिय दिखात है ११९॥ काकु के जोग ते व्यंग य  
 था॥ वे वन वेल मनो भव के हृष फल के फल नि फल दिखै है कुंज कुटी नि हला हल की गुट का  
 अडि का हू को चैन न दै है को कल कूक कुहू कमिली मल यानि लल कनि हू क उठै है पानी मेष  
 वक की लपटै लघु प्राण पती मज हं नहि सै है १२०॥ वाक्य के जोग ते व्यंग यथा॥ काहू मय न  
 व मंगल चार सवै परदार मिल्यो एक ठां ही ई ठि वसी ठि नी ठि मंगारी सुहा गिल नार की ठे १॥  
 मुष नां ही मंजन रंजन मंजन दै कर मार सी लै मन माहि अघा ही त्यों ऊन दीन की यो मेली नई



मलीनकरीमुखचंदकीछांही १२१ यथावा॥ जवपाससखीवहिवैठीहुतीतवतामुखकोप्रतिविंवप  
 रै इनिलालकपोलनिवडरहीअखीयानहिकैसेहंयारीटरै॥ अववेहीपीयाहमवेहीकपोलल  
 सेचमकाहटकोटकै इगलालनकेनदलालखियेवहिचाहतचंचलताहिधरै १२२ वाच्यकेजो  
 गतेव्यंग यथा दोहरा॥ अतसुंदरअचोपुलनिसरसकेलिवनआंरु जहांअलिसिखवत  
 कोकलाअदनमंत्रमनमार १२३ अन्यकेजोगतेव्यंगयथा॥ सासहितीजकेफजनकोनित  
 नेमजहांलगहोयविहानो मोसोकहीतिहकारनहीवनजायकेफलफल्लदलमानो कंजकी  
 मालवनावनकोवरहीमुहिमानसरोवरजानो खेलरचोतुमआलीनयोस्तोआजसरैन  
 बुरोजितमानो १२४ देसकेजोगतेव्यंगयथा॥ ग्रीष्मकीरितुमागकठारदिवाकरकेकरदेह  
 दहेंगे॥ तातेवजावनदैमुनलीअवसूकेलतावनदंजलहेंगे गोपसवैजमुनाजलपानकै।  
 गोधनसंगहरेनिवहेंगे सीतलछांरुकदंवनकीमधुमंगलछांधरीएकरहेंगे॥ १२५ यथावा  
 औरहीकुंजसखीतुमफलनिवीनवनावहुमालविसालनि॥ ह्वाहमवीनहिगीटिंगहीअति  
 कलरहेहनमालतीजालनि दरनडोलिसकोंइहिकोननहोइनपाइगुलालसेलालनि ॥

किन



१२

१२

कीजै प्रसाद करों यहि मंजलि जाहु जते संग लै सभ बालनि ॥ १२६ ॥ काल के जोग ते व्यंग यथा गु  
 रजन के उपदेस तुम प्रीतम चलहु विदेस कहि है कौन संदेस मव देख जाहु कछु सेस ॥ १२७ ॥  
 प्रसताव के जोग ते व्यंग यथा ॥ मंजन सोवर सैन भते तम पुंजर सो घर मंगनि घेरी कै सीच  
 हूँ दिस द्यार ही मलि म्राजु की चारु घरी की मंघेरी ॥ फेर मनोभव की रति सीखित थावे  
 गीचंद की जो नूतन जेरी प्राचीं दिसा तन राची सवै सच कोरन के चित चाह्य नेरी ॥ १२८ ॥  
 आदिय दते चेष्टा लीजे सो यथा ॥ ठाढ़े मुज ऊपर की ये देख लाल को बाल ॥ माल चिकुर  
 के जाल सोटां किलीयो तिरु काल ॥ १२९ ॥ इन मै एक दोय के जोग ते व्यंग यथा ॥ सास ईहा सो वै  
 सास उसासन नीद भरी सोवत ईहां सो अधिबुधि कै विचार हो वासर प्रकास ही मै देख साव  
 कासर हो आवति नज निज गहां सी जिन डार हो पति परदेस ता सो त्रा सो मंधियान डर को लो  
 न हो ता मै धाम ठाम न विसार हो सुनतर तो तुमै ताते हो हुं क हित वात पंथी जिन पालिक प  
 राये पांय धार हो ॥ १३० ॥ यथा वा ॥ कुंज यहि मंगल न साल मंजुरी के मित्र वन के सहारा वन  
 वेलन को कंत है ॥ को कला को मोन हरि भौरन के केल करि मंद मलय मारुत को संत विल



संत है माननीनमायकमनोजको सहायकसंजोगीसखदायकवियोगीजनसंत है चांदनीके सो  
 धकविरोधकमुनीनमनरोधकविदेसफूलपोवागनवसंत है १३१ दोहरा ॥ अरधजुसवदप्रमा  
 नको सोई व्यंजकआय व्यंजकतामै अर्थकी सवदै होत सहाय ॥ १३२ कवित्त आसीरवादेको गं  
 गाजकी तरलतरंगनिसों सीचियतफनीफनपल्लवनिगालररहित है तिनहीं केसी समनिसु  
 मनकलीनफूलपोफूलचंदकलाताहिता कहवहति है आनंदके अश्रुनैनधूमदगपावकसों ॥  
 नही दीह दोहमहागुनगहित है लोवीजटासिवसरतरुकी कलपलतानंदलालभानिफूलफू  
 ल्योई चहित है इति श्रीमतमहाराजाधराजश्रीजयसिंहभुवालवचना सप्तिकाविकोविदच  
 ढामणि श्रीकृष्णभट्टकविकलानिधिविरचिते अलंकारकलानिधौ अरधव्यंजकता  
 निरूपणं नाम चतुर्थी काला ॥ ४॥ अथ ध्वनिनिरूपणं दोहरा ॥ ध्वनि अविच्छेदतवा  
 च्यजोतहांवाच्यैमानि अर्थान्तरसंक्रमितमरुनिपटतिरसकृतजानि ॥ १३४ ॥ ईहां लघु  
 नामलजोगढव्यंगदरसाय सो प्रधानमरुवाच्यकी नह प्रधानता आय ॥ १३५ ॥ अरधोत्तर  
 संक्रमितवाच्यध्वनि यथा ॥ हंतुमसंजुको हंतवात ईहां गुरलोगनिको वसवो है चिंतकी



चातुरीचापिचलैचषचालचुरायडरंहसिवोहै॥ आपनेहीमनकीमतिलैचलिहोवलि  
 तोरसकोरसिवोहै नांतरदेखीयो नंदकेनंदननेरकीधारनकोधसिवोहै॥ १३६॥ मत्पंति  
 तिरसकितवाच्यधुनियथा॥ कोलौकोहंनकेअपगारहमैंसखदेतनवांधतमूठी॥ कुंज  
 निकुंजरहेमूलपुंजयहैजसगायकरैमतिहूठी॥ सोचसंकोचसनेहकेगेहमनायलईजि  
 ननैननरूठी॥ वादिकैजीतहैजानदैवांवरीएम्रतिसांचसमैहमरूठी १३७॥ मध्यविव  
 धितवाच्यधुनिनिरूप्यते॥ जहाविवधितवाच्यपुनकरतव्यंगकीगौर॥ धनिमूलध्वज  
 मव्यंगसोलष्व्यंगकममौर॥ १३८॥ रसमरुभावतहाभासादिकमरुमव्यंगवसान्यो  
 भिन्नरसादिमूलंकारनितेमूलंकारयेहैमानो १३९॥ रसमरुभावरसाभासरुतहाभावभा  
 सहिजानो॥ भावसांतिमरुअदयसंधिमरुभावसवलतामानो॥ १४०॥ मवरसकोस्वरू  
 पकहितहै॥ श्रृंद॥ कारनकारिजमरुसहकारीरत्पादिकघाईकैआहि तेविभावमनुभा  
 वमौरसंचारीनाटपकाव्यकेमाहि॥ १४१॥ तिनविभावमनुभावमौरसंचादिनप्रगट  
 कीयोहीयमौर घाईभावहिरसपहिचानोभायतहैकविसरुदयलोक १४२॥ व्याघ्रा॥



दिविभावमयानकज्योवीराहुतमोदनिदेखे अश्रुआदिअनुभावसंगारहकरुणामियानक  
 तिमपेखे पुनिचिंतादिसिंगारविमचारीवीरकरुणअरुभयहूलेखे इमजुदेयें इकंतननहत  
 सयातेसूत्रमिलतहीअविरेखे ॥ १४३ ॥ दोहा ॥ कहुंविभावअनुभावकहुंकहुंविमचारीआहि  
 तअससाधारनजुयेवरनतहैंरसमाहि ॥ १४४ ॥ तातेमोरोदुहनकोलैआवहिनिजजोन ॥ नियम  
 भंगयातेनहीइहिलघनकीओर ॥ १४५ ॥ विभावहीयथा ॥ छप्पे ॥ नवपल्लवमौकवचिसु  
 भटवरसरसरसालनि ॥ सरभिसुमनसरचापचारुचंपकतरुजालनि मलियानलभातं  
 गमधुपहयसंगहजारनि कदलिधंमनीसानमत्तपिकगाननगाननि मधुरितसहाय  
 विरहीनपरचटिमनोजइहिविधवने भासतपलासवनतासुअतिअरुनभासतंवृतेने  
 १४६ ॥ अनुभावहीयथा ॥ मीजिगईनवमंजुमरगालीज्योहैकुमिलानीसीसंगकीछांही को  
 निसखीजनकीविनतीगिनतीसीउगेधरियैगहिमाही कामकीकित्तछयेसेभयेअकलंकस  
 सीकीहसीकहिआही नतनकुंजरकेरदसेअतिअजरेदूनोकपोलदिवाही ॥ १४७ ॥ व्याभि  
 चानीहीयथा ॥ दूरतेअमितचौपचाहचावचिंताभरेनीचेभयेआयेफूलेबोलतप्रमानहै ॥



लेतपरिभनमरुनरुचिश्चलकेगहैमैंचीमौहमनोकामकीकमानहै पायनपरतपुनिप्रेम  
 वसमांसनिकीधारनीधरतऊनेजलदसमानहै केतेपरपंचनिचतुरचषमाननीकेपियम  
 पयाधसमैदेखेमानमानहै १४८॥ अवनसनिकेमेदकाहितहैं॥ कहिअंगारहास्पमरुककणहि  
 नौद्ररुवीरभयानकजानो वीभत्सरुमदमुतामृठहूंरससुखरूपनाटमैमानो १४९ दोहरा  
 तरहैमेदअंगारकेइकसंभोगवसान॥ विप्रलंभदूजोप्रथमअनतमेदपहिचान॥ १५०॥  
 छंद॥ जरुअनुकूलविलासीदोनोभजतपरसपरदरसपरससुख॥ सुसंभोगअंगार  
 वसान्योपरमानेदनिधानहरनदुख॥ १५१॥ संभोगअंगारलखन॥ जवरतिभावगहि  
 तअधिकाईलहितआपनेइछहिनाही॥ विप्रलंभअंगारकाहितसोमहितमसेवरसनिके  
 माही १५२॥ संभोगकेमेद॥ अविलोकनआलिंगनचुवनकुसमावौचियसौजलकेली सुत  
 यासमयवहुनचंद्रोदयसटरितुआदिरीतरसमेली॥ १५३ अविलोकनयथा॥ वैठेएकप  
 लकापैअलिकाहंषवष्टकेसंदरतासागरकेसारसरसातहैं पियमुखचाहप्यारीप्यारीमु  
 खचाहपियनैननिपियवरसपूरपरसातहैं आजाचितचातकसौलोचनचकोरनकी



गेधरीचौसरिचंवेलीकेचरुचरिचिलपाईहै जौहरीकीजुवतीज्योतेजभरेतारागनहीरनिकीहानावलि  
 विवधदिवाईहै पछमकेमोरकीप्रवीनमृगनैनीमृगमोढचारुचांदनीयैचादरिस्तहईहै॥ लाललवलीजै  
 यहरावरेरिगावनिकोसरदखवासिचंदमरसीलैमरईहै॥ ११० यथावा॥ चंदनिसँवदनलविधार्किधौपानद  
 कीधानफैलिमरईमरसमानहै कैधौसरकेप्रबोधसुधितसकलसनलोकनिकैकलमंदहासभासमानहै॥ मेरेजा  
 नमदनमहीपसवजीतछितरुधचढाईकिन्नकादिकासमानहै कैधौतारागनमुकताहलकेगमकनिचांदनीनै  
 होयचारुताहीकोवितानहै॥ १११ हेमंत यथा॥ देखिमगजीकोमृतिमानंदवढाईभातिहैवहुतनीकीनहीवंद  
 नलगाईहै॥ मृतिरुखकारीगनमीकेगुनगननतियायकरिनाखीमृगमृगनिसौलारहै॥ नंगचटकीलीध्रुवि  
 धराजतध्रुवीलीजाकीतलहैमुलायमहीभरीभलेभाईहै॥ नहीयेनचिंतयाहिमंतहीमैपाइवनीसोहनीसर  
 समेरेमृगनिकवायहै॥ ११२ सिसर यथा॥ चाख्योमोरवातचलेकछुनवसातमृतिकोपतहैगातगुनलोक  
 धनगरजी॥ ध्रुवामरीसासननदीकैपासवासकोऊवैठिवेकीमरसनवरौहीकामतनजी॥ मालीमहि  
 ओसीमृतिदुषदपरोसीघरभीतरनजागैसमभांतिनसौलनजी॥ डतहीकनीनानहिकुलहीनपाईला  
 लनावनीनजायकोवहायजोनमरजी॥ ११३॥ इतिषट्ठितु॥ मौरप्रकारसोसंभोगयथा॥ प्यारीतुमैविनुकै

कलहासभासमानहै



उकीहीषविष्वाशीलजैकतसंगवधैवो योंकरिप्यारेनेनीवीगहीतवम्रायसभैचितईस्रवजैवो॥ जाहितोवाल  
 कहैजिनजाहुनजाहितोप्रीतमनैनरिसैवो॥ काहूकसोविरीवांधवोकाहूकसोमुहिसोवहिभाजनदैवो॥ १७४॥  
 मंडनयथा॥ सवैया॥ कंतइकंतमैसापुहीप्यारीकोमंजतरंजतचातुनीसैन॥ वेनीगुहीगजमोतिनहीप  
 हिसावतमांगवनावतवैना॥ संगनिसंगसिंगारसिंगारतिसंगनपारतसंगननैना॥ पोयपसीजतकंपतर  
 चकैसालीमहावरदेतवनैना॥ १७५ मथविप्रलंभसंगारनिकूपरण॥ छेद॥ करिस्रभिलाषरुविनहिईसा  
 पुनप्रवासस्रसापहेतकरि॥ विप्रलंभसंगारपंचविधवरनोस्रपनेचितचेतकरि॥ १७६॥ स्रभिलाष  
 हेतुकविप्रलंभयथा॥ कंचनमहीसीकविहैहैचितसंगनकोलोचनचकोरकवपायहैनुताईसी॥ कली  
 नी नलसीकविलैहैस्रभिलाषस्रलिलासलासमांतनिकेसौनभस्रहाईदसी॥ चहिचहेचारचाअचातकसिखी  
 निकवहैहैस्रस्रमेहवरवाकीस्रधकाईहै॥ रूपप्रभुताईसभसोभाकीसभाईकवदैहैदरसाईतिहुंलोककी  
 निकाईसी॥ १७७ यथावा॥ बीजनाकीजतिसंगनिसंगसरीस्रमकीजलधारकढीहै॥ केतोअसासभसै  
 निसवासदेखिविधामनमेरेढीहै॥ ऊचेमनोरथमंदरताकीसिढीनितकोरकवारचढीहै॥ नैकतो  
 धीनजकोधरहेस्रतिपातरेगातनिरारिवढीहै॥ १७८ विनहहेतकयथा॥ काहंस्रटकेहैकिधोंकाहूस्रट



लायि मिलाया फरी तो हंत रसात है ॥ एक मोर गोरी घटा एक मोर स्पाम घन एकै संग अन अन  
 रंग वर सात है १५४ यथावा ॥ छाजति श्वली धविष्ट रही श्रलिक निना सावे हवी चमति  
 मन की मुदें मुदें ॥ सादे ही वसन पर कोरि कस धाकर की राजै रुचिके सर के रंग निरुने रुने ॥ मं  
 जन विना हनै न मं जन सों मोह लेत कोरनि की लाल धविकान न छुदें छुदें ॥ न्हाति मृग नैनी  
 सख दै नीज मुना के नीर इतै प्रान प्या रे डति देवति डरे डरे ॥ १५५ मालिंगन यथा ॥ आवति  
 कंद वकु समनिको पराग फर सीरी पौं नल हिल ही चलतिल तानि की ॥ घोर घन घेर घन पा  
 वस मं घेरी पिक के कानि की टै रंगति मोरै होति प्रान की ॥ सै से स मै कुंज भौन म्रानंद अशाह  
 षाढे षाढे टिंगल ललित मने नयनि धान की ॥ सौं हनि सचाय वातै करति रचाय दो अक्ष विसो वचा  
 य धी टै मोट छति नानि की ॥ १५६ यथावा ॥ पहिरै किनारी दार सारी लाल चुह चुही दावै कुच जा  
 ली दार के चुकी की जाली मै ॥ अत वेध वली चट की ली रंग पगिया के पेच नि सवारै सांग म्रौ  
 सर की लाली मै ॥ वर सै गुनाई सौं रई की रस मेह घटा सर सै सकल वर सावनि साली मै को  
 रिको नि दामनी की दीपति लै मंग संग ठाढे न वस्पाम घन माली हरियाली मै १५७ यथावा ॥



दोऊसमभरेवरपरेभरेगुरजनवरेधालवेलतम्रनौषीरीतिरंगमै प्यारीतनरूपरसअपररु  
 केईपरैप्रीतमकेनैनलजैलालचिकेसंगमै धूँयटसंकोरतीयतिरथेकटात्तनिसोंवारवारवनजतमैं  
 हनिकेमंगमै॥ विनतीसीहोतइतअतवेसमुगजातिफेरिपरजातनवनेहकेतरंगमै १५८ यथा  
 एकसमेंहरिपौढिनहेतनिरूपरतानिकेपीतपिछोरी प्यारीहरेंहरिसाईतहांमधुरामुषचुं  
 वतिचोरीहीचोरी॥ देवकपोलनिपैपुलकावलिलाजसोंभीजगईगुनगोरी आननचंदनिवा  
 यरहीसुगहीमुजभेटिकेभामनिमोरी १५९ चुंवनयथा॥ तुवमुखवालगेकुसममधुरिम  
 लावनिरूप॥ तिनमैइकमुदिदेहस्रलिचुंवनकपटस्ररूप॥ १६० कुसमावचयथा॥ फलर  
 हेनवमालतीकुंजमैवीनतफलवनीडुहुंजोरी ऊचीलतानिवितानैंभुजाछविपुंजस्रपा  
 रवढेडुहुंजोरी॥ प्रीतमकेसुसकाबतहीनिजनीलनिचालपसारतगोरी॥ प्यारीजवैसु  
 सकाततवैपियडालिकेसोढितपीतपिछोरी॥ १६१॥ जलकेलियथा॥ पारपानिनैनमु  
 सलूटिलछकंजनकीस्रलकँतौनिरूपस्रलिनकोगंण्योहै॥ मुजनिमृगालगतिजीती  
 राजहंसरोमराजीरुचिसोहिवौसिंगारनिकोटांण्योहै त्रिवलीसोंतरलतरंगनिकीसोभ



हरीरुचकुचकुंभनसोंकोककुलचाप्योहै जलकेविहारव्रजिसंदरतियानसमसोभाहरिलीनी  
 यातेकेलिसरकाप्योहै॥ १६२॥ यथावा॥ करकैकरजंत्रनिमेलतिहैंजलचंचलचारुद्रगंचल  
 मै ललनाकछुदेवतिनाहितवैमुजकोभरिमेरतिहैपलमैं रिसदेवितियानिकीडूवकलै  
 पदपंकजआयछुवेंजंश्लमैं नंदलालतवैव्रजवालनिमैजलकेलिकरेंजमुनाजलमैं  
 १६३ सूर्यास्तसमययथा॥ फलीसोनजुहीवनवीचनिविधरहीसरुनमसोकलताफ  
 लीचंद्रशरतै दसोदिसमांगतैसीफलरहीसांगरसकेसरिकीवीचीभूमसीचीठौरठौ  
 रतै मैसेसमेंप्यारेकेसरसमनुरागफलीखुलीजेवसुहीसारीसंगशरशरतै आगेकाम  
 केलीवीचमंगाकीसीवेलीचलीपाखेतैसहेलीटलधिपांयलकीघोरतै॥ १६४ यथावा  
 कैधौंइतिमैसरसुधनरंगनेजरंगनजनिविलासिनीकेवसनसुकायेहै कैधौंललनाजनिमै<sup>नार</sup>यथा  
 कलपलताताहीकेसरुनरंगफलफलिसायेहै॥ कैधौंतुंगमस्ताचलश्रंगनितैगैरुकादिधातुर  
 जरविनयचक्रनिऊठायैहैं विप्रनिकीधुनिसुनफलीसांगसानुरागकैधौंकामभपकेविताननभ  
 धायैहै॥ १६५ चंद्रोदययथा॥ मानिनकेअरसैकुचभधरदुर्गमहागढकोटसमाजी मानम्रजों



रहितैष्टितहंमकामनरिंदचमस्रतताजी योंकहिफलतिकैरवकोरककोसनितैकढतीमलिराजी॥  
 सोईवटीकिरवानहिकाढतवाढतकोहकलानिधगाजी॥ १६६ षट्ठरितुमै वसंतवरनन॥ कुंजगलीना  
 यकानिनायकमलयपौनलागतहीजाग्योनवसंकु<sup>ग</sup>रस्रनेहै पल्लवमधरचूमिक्किंसकनस्रतदैहोतपिक  
 हंकारनिकंठधुनिरंगहै गुंजैमलिपुंजतेईतेईकिंकनीनपुनधुनिपंकजपरागपटडास्योदरसंगहै स्र  
 मजलमकरंदफैलेफलस्रामुषनहोयनवसंतयहरतिकोप्रसंगहै १६७ यी<sup>य</sup>समध्या॥ भारीतपीमासमा  
 नमासजिनजानोयहफैलीचारुचंद्रमाकीचांदनीहैगहिरी॥ सीतलस्रगंधमंदताईवारडारियतज्यो  
 ज्योमृतिचलतप्रचंडपौनलहिरी॥ नींदभरसोयेसमभीतरकेभौननिमैकौनकारिफस्रतस्ररोहीका  
 मकाहिरी॥ आगेकतजातघनस्यामस्रनोवातयहदेसम्रधिरातहोतजेठकीडुपहिरी॥ १६८ वरसा  
 यथा॥ नायकासोसखीकहितहै कवित्त॥ गौनैस्राईकामनीज्योदामनीमिलीहैनवघनमनमा  
 वनिसोसरतिस्रहायोहै॥ स्रवरपलंगपरघहरघहरपदैतोरीमोतीमालवगजालदनसायोहै  
 कंदैसेदकंदमोरसोरचहंस्रोरजोरस्रामुषनज्जनकगकोनगरलायोहै आठोदिसम्रालीजवअगक  
 निलागीतवसकुचदिनेसदौरदीपकडुसायोहै १६९ सरदयथा॥ मालिनज्योकरमैकमललीयेआ



हरिअजहंनआयेघरीघरीयोटरतहै फछनसकतसखीजनकोसंकोचभरीसोचभरीअखीयांतोधीन  
 नधरतहै॥ दीनघअसासनीरीहोयनअधरवीरीपीरीजांईऊजरेकोपोलनिभरतहै मंदरतेपौरितक  
 पौरितेलैमंदरलौंहेरतहीजातनैकुनीदनपरतहै १७६ यथावा॥ मोरहीआजुमलेदरसेभरैजा  
 वकमालगुकोषतीयांसों तालैहराधरकैछतियांविधुरीमतियातुतरीवतियासों॥ ताछिनतेवहि  
 लालनफलसेजारतहैहियनोसदियासों पाससखीजनआवनदेतनलोचननीदनकीनदीयांसों॥  
 १८० ईसाहेतुकयथा॥ सोपियकैअपराधविनाअलिकेअपदेसअमोलनि सीखीनविभ्रमसोअंगमोरनि  
 जानतवंकसेबोलकेबोलनि॥ कूलेसेफलेगुलालसेलालरंगेरिससोंऊननैनअलोलनि बालबहा  
 वतआंसूकीधारलुलैअलिकावलिअछकपोलनि॥ १८१ यथावा॥ कालीविषज्वालहैकेषाईजमु  
 नाकैनीरछिनछिनअरआकीलहिसचलाइयै फलेफलेफलहैपलासनिमैलागरहीजोहूहैकै  
 जीवनजराइयै पंकजपरागहैकेआईमंदपौनहैकैसंगएकोनअपावजलजासोंसितलाइयै साई  
 आगिगोपकालतानिलपटाएलेतलीजोराखप्पारेलालविलमनलाइयै॥ १८२ यथावा कीनी  
 और=ठौरकामकेलिनकीदौरयहवातहंनैनशहिसैसेप्रेमपोखेमै नाहीपुनऊनकैअनैसोअै



सोमित्रको ईमोहिन चरुतजोरुतदीहदोखेमै मेरेमो नम्रायेनहि नंदलालप्यारेतहा होय कौनकारन  
 धोंयाविधमनौखेमै॥ हियकेमंगारयहैविनहकीगारधरैवारवारकुकिमुकिगोंकातगरोखेमै॥ १८  
 ३॥ प्रवासहेतकयथा॥ जलधरदूरदेसतातेमुनगानीश्रुतिद्वरीलसातइकलतासुवननकी सोने  
 केसरोजपयसोवतसरदचंद्रआसपासधरैभासतिमरकेगनकी॥ पनसिपरसितिलकुसमसमीनध  
 रचंचलताहोतवेधुजीवकेसमनकी॥ खंजनजुगलसरसरिजलविंदुजिमजुगलतिश्रवलिनवल  
 मुकातनकी॥ १८४॥ यथावा॥ रैनदिननैनसरिताकेनीनन्यायन्यायकौनब्रजनारीअहीध्यानमै  
 नपागैगी॥ कानश्रुतिमानीकुवजासोंरतिमानीयहजगतकहानीपंचपावकसीलागैगी॥ रसन  
 रसालाहरिगुननकीमालावालाजपतिजपतिचितश्रुतिमनुरागैगी॥ सिखावतकहाऊधोसूधो  
 यहपंचश्रवमापहीतेजोगकीजुगतिजियजागैगी॥ १८५ सापहेतुकविप्रलंभयथा॥ एकसमें  
 नम्राखिनरीविधनाहिसराधमहावरपायो तादिनतेमलिनंदकुमारविलोकातहीइनकोमन  
 मायो मानमरीश्रुतिकलपरीअनसापदयोतनतावनतायो लाजदईमनदेवनकोश्रुदेखनि  
 संगनिमेखलगायो १८६॥ हास्यादिनसनिकेक्तमहीसोंअदाहर्न॥ हास्यरस यथा॥ संगल



लामजेसालगराममेंचौरनसेनदकीध्वविपाये॥ हाथलयेकरहापकरीइकसायहीचायमरेअब्ध  
 ये॥ वेदपढेविधिघोलगढेरसवातनिकेसरूपसहाये॥ स्रुजचारआशिषदेनकोदेसियोयजु  
 वासनम्राये॥ १८७ यथावा॥ कंचनकीडुहुगैदैमनोहरकंचुकीमागधपायधरीहैं॥ तेमवदीजी  
 येकीजीयेकेलियोंबोलेहरैंढिंगम्रायहरीहैं बालविनोदबढायहसीतबउठनिदंतअलासभरीहैं  
 मानोनयेडुमपल्लवरूपनकुंदकलीखिलकैविधरहीहैं॥ १८८ करुणारसयथा॥ हायदर्इयहिकौन  
 भईविधियोंकहिकोरुदसोदिससै हायचलीकितसोरमलीकहिकोरुकसैसेअहीविधवौरै कोइगि  
 रेधरमरघनागहिकोईहीयोमसुवानिसांघौरै भारतवीचकटेतिनकीतियरोवतम्रापरुवावत  
 सौरै॥ १८९ यथावा॥ विधैरसचाहकेग्राहग्रसेगजकीगतिदेखकहाटरिहोगे फैलतकालकरा  
 लम्रधासरकैमुखदेखदयाधरिहोगे चेतनताविनुजानपमानकहामतिस्रुनअरुहोगे मेरे  
 हीतारनकारनयोंसरिवारनवारकहाकरिहोगे १९० यथावा॥ कालकनालमहाविषव्यालविहा  
 नकीयेहंजुपालनलैहैं पापपहारसंहारनहारविहारनहीजुअधारनकैहैं तोकविलालकेहा  
 नगुपालकपालुनहीयहकितकहैहैं वारकवारनहेरनितैवढिगेविरदैहिरदैनिरदैहैं॥ १९१॥



नौदरस यथा॥ जानै मरजाद को अलंघ्यै सो काम की नो दी नो सुख वासर मैं एते दुख जाल को ता को प  
 खर खत जे रस कुल कै अलख मध कति नहि चमका अकरवाल को लंकानगरी मैं एक कं काल ही वा  
 कीर है सै सो मत्तु जं काई चला अकहिकाल को एकै बार काटि कै कठोर दस कंठ को रौं नील कंठ जू कै  
 कंठ चंड मुंड माल को॥ १८२ वीर रस यथा॥ छोटे छोटे मंग निध के से छुड़ श्री नवल धूल मने  
 कपि छांडां त्रास तु मै का दहौ जं भुरिप कुंजर के कुंभ जु गघाय क एसा य क तु महि तान मान त विषाद  
 हैं रहि रे सौ मित्र तुहि मेरे क्लो ध की न ठौर दौर की दरेर नि सों आर्य दै त मा दहौ नै क भौं ह भंग हं मैं  
 बांधो जि न सिंध ति हि रा म सों चरित जु द्रु मानी मे घना दहौ॥ १८३ दान वीर यथा मांगत जु कोई  
 जि ति एक से पदारथ को ता को सो ई दै त ह म ए त हि गु मान सौ मा गै वि न मा गै हूं अ मित य ह दै त को  
 कौ न मां ति जी तै ह दानि प नि धान सौ नंद लाल दानि के अदार गु न पा नि ज ग षी ने ले त जान जे  
 ह मा रे ज स दान सौ डार डार डा वा डोल पांच हूँ कल प तरु वार वार पार त पु कार म य वा न सौ॥ १८४  
 ॥ यथा वा॥ पारथ करन सरु भरथ मगीरथ से कान न सनत गुन ते ही छि न छटि गौ दारे पां य  
 रे म म मो कल म तंग म द वी चि न के की च न के वी च हूँ र प टि गौ॥ राम चंद्र भूप कर दे ख ति ति हा रे ज



तीमनिमानककीलागतिहीलटगै॥ दिनदिनदानदरियावकेलहिरवहिदारिदकोवंसधिततलसों  
 उधटिगै॥ १८५ दयावीरयथा॥ अरतैअतारीइंदरासीप्रानप्यारीअठिआगैआनिधारीपांयपाडु  
 काहंजरीहै॥ पीतपटवारीकरिफेंटहंविसारीदेखिमहलकीनारीकानाकानीकरहारीहै॥ विन  
 हीपलानेखगराजससवारीकरिधायेवनवारीकरचारचक्रधारीहै गजकीगुहारीकिहुआर  
 कानपारीतुडग्राहकीविदारीदीनआरतिनिवारीहै १८६ धरमवीर यथा॥ राजपयोनिधमेखला  
 भूमिकोभांतिअनेकविभक्तविराजै जोवनरूपविभवतिअंगवधूसतसमहजुआजै औरजुलोक  
 मैमेरेअधीनहीयेमुहमानंदसोअसमाजै सोसवहीअवहोकिनजाहुरहोतुनहोइकधर्मकेकाजै॥  
 १८७ भियानकरसयथा॥ बांकीर्यावकीयेअतिनीकोलगैबारवारआगैआगैपनततुनीसोडीठेजोने  
 ही पीछलेसरीरसोंप्रचंडसरपातमयपैद्योअंगआगिलेमैप्रानत्रानमोरेही वेदसोंअचायरह्यो  
 मुखहिवखेरेमगआधकवचायेघासग्रासआसतोरेही रामचंद्रअपकैसिकारअगजचेकूदयो  
 पैघनेरोजातभूमिपरचोरेही॥ १८८॥ वीभतसनसयथा॥ पारथकेसायकनिभारथके  
 १चहनीकौरवपतीकीचतुरंगनीप्रवलहै मातेगजकुंभकटैपललकरारेपटैवाललर







कारजकेआनंभलराश्रितिसोअघाहकरमान्यो प्रतिकूलनमैतीधनताकोहैवोक्तोद्यविठान्यो २०५  
 वसतमयानकसकितसोंजुचितव्याकुलसोमयहोई दोषदरसनादिकसोंनिंदाआयजुगुपसासोई २०६  
 देखिपदारघविवधियलोकि कचितविसतानजुभावे सोईविसमयभावकरावैअदभुतसहिस्तरावै २०७  
 सोकादिकजहांप्रकृतिस्वकैसेकरनादिकरसहोई ॥ तिरप्रधानकवितासामाजिकजनप्रव्रतसमकोई २०८  
 तातेसोरसनाहियहोपुनवचननहीकहिसकियै कहोंगपानस्वरूपसोकहंसोअग्रयकहंतकियै २०९  
 दुषकारजजुअश्रुपातादिकसोकैसेकरहोई ॥ कहीयततहांकरुणरसजदपस्वदुषसंजुतसोई ॥ २१०  
 जदपिसोकअवधिंनचैतनिआनंदअंसप्रकासै भगनाकरणकरुणरससोईअदभुतअंसजुभासै ॥ २११ ॥  
 ताहिचहितसमसोकअंसमैंवलीद्वैषनहिआई ॥ तातेसामाजिकजनकीहोतिप्रव्रतिलखाई ॥ २१२ ॥  
 वरणीयसोंतनमयताकरसोकप्रगटपुनिहोई ॥ तातेहोतअश्रुपातादिकसमरसमैगतिसोई ॥ २१३ ॥  
 अवधारभावनिकेउदाहर्नकहितहैं ॥ प्रथमरतियथाकवित ॥ लालचकैलागेलोललोचनकिसानकल  
 रचनरचनधुरिरुधाघनवरसै भौहनिकीसैनरखवानीतहांधामीजहाविपुलपुलकप्रेमअंकुससेस  
 सै मंदहासदोहदप्रयोगपुनलायेहोयसफलजवहिपानप्यारोआयपरसै २१४ हासयथा ॥ आवत



२१

२।

ही पुन के ऊप के ठ मिले बहुवाल निघेर निहारें ॥ अपति में न के भीतर दासी निआये के रक्ते रक्ते कांत गभारे ॥  
 भीषद ईवलिराज वध पट भोजन वात निजोग विचारे राज बुलाये हरे ई हरे हसि वासन जव डडी गडग धारे  
 २१५ सोक यथा ॥ विनहा जु न दाह सो मर घना गरि भूतल मै मुन जाय थिरी ॥ पुन चेति अछै बहुलेति  
 असा सहता सनहेत सो जो न जरी ॥ विललात थरी बहुवार विहाल दिसा निलखेत मभार मरी रत की  
 गति देखति ईस ही ये करुणारस की कलिकानिकरी ॥ २१६ ॥ क्रोध यथा ॥ कंस महातम पुंज विनस्वर  
 कंज विकस्वर साधु समाजै वीतत मोह मई रजनीर विरूप विवेक महां अविष्टा जै दुष्ट कमेद मुदेति ह  
 काल मिले सरलैं कोक निकोग न गाजै रंग मही मधि पै ठति ही हरि नैन न मै अरनोद यराजै २१७ ॥  
 अक्षय यथा ॥ या जु असेष चराचर मालि मंचानर को भुज विक्त मभानो कंस हुं को जो पराक्रम वै भव सो छि  
 न एक मै अंतहि आनो पंचित रंच अथा हथरे व्रज ते अति आदर सो दरानो संग कीये पुलिकावल मंड  
 तिकी नो है कानू पुरी हि पयानो ॥ २१८ ॥ भय यथा ॥ गोपस वै कर कील कुटी नि सो टेव की देत महा कल  
 वाटे ॥ जानत आ पुनि साय सहाय गहाय लीयो हम गोधन गाटे टीलौ कनै कर रंच क कानू गिरये  
 सो परै गिर गौरव काटे हैति हजस सो व्याकुल गो कुल कंपत है टिंग ईस के ठाटे ॥ २१९ ॥ यथा वाग ॥



वानिअचगरीसोंसमीपमधुनगरीकेसगरीगुवारिनीकीलूटीदधिगगरी॥ रानीजसमतनंदरायपैय  
 कारमईतादनसोंभीतकान्दानीसंकसगरी जुहजितायअंगपुलकिन्धावतदिधावतहैवैपधससे  
 धवपुवगरी॥ नैननिगंवावतिकरतमुखसीसीधुनिसांगतममांगधरमायदुस्योछगरी॥ २२०॥ जु  
 गुपसा यथा॥ मंकरतिभरसैंनैभियानकवासाननदरीसोफैनधारनिकढतहै नासानैनअवनकु  
 हरकूपऊपरनिफैलतकरपरअंगनिमढतहै॥ दूटैपरैकोटिवनमछिकापटलकांकसांकुलितका  
 रकदूनादनिंढतहै विकटवकीकेऊरकीढतकपटशिस्तरंचनधिनातचायचौगनोचढतहै २२१  
 विसमै यथा॥ इकपांयसोंपाटिलईपुहमीवियपांयसोंअंवरपरलीयो पुनतीजेकोठैरहीन  
 कहीवलितसोंपतारपठायदीयो॥ लखिकैतववामनरूपचरित्रस्योचकिकैतिहंलोकहीयो व्र  
 ह्मंडकरोरनकेप्रभुनेविधजान्योकछुनअचंभोकीयो २२२अवतेतीससंचारीभावकहितहै निरवे  
 दंग्लानकहिसंकास्यैसक्त्यामदअमंकहिसालसरुदीनतावद्यानिये॥ चिंतामोहसिम्हीधतिलजा  
 स्यैचपलताईहरस्यैवेगसरुजटताऊसानिये गरवविधादसरुऊतकंठानिंझापुनअपसमारसप  
 तरुवोधऊरआनिये अमर्षअवहिस्याऊग्रतारुमतिव्याधिऊन्मादमरणयेसंचारीकैजानिये २२३

भरित



दोहना॥ जासवितर्कसमेतएसंचारीतेतीस॥ सवैरसनिमैसंचरैजानोविसवैवीस २२४ अथ इन्केजुदेजु  
 देलत्तनकरितहो॥ असुभरूपनिरवेदजुपहिलेकसोसुचाईभावजनायो तातेघाईजहांनिरवेदसुइन्  
 तेनवमसांतरसगयो॥ २२५॥ तत्वग्यो<sup>न</sup>आपंतिईरवाइनहिआदिहेतनिसोहोई॥ अस्सपातिचिंताषेदा  
 दिककारजजुतनिरवेदकसोई॥ २२६ सांतरसकोऊदाहर्नयथा॥ जैसोअहितैसोहारमोतीमनि  
 मानककोजैसीफलसेजतैसोसिलातलमायोहै॥ जैसोअधनतैसीधरिजैसोरिपुतैसीमीतजैसोअन  
 तैसीतियमेदनहिमायोहै॥ इतिविधसमतासदाईद्विज्जाएमेरेवासरवितीतहोहुयौअनसहायोहै॥  
 काहुपुन्यतीरघपुलिनवनमांजशिवशिवयहनामधुनहीयकोहितायोहै॥ २२७ ३सांतरसंचा  
 रीनिर्वेदयथा॥ ज्योअहित्योहीयहारविराजतपंकजसेजसिलातलमावै ज्योअवत्योअजनीकरके  
 करज्योअरत्योवनमाहसहावै॥ ज्योदिनत्योनिअज्योसुखत्योअज्योअरत्योहितएकसुमावै वाकेवि  
 योगमैजोगलीयोपियसंजमसाधिसमाधसीलावै २२८ यथावा॥ वेनीनहोयविसालजराकस  
 करीनकंठधस्योविसमारी॥ सोहतसीसनकेतककोदलहैयहचंदकलाऊजिआरी॥ होंहिनरंग  
 वियोगसोऊजरेअंगनिअंगविअतनिहारी मारविडारनकारनआजुसभैशिवमेवधस्योव्र



जनादी २२४ गलान येलधन॥ रतिआयास छुधातिससंभवचित्तादिकभावनिकीकारन॥ निरमलतानिःसह  
 ताकैयौहोयग्लिनकरहुनिरधानन॥ २३० यथा॥ विविधकलानिकेलिकीनीरसमीनीश्रुतिरंगरुचि  
 सनीसवरजनीवितैरही श्रुतसौहैगातहरिप्रातजठिजातलयतिपकीवदनडुतिजानेकोकितैरही पि  
 रिमिलवेकोक्खोचाहतकस्योनजातवांहरनंभनिकीचावकोरितैरही तरनतपनतापितापितकुरंग  
 रुचिलोचननिलालमुखचंदरिचितैरही॥ २३१ यथावा॥ मनोरथमहलकीसीढिनिचढीसीश्रुति  
 श्रुतिसकलतनखेदजलधारोहै मदनकेवानतनकदनकौडारीवहुमंडैपवनारहंकोहोतअनिहा  
 रोहै॥ श्रुतश्रुतसौहैगातउगहंभरीनजातकरितनवातसखीजनप्रधहारोहै दूरभईभवनवसन  
 संगरागरुचिरतिकोसोकंतसंतविरहतिहारोहै २३२ संकालधन॥ डरनयपनकूरतादिसंभवकंप  
 क्तीयागोपनादिकारन शंकाश्रधिकश्रुनिष्ठजानवोकिथोइष्टकीहानविचारन॥ २३३ यथा॥ वोलेंल  
 यमनहीकेलोचननिगुरजनदोषहीकीपाटीपटीसौंतिअरसालकौ सासमौननदिसगरीयेश्रुनवी  
 लीपुरवासीलोकहासीकैवजावैकरतालकौ मदनमहीपनिजसदनकैराधीतनवनतनमिलेवि  
 नप्यारेनंदलालकौ योंवहुविचारवालअन्नतअनेजपरराशतविसाललालकिंसककीमालकौ॥



२३४ यथावा॥ रातेकरिलोचनअचारतवचनपिकमातेअलिपुंजकुंजमहलनघेरेई॥ घायरहो  
 गगनकनककेतुकीकोरजमदनमहीपदलयातेअतिनेरेई॥ सिंधुतेअदितवटवानलहलाहल  
 कीज्वालनिसमेतविधिकिरनिकरेरेई॥ मानोकामिनीकेमनधीरजकेमेटवेकोमहीतलमांज  
 विसविसिखवधेरेई॥ २३५ यथावा॥ कमलनम्रमलवदनद्रगकरपदकनअचअरजलगिष्टि  
 य॥ नरिशिवारकचभारनसवरतलफतितलपविहंतनततिया॥ पत्तननीलनिचालपरागनगौरि  
 यरुचिवेदनअजरतिमा॥ चंदविरचिघनियकिमहौवलपुष्पनिहौअनहौउजुवतिय २३६ अस्तपात  
 क्लोधदुष्टादिकतेअपजीहासदोषप्रगटनादिकारन॥ परअतकरसासहनअस्तयाकैधौपरअनि  
 षसंचारन॥ २३६ यथा॥ सेजयैआवतिलालनिकोलषप्रातरहीललनामुखमोरे पाश्र्विपाश्र  
 रहीपटमंतरपौनकहंदगसांदगजोरे नीवीकेअपरलालकिधौंकरवालछुरायदीयोजकमे  
 रे वाजअठीकरकीवलयामनुवोलतवेलकीघेरिसरोरे॥ २३७ मदलछन॥ इंदियसंमोहरुचध  
 धूमनिनिंझाहासरुदनप्रतिकारन॥ पानादिकसंभवजुचित्तकीअधिकईसोमदनिरधारन॥ २३८  
 यथा॥ कृमिकृमिकुकिमुकिजपिजपिजातअतिरातेमदमातेलवियतगतआनहै हसतलसावि



गसतसेरहितनितविवसहैजातविनुलाजविनुग्यानहै चकितहैऊठतचलतऊठजिततितवरजेनमानेमद  
 गजकेसमानहै॥ प्यारेपियेप्रममतवारेदुगतारेइनरावरोदरसकैधौंमदनसपानहै २३६ अमलधन॥  
 स्मरतिपंथगमनादिकसंभवअरुस्वेदादिभावकोकारन अतिआयासप्रभवनुपनाभवसोईअमकीजे  
 निरधारन॥ २३७॥ यथा॥ [कदोयपैंडपरकेलिकेसरेजतजतीनचारपैंडपरडारीफालमालको  
 पांचअकपैंडपरडारीमनिमोतीमालमंगनिविहालधरेवादलविसालको प्रेममदमातीअरसाती  
 अतिवेगचलदेखोईचहतप्राणप्यारेनंदलालको अरजअतंगताईनितंवनिगुरताईकाटिलघु  
 ताईदुषदाईभईवालको २४१ आलसपलधन॥ गरभसमादिप्रभतकरममैकातरतादिभाव  
 कीकारन॥ अत्यानादिअसक्तिजोहोईसोआलसकरोनिरधारनि॥ २४२ यथा॥ रातरचीरतिरं  
 गपीयासंगमंगलसैअतिहीअरसानो सोहतिमाननयोअमविंदुज्योइंदुअमीकनसोसरा  
 नो लालकष्ककुलीअधियानमैतारेनकीअविकैसेवसानो सांगसमेंकेसमीपसरोजकेमा  
 नरहेधिरहैअलिमानो॥ २४२ यथावा॥ कचनिकेभारडुहंकुचनिकेभारतहांललतनितंवनि  
 केभारनिविचारहै सौरभकेभारबहुतारनिकेभारकलकिंकनिकेभारतहांअतिविसतारहै सो



भासीलसखमाश्रीलाजकुलकानदईश्रैहीतनएतोभारकीदीयोकरतारहै तापरतिहारेइहिंविन  
 हिमहीधरकेभारखलसानीवारवारवेसंभारहै॥ २४३ ॥ यथावा॥ भोनपियसंगप्यारीमन्गजी  
 सेजपरराजैखंगखंगरतिरंगनिसौरंगियां॥ देतखवमदनमहीपतिकेनेजासीअलटिरहीसीस  
 परमातिनकीमंगिया॥ आलसकेभारलसेम्रतिवेसंभारत्पोत्पोखैठनिममेठनिकरततनतं  
 गिया॥ भायेंभरलालननुभायेतिनखीचितौनिपायेसखलेतऊठीवांयेंकरखंगिया॥ २४४॥  
 दैन्यलघन॥ दारिदविरहिआदिसोंसंभवकायकलेसष्ठुधादिककारन डवकीदसाकिधोंदु  
 खआधिकसोईदैन्यकरोनिरधारनि॥ २४५ ॥ यथा॥ विधुरीचिकुरावलिखंसूनयैद्रगनीरनदी  
 कुचऊपरआई मत्तमनोजमतंगजकेरदखोरिरह्योमनलालेगिमहाई॥ पियनंदकिसोरतिदू  
 रेवियोगरसीलीतीयातनतेजतचाई॥ छाडतहैनितफेंननकोदरसीसकपोलनिमैऊजराई  
 २४६ ॥ यथावा॥ म्रतिऊचोमनोरथमंदरताकीसिढीनिकीयैकररीषतियों॥ कितीवारचढैऊत  
 रैतनमंडतखेदजकंदनिकीततियों॥ दिनद्वैकतेदेखिमनौसीदसारतिनायकसायकहीघतियों॥ म्रलि  
 फखतमायतिनैमुखमौनहीकोलतिमौहनिकीवतियों॥ २४७॥ यथावा अन्नतऊरोजनिकेसोजज



नकेसरि मै कंठ कल कंकानि के संकट रसात है ठौर ठौर चीन नख दंत नि के देखियत जाव कसरंग संग  
 संग सरसात है सो है कहुं पीक कहुं संग जन कीली क कहुं सैं धुर की सी क सो भावर नी न जात है जागेर  
 तिरंग म्याये मति मर सात प्रात देखिरंग गातरंग चंदरी ल जात है २४८ यथावा॥ म्याजु तो वने हो लाल  
 लाल लाल माल श्रविका रूप पर वसता की धु जालै चटाई है सौ रै डुतिलोचन कमल की विलो कियत  
 प्रेम के समल की अधिक मर नाई है रतिर सरंग की तरंग नि सो संग संग मति मलि सात गति सौ रै लखि  
 पाई है खेद सग वगी मर गजी मीजी मुर गाँनी मालती की माल लखि वाल सुकु लाई है २४९॥  
 चिंता लघन॥ इष्ट मला मयादि संभव बहुता पस्वा सवै वरण मश्र कर॥ चित एक अयता हि क हि धिया  
 न स चिंता भाव वधान विवर्धनर॥ २५० यथा॥ नेदरा यला डले लल न तु मै ध्यावति ही ति हारे स  
 रूप मई संदर्स सुहानी है लोचन मचेत मोर चंद से चितौ त म न मिष स्या मरंग मोह मूर धानि मानी है  
 मंवर से पी यरे दिखात संग संग मंद हास जि म अज रे कपोल न मै जानी है नाम धुन मुरली ज्यो मुख  
 सो लगी यै र है ललत प्रि भंगी तन तो रिज मुहानी है २५१ यथावा॥ दीप चित चाह लाज सलिल म  
 या ह सोचन दी पर वाह मति विषम वहाव सी लाग वड वागि दिन रै न रही जागिरितु राज र सो ला



गज्जोंमगरकीयेदावसी कोरकविचारलहरीनविसतारकैसेयरैनिसतारनितहोतस्रधकावसी  
 देवतिहोलालतुमैदेवव्रजवालवहियैरीफिरैविरहपयोनिधमैनावसी॥ २५२ मोहलछन॥  
 धंभपातिघूमवोस्रदरसनविसमरगादिभावकोकारन॥ मनुचितकरनभीतस्रावेगजचितमोह  
 वोमोहनिरधारनि॥ २५३॥ यथा॥ चहूंसौरशायरहीमलकैंनिवारमुखचंदहिनिहारगहिठो  
 डीनीठठाढोकै॥ सांसुनिकोपैंशुकरिस्रधरस्रधाकोपानकोंहूंमुरमायोजातहियराहगाढोकै  
 सौहस्रौधदाजस्रादिजतननिवेगमिलवोऊठहरायेंमुजमेठऊनडाढोकै चलतविदेसपियस्रा  
 ननदरससेकरूकहोतघातीलईरासिमोहमाढोकै॥ २५४ यथावा॥ ठाढीहैयकीसीचखचाहति  
 चकीसीकछस्रधनश्रुकीसीगाढहालारसपानकी चारिठगमरीसीदवाईमोहमेंत्रकीसीछाई  
 वारिवौरईसीभईविनुगानकी॥ छूटेवारमामूटेहारकीसंभारहैनधारोतेहैमलमुखसंचलके  
 दानकी नेहचित्रकारीलियकाढीसीलयातलागैचितवनिनंदलालप्रीतमस्रजानकी॥ २५५॥  
 यथावा॥ एकोडगडगीनलगीहैइकटकीनेहजोतिजगमगीमलीसांगस्रौविहानको माधुरी  
 अजागरमैंसोभास्रधासागरमैंरूपभरभोरपरीमलीमानमानको कौनकरैमानकौनवांकेनैन



वानतानैमौहकेकमानलईचित्रकेविधानकौ तेतीगोपिकानकेहियानस्रधियानभयेकानस्रसदा  
 नजलदानज्योलतानिकौ २२६ अमति लखन॥ अमस्रद्विष्ट चिंतादिकसंभवभूजनमनसादिककोका  
 न संसकारभवग्यानस्रसमिरतिप्रत्यभिग्यानस्रभैश्रवधारन॥ २२७॥ प्रत्यभिगपायथा॥ जमुना  
 जलधारसरोवरतेकटकेलिकरैनभमांजमिलानी॥ कंचनकेचकवाजुगषेलतगंगतरंगनिमै  
 स्रसदानी॥ चंदमनोभवचापनचावतसोश्रविचारुचकोरनिमानी इतोकहिकेनंदलाललखैतोव  
 हैललनभरतिकीरजधानी॥ २५८ अमति यथा॥ सुंदरसरंगवांकेपेचनकेपागकीमुकानिधिर  
 कानिकष्वरनीनजातहै छूटीश्रविदेतस्रतिदीरघस्रलकतैसीस्रेदकनमोतिनकीपांतिसरसात  
 है रिससीजितायदाविदसनस्रधरदलकामपुनसारश्रकीडुतिदरसातहै स्रमिरिस्रमिरमुखचंद  
 चास्रतरुनीकोवरुनीनलागैदिनरैनयौविहातहै॥ २५९ यथावा॥ मोरनहिलावतखिलावतस्र  
 कनिश्रगसावकमिलावतपरमसरसातहै चंदहिवुलावतिडुलावतस्रलीनस्रकुलावतऊचायमौ  
 हभंगनैधिरातहै भेटतिश्रचंभनिसौचंभनिकेधंभनिलताकोपरिरंभनिकोश्रतिहीसिहातहै याजु  
 कालिवालमोहजालनिकेहालइनखालनिहीलालनिकेवासरवितातहै २६० अथधृतिलखन॥



ग्यानसाक्षिआदिकसोसंभवभोगअवगुणतादिकीकारन॥ धृतिसेतोषकिधोडुबहंमैअडवबुद्धकीजैनि  
 रधारनि २६१ यथा॥ गाजुतुहैघनगाजिरहोभइसाजिरहोइहलोगयहैगति॥ तंविजरीअवलाज  
 नकोडुअजानिमहाइतितारकहाअत॥ प्रीतमकीसुधमोहभयेविरहानलकीगलअंगनिगेपति॥ अ  
 यअटानिघटानिचपेटिलपेटितुहीकिनदेहदहैडति॥ २६२ यथावा॥ कौनकेसिआयेआयेधीरज  
 दलनऊधोअसोधोविरहिकविव्याप्योव्रजजनमै नैननिविलोकियतलालकीललतलीलाज  
 मुनाकेपुलनिविराजैवनवनमै॥ गांयनचरावतहैलोचनचलावतहैहिंयनिलुभावतहैभावतहै  
 मनमै॥ दुतिदरसावतहैरसवरसावतहैअतिसरसावतहैतापभरीतनमै॥ २६३॥ यथावा॥ कहें  
 एककोऊकविकामनिकहितकंतकितेदिनआवनकीअधिलक्षिपाइहैं प्यारीजिनसोचकरोक  
 झूजीयधीरधनोभारेदानरामचंद्रभूपतिपैजायेहैं ल्यायेहैंजरावजरीजीननिकेघोराजोराजव  
 पटद्वैकजसकवितरिजायहैं॥ दीननकोदावादारदरिदरददौरदरवरदूरकरहरवरआयहैं  
 २६४॥ लज्जालक्षन॥ सीसनमनडगमुंडनसौमुषगोपनादिकरिकरिआलोचन॥ होतदुराचारदिहैत  
 सोलाजसुखंदकीयासंकोचन॥ २६५ यथा॥ गानेकीजामनिसोनेकीवेलिसीसोहनीभांतिसहाग



सांसानी ॥ सोहनि सैक सखी निवि सास दैनंद कि सोर पि या दिग्यानी काह गहेंग डी लाज में संग संकोरि के भो  
 हमरो रिकेतानी ॥ नैन चुनाय डुराय के आन न रंद वध ज्यो वध सकुचानी २६६ यथावा ॥ सन वोलति चाऊ भ  
 रे कलहं सनि श्री नंद लाल पीया नवनागर ॥ प्रषति प्रेम सोप्या नीक हं ईक सै सो सून्यो तुम नाद ऊ जागर ॥ ता  
 छिन ही तिय नैन चुनाय डुराय रही मुख रूप को आगर ॥ भो हमरो रिकेतानी ॥ सवैत न कड रही वडे लाज के सा  
 गर ॥ २६७ चपल ताल धन ॥ मखन राग देखा दिजनि तस रिदर सकुचोल प्रहारा दिक कर ॥ और और  
 कर्म हिक नवौ कै कर्म तराचा पलक हिक विनन ॥ २६८ यथा ॥ बिंदावन चंद फागु सेलै मधि वंदावन चकि  
 तथ कित सन सिंघु चहु कोद के ॥ आपुस में डारै पिचकार नि की धारै गोप मंडल फुहार नि ऊ आरै मन  
 मोद के खेल के प्रसंग सभे राचे रूप रंग न सवारी धित रंग बहु वाढा विनोद के लाल मुख लाल न गुला  
 ल नियों दारै वाल दामनी ज्यो पाछे पाछे पाव स पयोद के ॥ २६९ यथावा ॥ कवहं क कंदु कलै ऊन धऊ  
 छालै कवहं कवीन वनावति फल नि की मालका ॥ कवहं क आपुस में रूप नि निहारै ज्ञानिर है द्या  
 ल समयरी मोह जालिका हलै लहिंगानि संग ओहि नी सरंग नि विराजै सति गोरी गोरी होरी की सी  
 जालका ॥ दोरी जाति दोरी आवै मन के मनो रघसी लाल लखिली जैन गोपिन की मालिका ॥



२७०॥हरवल्लभन॥ छंद॥ पियदरसनसुतजनमम्रादिभवपुलकसेदसारभेगमश्रुकर॥ चित्तप्र  
सादहरवतुमजानदुरसयंचनिमैपरमसुगपनर॥ २७१ यथा॥ म्राजुवजस्यामघनम्रागमजिता  
योसमसोनपुरवाईपौनसुधाढरकतिहै॥ चाईदुगभौरमुजाफरकतिलागिविरहागिभरकति  
हीसुतनठरकतिहै अमगपुलकनवसंकुरभरततरसावसहिचरीकंठलगिलरकतिहै पत्रस  
रकतगुच्छवेलीकेलसातप्योहीअरजलसातअरसंगीदरकतिहै २७२ यथावा॥ केलिकोरचाव  
तनचावतचपलचित्तनैकुनवचावतसमाजलाजभारके॥ चाहअपजावतसजावतमनेकचाअ  
वाजनिवजावतमनोभवविहारके मिलनसियावतलियावतविचित्रगुनहिंयमैदिसावतजुलो  
चनमधारके डरैअमकावतरुकावतमचानकहीकेतेनचरितनयेनेहरिगवानके॥ २७३ यथा  
श्रुतियांनहीहोँ छैकेवतियांसुनतिहौनरतियांसम्राईयोसुमरिसरसातिहौ मलीभईफलीवहि  
विरहिकीवेदनिसुफलीम्रतिमानंदनम्रांगनसमातिहौ म्राजकछुनैननिसोनीनरीमपर  
तिहौम्रमलकपोलनिमैनीकेलसीजातिहौ मालीमिसहीमिसपवरतनदेविदेविफेरिफेरि  
घंगरकेम्राटमुसकातिहौ॥ २७४ यथावा॥ महलमहलहोतचहलपहलधुनिकिंनरीनरीन



स्मरञ्चैकं ठगायो है सद्याने वाजति मवाज चहं स्रानिलैलै कनद्वनर नारी गन धायो है कीज  
 तिज्झाह कर देवदिज पूजा जहां कंचनिके ठर निस्सु मेर वनि म्मायो है भागवली जय सिंह भूपके भ  
 वन म्माज भर पुत्र जनम को यों संभ्रम सुहायो है २१५ मथ म्मावेग लधन ॥ मरिदरसन प्रिय म्मवन ।  
 कहुं सकुत पाताद जन तम वधारन त्वरा संग प्रसखलन विपर जय म्मादि म्मने कभाव को कारन ॥  
 २१६ होत म्मचान कइ म्मनि म्मजु डहुं निपर ततिन को परना में किधो होय संभ्रम म्मावेग सुभाष  
 त सुकवि भाव काविता में ॥ २१७ यथा ॥ पियावर जेंगर जेंगुर लोग हिंये लर जे तर जे वहुवार ॥  
 सवै विध पेलि चली सुख वेलि हथेलि ससोच संकोच संभार ॥ कहुं कुचहार कहुं कुचभार कहुं  
 तजि सो रहसाज सिंगार ॥ अही मुरली मधुरी धुनि मै मन मोहनी मेलिय नंद कुमार ॥ २१८  
 यथावा ॥ एक कनर हो है सिथल मुख मंचलि मै दूजो सखी कंध धरै चलत अतावरी एक डग गु  
 रजन म्मागम ससंकपा छै दूजी पियव सति विलोकन को दावरी नेको ॥ एक चरन भुजंग लप  
 टाय दूजो चलो ही चहित धरै भारी चित चाकरी मदन मतंग जो ते मनोरथ रथ परवै ठीजा  
 त वावरी सींधेरी विभावरी ॥ २१९ ॥ यथा ॥ एक कुलकानि कीसरी पै मकुलानि रतै दूजै लो

संधेरी सी विभावरी



कलाजघेरिनैननिलईलई॥ तीजैकोरिकोरिमैनमाधुनीतिहारैरूपहीयोहैलेतहरिजीजतिदईदई॥  
 ३तैवजवीधनिविधानीइनविद्यापियसंगष्टविष्ठाकीनहैछतियाछईछई॥ रंगमनीवांसूनीअनेकगुन  
 गांसूनीनिपासूनीपुरानीपीरपारतनईनई॥ २८०॥ जडतालछन॥ अनभावनअनमिसअवि  
 लोकनिसवविसअतिरुअनिअयादिकर॥ ३४॥ निअदरसनादिजसवव्यवहारामिमितिजटा  
 वर २८१ यथा॥ अतविकारप्रलेपारनमकारजाहिकरिकैअगारदुखजंतुकोटसैनेहै सैसापा  
 यवारपरपारकरयायोहनमानलषियहिलेजेहासरसछैनेहै॥ वित्रमकोधरिधरिकोलाहलक  
 रिकरिकदतकुतहलसोचिंतमददैनेहै रामसैनअयेसरतुंगतोयताकोतकितेईचित्रलिषेसेहरि  
 द्रसमहैनेहै॥ २८२ यथावा॥ नैननिनीदनिमेअनहीनितहीकछलैसीलगायदईहै संगनिनै  
 कहलैनचलैगिनपोअंचलहूनसमोअलईहै देवतिहांदिनचारकितेअलिअनरहीइदिवानेन  
 ईहै मित्रहिदेवतिहैहैकहाअवचित्रहिदेवतिचित्रमईहै॥ २८३ अथगनवलछन॥ प्रभुताधन  
 कुंटववलविद्यालावनिसादिहेतुसंभववर परअपमानमोहद्वगविअमहासरपौरअप्रकासादि  
 कर २८४॥ आपुमारिसर्वाधिक<sup>धि</sup>बुधिजुकैधौसवमैअधमबुधिवन॥ ताकोकहितगनवसंचारी



नसभावनिमैश्रितिसयानन २८५ यथा॥ मुनकुंभजनेष्कमंजुलिमैघरिपीयोपयोऽनिधिधार  
 तजोमहि॥ गंगतवैहरनैनहुतासनमैपसिजालगुसंगनिहोमहि॥ तोलगमैजुकीयो नवनाग  
 रिलोचननीरनदीनदतोमहि तातेरचेकितेसिंधुनयेअपजावतिजेभ्रगुकीरतिसौमहि॥ २८६  
 यथावा॥ काजरसीकारीनिसकरतिअज्जारीस्यामसारीहंनदुरतिजुन्हाईजालभरैहै चुह  
 लमचावतनचावतचकोरहंसचटकनिबुहबुहावतसरैसरैहै ठौरठौरभौरनिकेभौरनिजगा  
 वतसेत्पोंत्पोंपैंडपैंडकलकोलाहलकरैहै कैसेरंगमहिलज्योसखीसंगपडुचोंगीमेरेअंगआ  
 लीआजुमेरेवैरपरैहै २८७ अथविषादलक्षण॥ धावनगमनसौरअपराधहिआदिहेततेहो  
 तप्रकासा॥ सोविषादनिजइहिसंसयकैधोंपरअनिष्टजगपासा २८८॥ कहंसहायहरिवो  
 अपायहिचिंतादिककहंविमनहोतकर॥ कहंअधानधावनमुखसोवननिंदानिस्वासादिहेतुवर  
 २८९ यथा॥ जोमैभौनआपुनेहीजांअफिरवीचहीतेतौनकबूझहितवचनसांचमेरोरी जो  
 जियधियायजैयैअहीकेलकुंजतनतौपुनकहाधौवनजायपरधेरोरी॥ नहोईकहंजुदुरघ  
 नवनतरुतलतौफलकहाधौहतनेतैहियहैयोंरी मधिहीसंकेतमगकलानिधिऊग्या



श्रवकीजै कहाए कौनहि होत है न वेरोरी॥ २६० अथ श्रौत सुख लक्षण॥ प्रिय सुमित्र नादिकारण  
 संभवतं द्रव्य गौरवादि कारन॥ काल असहता अत सुकता कै सवतन श्रव रक्ती या सचारन २६१ यथा॥  
 कैयुक शकंत केलि कौंति गमनो रथनिकरत प्रथम जामजिय को जितायो है दूजे पुन केतु की कमल चा  
 रुचं पकस्यौ मल्लिका सुमन माल गूंदत हितायो है॥ तीजे जाम मन मय मेखला कुंडल हार हेम बलै  
 संग निवनावन वितायो है नंदलाल प्रीत मेके मिलन मै सा डोसाली चौघो जाम वासर को जात न  
 रितायो है॥ २६२ यथा वा॥ डोलिका टिका धनी मै नाभिसर नाईयेरी त्रिवली तरंग निमै अतिसर  
 साईये रोमावलि रुख तरनै कसिर माईयेरी गची ऊर के सरिके रंग निरचाईये॥ वांकी वन मा  
 ल सौल पट ऊर माईयेरी संग के त्रिभंग परवार वरिजाईये तै ही शिब तन मन ताप विसर आईये जु  
 प्यारे ब्रज चंद को दरसनै कपाईये॥ २६३ अथ निद्रालक्षण॥ अम सुभाव चिंता श्राल स्पृहादि  
 हेत लहि अपजत अनपर॥ करवट करन नैन भ्रू चलन रुविभ्रम वचन रुख पनादिक करन॥ २६४॥  
 श्रौर श्रौर इंद्रिय तज मन जवन हित त्वचाम धित वजो होई निद्रानाम भाव संचारी कसो सकल कवि  
 राज नि सोई॥ २६५ यथा॥ अगे हंदि ने सनै न केज नि अघार वौन अघर कपोल जु गजर जनि गोय



वौ॥ संगनिके <sup>मैं</sup> उरेंडि डारवो तल पपर कै यो दाई वाहिनी करो टिन को होय वौ प्राणपति नंदलाल  
 संगरति रंग भये <sup>छ</sup> ये संग संगता सुहाग सौ ज भोय वौ॥ सोई कहै देत माली प्रात इति भोति नयसि  
 षपट तानि तानिते रोसु ससाय वौ॥ २४६ यथावा नंदलाल संग भई संग नामुने गवस संग संगरा  
 तिरतरंग निसो आई है प्रात पट तानि कै गुलाव दल से जपर सोवति सहेल निश्च वीली लख पाई है  
 वेनी पीठ पीछे तेज लटि कै कपोल कंठ कुच जानु पर सत पां मन लौ आई है नींद नै मंद मुख चं  
 द जीतली नोजा निजो रागहि मानो पांति मरकी आई है॥ २४७ यथावा॥ सीस मोर चंदन मै  
 माधुरी मंदन मै कोरि <sup>वेदि</sup> ध्वनि दन मै दीये मोद मन मै आभ सन रंगन मै संगरा गरंगन मै पीत  
 पटरंगन मै धरे जोति नन मै लौने द्रगलाल न मै वै नै वानमाल न मै वन्यो ग्वाल वाल न मै विहरत  
 वन मै नीद भरे नै नै नी को चित चैन न न मै देखे आनु सपने मै लख पने लल न मै॥ २४८ यथा  
 मार लछन॥ धातु विषमता सुनै रहि वौ अति दुष भय सप विचता दित्त कं पफेन निस्वास म्  
 पतन विप्रियासर सना लुलान भत॥ २४९॥ होय यहादिक को आवे सजु सप समार सो कवि जन भा  
 ख्यो और मर शाना मभाव सो याही मधि विचार कर राख्यो ३००॥ यथा॥ नव पल्लव मधुर रति



नितकंपततावा मुजसुठिऊपसारे वहुकोरकफेनविंडपटलीफुनफैलरहियवेसधिवपुआरे  
 ममनावलिचिकुरनिकरवगरायेफुल्लियपुहसघोरदगफारे॥ व्रजवालनिविषमविरहिवेदनिल  
 सवनतरसुपसमारमनघारे॥ ३०१ मरखनयथा॥ दूवरीदेहभईडुलहीदिनतोविरहागनितापत  
 ईज॥ कोरिसखीनकरीविनतीतवनैकुवजावनिवीनलईज॥ गढबेईगुनगावतरावेरीतनईन  
 ईलेतभईज॥ जानतितारहीकेसमवातनमरखनावहुवारखईज॥ ३०२॥ सधसुपतलखन॥ निं  
 दासंभवनेत्रनिमीलनप्रलयसासअशासादिककर॥ त्वचहिछाडमनरहितपुरीततिनाढीमधित  
 वसुपतिहोतवर ३०३ यथा॥ धीरेसासअसासनिहालतसधरदलमीलनकैलोचनकमल  
 अभिरामको कालिंदीकेकूलकेलिकुंजकुटीमधिहरिसोवतिहैंतानिपीतवसनललामकौ ह  
 रेंहरेआयमुखमंदमुखकायकोऊकामिनहरितकानकुंडलअदामकौ कोऊबाहुकंचनवलयर  
 रिलेतकोऊमातिनकोहारकोऊअथकटिदामकौ ३०४ यथा॥ येदखीनखरीतलफातिहीतलप  
 परीपाइसाधियरीनैननीदहिधरतिहै॥ तवहीनिहारेअंगरूपअजियारेनंदलालप्रानप्यारेति  
 नसंगविंहरतिहै॥ करिपरिरंभनरदननखदानदसमसैदेहकसमसीजागिजुपरतिहै चैंकि



चकिचारतिचहंघाचितजानतिसंजोगकिवियोगसपनोकिंसांपरतिहै ३०५ अथविवोधलक्षन  
 संगसाकरघनमोहनजंभाद्रगमरदनादिभावनिकानन निद्रामंगजविवोधइंदियप्रथमप्रका  
 सकरोनिरधारन॥ ३०६ यथा॥ नयनकटाक्षविष्टनिमेषेहसलिपुंडरीकडंवरसोंसंवर  
 मचायेहै संगरूपमाधुरीतरंगनिसौतैहीठौरिचंपकतमालफूलवरधारचायेहै कंठक  
 लनादकुडुकायेकुंजकोकलनिमौहमंगमारीकामचापसेनचायेहै जागिअठभोरहीसंके  
 तकेनिकेतदोऊदामिनीसुधाघनसमूहसेलिचायेहै॥ ३०६ यथावा॥ जाग्योचंद्रमंडलनचाव  
 तमर्केर्निषाजगीचंचनीकष्टाश्रतिमभिरामिनी जागेकीरकोकिलकलापीकलहंसकोक  
 चटकचकोरकारेशहिहंकीकामिनी॥ जागीरूपवेलितामैजागीअडमालजाग्योपंकजविपन  
 जोरजागीजोतिदामिनी जागिअठीठौरिठौरिचंपककीअरेजवभावतेललनसंगजागीभोर  
 भामिनी॥ ३०७॥ अथअमरसुलक्षण॥ अधिषेपअपमानादिकभवपरअहंकारविनाससमीहा॥ ३  
 गआरुण्यखेदसिरकंपहिआदिहेतुअमर्षमनजीहा॥ ३०८ यथा॥ आजुहमैंप्रभुकोहुकमनहिहोत  
 नतोपुंछसौलपेटितुष्टत्रिभुवनसुलही जायासतसोदरसहृदवंधुसेनासाधनावनेभ्रमावैसोत



सायरकेकूलही नितपूतिपंचमवलोकतचयलनैनीसीताजुतहरईसीफलतूलतूलही दीहलंक  
 पुरीकोऊमारिआयभेधरेरघुपतिचरनसरोरडुकेमूलही॥ ३०८॥ कैयोवेनगईभईअधरस  
 सितलसलाल॥ जारतिपावकजालज्योंजावककीडुतिमाल॥ ३१०॥ अथअवहिस्यालक्षण  
 ढीठ्योलाजकुटिलतागौरवआदिहेतुकाहिसकविअचारन औरभांतिकीऔरिदेखिवोकाहि  
 वोइनहिआदिजिहिकारज॥ ३११॥ जोआकारअकतसंगोयनसोअवहिस्याभावसंचारी॥  
 रसभावनिकेग्रंथनियटतरपंडितश्मलक्षणअवधारी ३१२यथा॥ राखतिनवालमुक  
 ताहलकीमालअरकोमलगुलावदलहाथनलगावई॥ देतफूछीवातनिकोऊततरस  
 धीनमुखसंगनिकोरंगसंगरागनिधिपावई॥ वालमविदेसवसवालमदनेसवसवाल  
 वसविनहिसनैकुनजतावई॥ केतेवहुचासहनकाढतिअसासधरसासननदीनडरहिय  
 हीवितावई॥ ३१३ अथअग्रतालक्षण॥ काहिसपराधरुदोषनकाहिवोचोरीडुखतादिक्ततमप  
 र॥ तरजनताइनआदिभावकरनिरदयता<sup>सु</sup>अग्रताकविनर॥ ३१४ यथा॥ कनिकोदंडसमर  
 भवखंडितभूमतिमुजादंडपरचंडनि॥ तहिपनिचधरीप्रतिपछराजवरमनीजनवेनी



गुनरंङन॥ अतिक्रानाकान्काठारपातकरिदलतिडुखगजदंतअदंडनि॥ मधियमसानवानधरिता  
 पनताकततिरिवेमानवधंडनि॥ ३१५ यथावा॥ लागतमुलाइमगुलावनकमलदलसिनसकु  
 समन्योष्ठावरिकरिडारिये असीसकममतानदेवीसनीकङ्कानूचंद्रकीकलासीद्रगदू  
 रिहीनिहारिये असीकामिनीसोअसीकीजतिकठिनकेलिमदनअधीनहैकेचातुरीविसा  
 रिये॥ एतोपरिरंभनिदैदीजैनदिविद्याएतीतारपवनारङ्कैएतोभारधारिये ३१६ अथमति  
 लघन॥ मप्रेरनकरचलनचातुरीसिधिरूपदेसादिककीकारन सास्त्रचिंतनादिजमुयआरथ  
 ग्यानसुमतिकरीयैअविधारन ३१७॥ पुनः॥ नयरुविनयअनुनयअपदेसरुअपालंभयाही  
 मैहांही॥ नियारेनियारेलखनिलखतिसमसोहतअपअपनीगेंही॥ ३१८ पुनश्च॥ नयसुनी  
 तिरुविनयनमताअनन्यविनतीकरिवोहोई॥ अपदेसरुसिधिरैनअरहनोअपालंभ  
 रिसप्रणयजसोई॥ ३१९ प्रथममतिथया॥ लारीकारनाटीकरहाटीतियनैनपुटीपयोध  
 रघटीपरिरंभलंघटनिके॥ वीततदिवसकेलिकुंजकुंटीभुजतटीलियतपटीरनसध्यान  
 सुमटनिके॥ सुदुपरमारथविचारिचारचातुरीनिकेतनिकेद्योसपुनिपातकघटनिके गो



विंदजनानन्दनजोगेसरजगनाथकृष्णविष्णुकेसवरमापतिरत्निके ३२० नय यथा॥ मानअपमा  
 नअरुलाजकुलकानआनदेसकीचलनिताहिकवहंनगरहियै॥ हिलनिमिलनिहियहिलरुसोढुल  
 सनिहोसकीपुजनितितहेरतअमहियै रूपअजियारेप्यारेनंदलालभावतेसैजीवनधनहिकोरि  
 जतनकैलहियै नेरुकेनगरकामभूपतिकेराजवसिआलीयहूनीतिनितसेवतहीरहियै॥ ३२१  
 विनय यथा॥ वडेवडेनैनिकेजोअवडेआनंदमैहोतवडवेलीकतसैसेकीजियतहै॥ रूपव  
 नआपनेमैविरहैसदाईअलिखंजनचकोरकहारोकिलीजियतहै ब्रंदावनचंदमुखचंदलखि  
 जीजियतनातौब्रजचंदनकपूरभीजियतहै मोहनहजारवानलीयेपंचवानेयेहीइनआगे  
 मानकेदियाअदीजियतहै॥ ३२२ अनवय यथा॥ आहुइहिंजतनकीजैअभिसारप्यारीपाउडे  
 पलकपाअपीरहंनगहैगे परिरहैललितअभिलाखलाखलालनिकीसाधकवसंतकोसकलध  
 णनिकहैगे प्वानीपिकलैहैअतिसौरमरसालहैहैमजहैहैमधुपकमलसखलहैगे॥ पाइ  
 हैअखंडचारुचंदनीअजासचंदकोरिचंदचाहसोचकोरचाहिरहैगे ३२३ उपदेस यथा॥ जोपै  
 होअधारतिहुंलोककीनिकाइनकेमाधुरीअपारभरेकोरिपंचवानहो जोपैहोजसैननैन



तारिकानहंकेतारेआनंदकेदानमनमोहनीनिदानहो जोपैहोंसजानवडुजानवडेजानमनि  
 प्राननकेप्रानतियमानहंकेमानहो प्रीतिरीतिवेदनकेभेदसीधलेहुतअमाननमैआनआनआ  
 ननपैआनहो ३२४ कोपसोंऊपालंभयथा॥ आगिहंकोआगिताकोनेहयहनाऊपादिहमहंसैभोरे  
 जनकोमुनाईयतहै निपटविसासीताकेहाथयोंविचायप्रानलोकवेदनीतनेंमसोंतुनाईयतहै  
 चाइपैचढायलाजकानतेकढायस्रतिहिलुगुवढायजिययोंजुनाईयतहै वधिकविधातातो  
 हिवेदननआईहायहायतिहिमीतहंसोविघनाईयतहै ३२५ प्रणयतेऊपालंभ यथा॥ पूरन  
 चंदचकोरनिज्योइहिभांतिहीनैननिचैनधरौगे॥ कैदलकेतकिमंगनिज्योइनमंगनिआनंदके  
 लिकरौगे कैकाहंभादोकेवारिदज्योवनमोरनिमंतरतापहरौगे॥ कान्हूकवैतियकेहियकीस्र  
 भिलाघनलाघनिभांतिभरौगे॥ ३२६॥ नायकाकोऊपालंभनायकप्रति यथा॥ कूडतगंभी  
 रनाभीरोमावलीयु नलैकैविवलीसोंस्रवलंववैछोऊठिनीठिकै येस्योछविजालनिवि  
 सालवनमालचपिकछुकवचावगखोऊठनिवसीठिकै॥ मंदम्रदुहासस्रधारसकैप्रवाहि  
 वहिवचिगोकपोलतलकुंडलनिईठिकै॥ कुंजनिविहारीछविदेसततिहारीफेरिवेधोमन



भाभी अनिया नीजुगडी ठिकै ॥ ३२७ ॥ नायक को ऊपाले मनाय का प्रति यथा ॥ चरन जघन कटि  
 उदर त्रिवलि रोमराजी अरज निरूप नाजत महानी को ॥ कंबु समकंठ तहा को किल कुहुकाता पै  
 ईस चंद्र मंडल सहं सरज धानी को ॥ नख ते लौ सिख लौ न सीली न सरा सिमईता मधि हिना नो  
 हाल का धौं या गुमानी को मेरो मन मो पै नाहि दूढ न हो गयो ताहि जहां गयो तहां भयो होइ हलौ न  
 पानी को ३२८ यथावा ॥ ईशुर सनंग एडी तरवान तर भिंडि कर है चरन नख चंदरुचि मिलि गो अ  
 टकिट कौन निघट कि गोरी पीड रिन लटकि मटकि अरु के लियं भ किल गो नाभी सर वडि रोमराजी  
 सो अर मित्र वली निसें वलित गाढे ठाढे कुच ठिलि गो ॥ अगम दलेपत मजालि तरि कोइ मुख चंद  
 अजिया रै हिय नैन निसें हिलि गो ॥ ३२९ ॥ चंद्र सो अपालंभ यथा ॥ कैधौ कहं विन ही जन रूपर  
 को पिमहा करवाल लियो है ॥ कै अ वला जन ताप के आप सो पाप समूह सरी राख्यो है कै विध  
 मरया मोह मई नव नाग नि तेरे ईहा थि दियो है ॥ साची कहैं न सरद सधा कर अं क मै का रो कहा  
 धौं कियो है ॥ ३३० ॥ दोहरा ॥ तव संग संग नि पथि कहै फिरे लाल जुग नैन कुचि गिरि मृगम  
 दलेपत मजाल परे निकसै न ॥ ३३१ यथावा ॥ कौरत करे जो कर यत्र से करे रे कर करत क



कसौ काम नैकुन संका तो है सिंधु कै मंगार वसिल्या वति जह न घसि कै धौलै कहर मसि देत मति  
 घा तो है ॥ सीरो कौन कहै सखी सरद सखा करहि वा डव मगनि जाल जामधिसमा तो है चहुँ दि  
 सवि धुरति तारागन तेज कनत न मन ताप न तप न हूँ ते ता तो है ३३२ ॥ नेत्र सें अपालंभ यथा  
 बे तो विसवासी है वधिक नेह फांसी डारि करत अदा सी ये हूँ उही मग गे न है देवत ही नी की मंग  
 रूप माधुरी की वावरी है सवजी की सुधि बुधि हरलै न है आपु वस मगन वं क विलोकनि वान  
 तानि करे हित हानि देत विरह कुचै न है कहा कहों माली मति भरे न नैनिको नैकु सम मं न है  
 एमै न ही के मैन है ॥ ३३३ ॥ आतमो अपालंभ यथा ॥ प्रथम पियानो की नो कर वल यानि पुन  
 प्रीतम के मीत मसु वानि गौन ठान्यो है ॥ धीरज मधीर एक दिन हूँ न रहि सको चित नै मगा ऊ  
 ही चलन मन मान्यो है ॥ करि सुख सुने मों न प्रीतम वि प्रीतम वि देस गौन करत सवनि चलि वा  
 ईऊ मगान्यो है ॥ तो हूँ चलि वे ही तो उचत मेरे प्रान प्रान नाथ साधत जि कि हिलाल चलु भा  
 न्यो है ३३४ कामो अपालंभ यथा ॥ तो तनम सम मई मन मय नि न दई ता ही लौ नि वे रो दई जार  
 कनर निको सु तो विरही न मूढ होत नहि को हूँ तो लौ तु हूँ उह टैन फूछि लेत न घर निको ए



रेहरनैनहुतासनकेजरायेजियजानतननेहकेजरेनिकीजरनिकै॥ ताहीतेनिसंकनिसवा  
 सनयोजास्योकदैगान्योकनैतूनीरकेपांचहंसरनिकै॥ ३३५॥ अथव्याधिलक्षण॥ कुपितधा  
 तुभयकामकलेसादिकभवदेहउपद्रवादिकर॥ होतज्वरादिविकारजुव्याधिसकहीभावरसंग्र  
 थनियटतर॥ ३३६ यथा॥ देखिगतिनारीकीकुटिलयौविचारीतियतापमन्योतेरेतनमैअतन  
 जुरहै॥ ताहिदूरिकीवेमतिमेरेउपवासतोहिहोइगोपरमसखवालतोआतुरहै दीजैरसआप  
 नोतुरतहरिलीजैपीरजानतिहोतुहीसववैदनकोगुरहै तेरेकहेलंघनकोनाहिसमरग्रह  
 मतोसोकौनचितचाहिजानिवेचतुरहै॥ ३३७॥ यथावा॥ आवतकहंकोऊठिधावतकहंलो॥  
 गुनगावतअनेकअसीचितगतिअटकी विरहकेभारमधिसंगनिसंभारहैनछूटीलटट्टी  
 मातीलरहंसुकटकी॥ नैकुवंकनैननिविलोकीजवहीतेसंगनैकेऊरवेदनिनिपटचटप  
 टकी एरीपनघटकीविसारीसुधिघटकीनसुधिपीतपटकीनतटकीनवटकी ३३८॥  
 अथअनमादलक्षण॥ प्रियवियोगधननासादिकभवप्रयालापहसरोदनादिकर॥ विन  
 विचारआचरनजुकोईसोअनमादवसान्योकविनर॥ ३३९ यथा॥ हैयहकंचनवेलिन



कोई वहै मन मोहनी राधिका गोरी फरि न कोय वति नाति तवैत न मर घाहै है वदी वर जोरी यों व  
 हुवार विचारि कैसी चतलोचन नीर न सों चहै सोरी ॥ <sup>दा</sup> क्षरति पौन मुजा जुग भेट कै बोलति हे  
 वतियांस सोरी ॥ ३४० यथावा ॥ ऊरज ऊतंग सी चिआंसु जल धूटी लट रूप रज पटानो मा  
 ने संभ्रम <sup>जं</sup> न्नातरंग जल तासि न काल व्याल लपटानो विरह विधावाढी बहु बालहिं प्रीतम  
 रूपहिं ये मर हटानो कसकि ऊठै मुख मालवाल वक घटत घटत सव संग घटानो ३४१ अथ म  
 रण छल छन ॥ कहित प्रान ऊत त्रमन मरण तह सव विभाव अनुभाव प्रगट है वर न तता  
 की प्रथम मर वस्था जोर सभाव कलानि सभट है ३४२ यथा ॥ दुहुं पाइ पसारि मुजानि ऊसादि  
 परे न संग न लंक पती नहि तासु समीर छु वै कच पास फिरे पुनि मंद ही मंद गती सवि  
 तान प्रचंड कि रै कि न <sup>व</sup> र्जलि आन न पै मति भीति मती ॥ सन संकिस वै मर पने मर पने घर वै ठ  
 क रै चर चान रती ॥ ३४३ ॥ अथ त्रास लछन ॥ घोर मर वन कछु घोर सत को दरसन आदि  
 विभाव वधानहु थंभ से दत न पुलक सि थल ताइन हि आदि अनुभाव निजानहु ॥ ३४४  
 भीत विचार जमन विशेष मर आक सभिक सो त्रास कहावै ॥ कै मन विशेष कहै ते दनो को संग



हसनभावै॥ ३४५ यथा॥ रुनिहरिनामनामकेसुषतेवरतइंद्रयागमकीसंकहि॥ गिरमैनाक  
 होतसतिकातरधारतससनिपातिसातंकहि॥ पंषसकोरिसकुचिसंगसंगनिरंचकऊचैश्र  
 वणजुगवंकहि॥ रहिसुषमोनजातधसकोश्रधतलगंभीरनीरनिधिपंकहि॥ ३४६ यथा  
 वा॥ कारेपीरेधोरेधोरेधूसरेधुरेधूरिभरिधूमधारिभरिभाजिवोकरतहै धुरवानधू  
 रीधूरीविधूरीलहूरीलसैजीगनासंगारीडारैगाजिवोकरतहै चंचलाचुरैलैचहूंशोर  
 चारुचाचरतिघोरघोरघुघरूसेवाजिवोकरतिहै जारेरतिईसलाषईसकेभताहधनसूनेभो  
 नभारीभयसाजिवोकरतिहै॥ ३४७ यथावा॥ श्राजुकालूश्रावनकहेतेमनभावनदयेहोविष्णु  
 रावनकोजानतकपटहै नावरेतौश्यालईहावीतैकोनहालतिहैरगतनलालचिषरीचटपट  
 है॥ पागतिविरहिजगलागतमनैसाकहूंभागतवनैनचहूंशोरतेरुपटहै व्योमधूमधोर  
 नीहैतारागनचिरगीहैचंद्रविंवपावकहैचांदनीलपटहै ३४८ अथवितर्कलक्षण॥ कहि  
 संदेहविभावजम्भूसिरसंगुलिनवत्तयादिकौकारन कष्टकविचारवितरकवयानहुसोपु  
 नचारभांतिश्रवधान॥ ३५०॥ एकविचारविषयसंसयतीजोमनध्रुवसायचौथविप्रति



पति॥ इहिविधिचारचारिभांतिकोवर्नतकविवितर्कसंचारीकीगति ३५१ कमहीसोऊदा  
 हर्न॥ प्रथमविचार॥ कालिंदीकेनीरमधिलुठतकठोरतरकमठकीपीठसोगरीसचापकू  
 नहै रामवालकमलमृनालकमनीयवपवंसम्रवतंसमहिसवगुनफरहै॥ परमपरमको  
 लबोलनकौलोलवलनाजनिकीवातपुनिधारतिगरुहै तातेत्रिभुवनमैमहांईमहनी  
 यमहमेरेएकसविताईमंगलकोमरहै ३५२ यथावा॥ प्रानहीहोजुतौप्राननहूतेकहोयह  
 प्रेमकीसंपतिकैसै॥ प्राननतेजुहोन्यारीतौप्रानम्रभेदकैजानतक्योनितमैसे नन्यारीनए  
 ३ कसरूपतौप्यारीकहोतिसरीजयैकोतुमदैसै॥ होतुमहीतुममोतनमैमनफलसुवासन  
 हीमिलजैसै॥ ३५३ संसययथा॥ सुंदरतागनिवेकीलकीरकिधौयहएकैमनोजवनाई  
 तीनहूलोकविलोकनकोकिधौंलावनिनैयहग्रीवऊठाई॥ नैननमानंदकेदुमकीकिधौ  
 कंदलीहैयहसंकुरमाई॥ कैधौंसुहावनीतोरीरुमावलीसीनंदलालपियामनमाई॥  
 ३५४॥ अनघपवसाययथा॥ कहिकहियहकौनमंजमनरंजनसंजनजुगलविलावनवारी  
 विहरतिअतिजमननीरकैअंतरकंचनकेलिललतिलहकारी यहऊदितकौनसारदससि



मंडलमदनचापनटवतिरुचिकारी तिहिऊपरतोमरतरलतिमिरनकोयहरचनाकतहंननि  
 हारी ३५५ ॥ विप्रतिपति यथा ॥ यहनहिस्रतिचंचलचंदकलाधिकनाधिकवृजमंडलअजिया  
 री ॥ नतरकतिहिंदेहकिरनमालीकीकिरनहिकतषिनसहतनिहारी ॥ नहियहकनकमंजरीध  
 रतिजुषंजरीटजुगपनमविहारी ॥ तिहिकारनमलसमदनमदसोकोहिकोयहरजगमगातभु  
 विहारी ३५६ ॥ अमिलायकगुनकचनप्रलापजुसुनियतदसदसानकेमाही ॥ ऊष्कतासु  
 मरतिऊनमादसुइनेतेजुदेहोतकहुंनारी ॥ ३५७ ॥ इनेतेजुदोएकछलहंसंचारीभावजानीये ॥  
 लघन खंदोर ॥ वज्रोक्तिडुरिमुसकानिदरसनप्रकृतिषिपाऊआदिकोयलहै अरिकुचेष्टा  
 अपमानादिजुगुपतक्तीयासंपादनछलहै ॥ ३५८ ॥ अंगारमैछलयथा ॥ दूतिनकोहितवैनगने  
 नसखीजनकीमनुहारिनमानी ॥ माननिमानहीसोमनमाहिमनोजहंकीकछुकाननआ  
 नी ॥ ताषिनकेलिनिकुंजमैआयकेलालनवोलेहैकोकिलवानी ॥ सोसुनिवालमचानकहं  
 सकुलायऊठीअभिसारहिगानी ३५९ ॥ अंगाममैछलयथा ॥ रविरअचंचलचक्रसघटनऊ  
 चितकूटगिरवहिवहिषाम ॥ कपिकुलनीठिजिवार्येऊछायेहनेजुनाकसनिमधिसंग्याम सा



तदुकरेकपरकेसागरलंकसमीपलघतपुनिराम॥ कष्टकसखेदहृदिदवदनतनलायनहेलोच  
 नम्रभराम ३६०॥ सनवनसनिमै[संचारी]विसतरभयनऊदाहृतकीने जहाजितेपरमानरहित  
 येसोपुनियंघनमैलिखदीने ३६१॥ मालसहिमरुऊग्रतहिऔरजुगुपसहिआडि॥ कहितकिते  
 संभोगमैसवविभचारीमांडि॥ ३६२॥ सवहीसंचारिनलघोसवहीहैसंजोग॥ कहितमचारिज  
 ह्मिघनेकरिकरिनिजमतजोग॥ ३६३॥ विप्रलंभमैआरसगलानिम्रमसंका निरवेदहिजानो॥  
 निंद्राम्रपसमारऊलंठासुपतविवोधम्ररूपहिआनो॥ ३६४॥ जटताम्रऊनमादयेसंचारी  
 गनिराय॥ हास्परसहिम्रवहिल्यम्रम्रालसनिंद्रामाधि॥ ३६५॥ सुपतप्रवोधवधानियेऔरम्र  
 स्रयाहोय॥ म्ररुकरुगारसमैसुनोमासतहैकविलोय॥ ३६६॥ मोहदैन्यनिरवेदजाअमम्रपस  
 मारऊनमादविषाद॥ सुमिरतिम्रालसव्याधिकंपसरभंगधंभम्रसुमनजाद॥ ३६७॥ रौद्रऊग्राह  
 खेदम्रावेगरुसुमरतिम्रमर्षपुलकचपलपन॥ ऊग्रतारुसरभंगकंपहंयेसंचारीभाषतकविज  
 न॥ ३६८॥ वीरऊग्राहगर्वम्रावेगरुम्रमरवधतिमतिऔग्रयपुलककरि मयमैधंभखेदगद  
 गदतापुलकविवरनभावसंकालहि॥ ३६९॥ मोहदैन्यम्रावेगचपलताम्रपसमारम्ररुआस



प्रलयपुन॥ यौनमनश्चाये संचारी त्योंही श्रवणीमत्सरसहितन॥ ३७०॥ अपसमानमतिमोहश्रु  
 वैवरणरुखावेग॥ फेरसूनोकविनाजजे श्रुदभुतरसकेनेग॥ ३७१॥ धंमस्वेदगदगदताश्रु  
 रुविश्रमपुलकमएहीजानि यौनरसानुकूलसंचारी अपनीमति सौलीजैमानि॥ ३७२॥ घाई  
 हंविमचारिताकहललितयोंजानि यौनरसानुकूलसंचारी हाससिंगारहिसांतरतिकरुणाहा  
 स्प्रमानि॥ ३७३॥ नसबीरहिभेकरुणसिंगारहि यौनजुगुपसारहितमयानक॥ अशाहसविसम  
 यसवरसमहिरौद्रहासअशाहसयानक॥ ३७४॥ अथविभावनिरूपण॥ नसकेकारनहोहिजे  
 तेविभावपरिचानि॥ इकआलंवनहोतहैवियऊदीपनजानि॥ ३७५॥ उपजतजिंहिसालंवि  
 ससोआलंवनमानि॥ नसकोऊदीपितकरैसोऊदीपनजानि॥ ३७६॥ श्रंगारकोआलंवनवि  
 भाव॥ यथा सवैया॥ सवलोकनिप्रानहैप्यारोखरोतिहिप्रानहंकीप्रतिमरतिसेई॥ हेमसरो  
 जकलीसेजरोजरहीफलपुन्यलतायहकोई॥ भावभरेइननैननिकीअधिदेवतागूढवि  
 लोकनिगोई॥ रूपसुधारसकीलहरीलखीकुंजनिजातितियासमोई॥ ३७७॥ ऊदीपनवि  
 भावश्रंगारको षट्रितुसोभपुरुषकीमाला॥ मलंकारप्रियजनगुनसाला॥ श्रुसंगीतक



वितरससेवा॥ उपवनगवनकेलिवहुमेवा॥ ३७८॥ चंद्रकचंदनचंद्ररुचिइन्हिआदिवहुहोत ऊदीप  
 नसंगानरसजिनसंगहितऊदेता॥ ३७९ यथा॥ संधपालालवसनकरिपियापियप्रेमनाटनटि  
 कह॥ मंगलपाठभ्रमरगनगुंजितमौसनरुयनछाटठट्टेवेकह॥ तारापुहपुंजलहिवधेरत  
 मनमयअघटसुघटिकेकह॥ चंदपईठियरुचधारजिमिरंगप्रसंगप्रथमजटवेकह ३८०  
 हास्परसविभाव यथा॥ मलंकारविपरीतविक्रतसंगविक्रतभेषआचारअचार॥ इन्हि  
 आदिवहुविक्रतअरथकरिहसतजुहोयहास्पनिरधार॥ ३८१ यथा॥ घघरपौषकरतिकेय  
 रनिष्ठद्वंद्वकानादधुनावत॥ वारवारवहियाननचावतसीसहिपुनइकसारधुमावति॥  
 चरनकिंकनीजालवजावतचहुदिसचंचलचषनचलावत॥ देखिदेखिअपनीतनथाया  
 मायाशिरुकायाहिनचावत॥ ३८२॥ करुणारसकेविभाव यथा॥ इष्टविनाससापदुषबंध  
 नविसनबंधुवधदारिदजानि॥ इन्हिआदिवहुअरथविसेषनिहोतकरुणारससैमानि ३८३  
 यथा॥ देखिततुवसंगनिमतितीक्ष्णननागपासद्वंद्वनयेरे॥ हलतनचलतनचेतधरत  
 नहिअजहुनकठतकठिनअसमेरे रहियमंदिनैननिनहिअतरदेतथकोकहिवचनघने

आट

घा



च

२॥ देवतनहि मो मुषरुष सोयहजचितैवातलघनहमहेरे ॥ ३८४ ॥ रौद्ररसकेविभाव ॥ आयुधषटग  
 प्रहारपराजयविक्रान्तविदारनष्टेदभेदलहि ॥ सत्रुदरसतरजनरनसंभवसरथनिहोतदौद्ररसयो  
 कहि ॥ ३८५ ॥ यथा ॥ तिमरसमानस्यामडतिदरसावतिहैसदाईडुवनचक्रदीहडुषदाईहै ॥ नद्यु  
 वरकरकिरपानधारघोरनिसाप्रथमरहिरप्ररसंध्याश्चविश्राईहै ॥ फेरिनरनंगरोसभरेरिपुकुं  
 जरकेकुंभमुकताहलतरैयावरसाईहै ॥ क्लमहीसोकिक्तिमईपरनसुधाकरकीचंद्रिकाप्रकास  
 चहूंशोरदरसाईहै ॥ ३८६ ॥ वीररसकेविभाव ॥ कहिअशाहनिहचैरुविनयवलमोहिविषाद  
 विसमपनरहियै ॥ अैसेवहुविधिस्रथविसेसनिहोतवीररसनीकैलहियै ॥ ३८७ ॥ जुहुवीरकेवि  
 भाव यथा ॥ लंकाधिपसमरसंकिवीजिहिंभुजवीसरसदभुतवलभीने ॥ जिनभंजियभलजंभा  
 रिभरिवलसहितजयंतिजितलीने ॥ इहिविधिरनमंतकरतआलापहिकपिनदेघिसंभ्रमकीने  
 तिहिमुषतनचाहिवीररघुनायकमंदहसतअतरदीने ॥ ३८८ ॥ दानवीरकेविभाव यथा ॥ कैयु  
 कवपुकरिविनयवहतिकरजोनवायसीसगरिकेलि ॥ कैयुकवचनबिहरतहियेकाहिकरत  
 मरिसंभ्रमकीकेलि ॥ श्रीजयसिंहमपटुमश्कलधिजाचकसवकारिजस्रवहेलि ॥ पुलकनिक



रिपल्लवितगाचरीकरतविपुलपूजासुखवेलि ३८६॥ दयावीरकेविभाव यथा॥ मेरीमकतिकरत  
 जेप्रानीश्रवनकीरतनवंदनवाये॥ तेनिसमैकिंहिभांतिदेखिवीवाढतजहांघोरसंधियाये॥ इहिहे  
 तनवदीपनिदीपतदीपसिखादीपतऊजियाये॥ परमकौसतभरतनप्रवीनमुरारिकहासपने  
 ऊरधारे॥ ३८७॥ भयानककेविभाव॥ विकृतसत्वदरसनरुविकृतरकरनवनविजनसदन  
 गमनहिलहि॥ गुरन्टपकेसपराधादिकतेकतिमहोतभयानकरसकहि॥ ३८८॥ यथा॥ क  
 ररीसीभांतिऊदैहोतजिंहिकांतिअैसीजटाकीपातिघनसंघटनढतहै॥ दपटिगपटिकेगिराई  
 तटितानिजोतेजगमगजगकेमहीधरमढतहै॥ कंठघोरघोषदरकतिभविबरसरकतदिज  
 देवदीहससिखनढतहै॥ तिनकैचढतचितमानंदवढतअैसेअंभहिविदारिनरकेहरीकढतहै॥  
 ३८९॥ वीभत्सकेविभाव॥ बहुअनिष्टकेदरसगंधरसपरसदोषऊदवेगहिकारन॥ इनहिआदि  
 अमनोहरअरअनिरसवीभत्सलहतनिरधारन॥ ३९०॥ यथा॥ जोधनकेअधरअसोककेकुसमद्र  
 गपुंडरीकदंतकुंतकोरिकडहडहे॥ पाइपानिआननकरेजाअरुविंदनसोंडापिपुहुपुंजलीहिगाव  
 तवंहवहे॥ अंतनकेपगावाललोहभरीगगागीनीमिल्लीअपरैनाअंगनंगसोंगहगहे प्रेतनके



वटकविकटवहुवागेवनेआगेत्रिपुरानिजकेनाचतलहलहे ३८४॥ अदभुतरसकोविभाव॥ वाक्यसिलप  
 शरुकरमरूपकछुजोअतिचमतकारकेकारन॥ मायाइंद्रजालदैआदिजुतिनतेअदभुतरसनियधारन  
 ३८५यथा॥ अतिउदामऊ ननिपीपीमदनमत्तअरिभटदलडारनि॥ परमप्रभावमवननरह  
 रिसुखकारनहोहुसकलजगतारन॥ जिहिप्रतापऊदभटअतिविकटजटाकोटिनफाटेघनभा  
 रन॥ बाहिरकटीसंत्रमनमोहेजोहेतठतकपटकोधारन ३८६ इंद्रजालयथा॥ विपुलव्योम  
 संगनमधिसुंदरसंध्यारागवसनविसतरियो॥ सघनतिमिरभरकीहिडारिकेत्रिभुवन  
 न नमोहनीधरियो॥ रतारारूपसीपमुकताहलऊगलवदनतेवाहरिकरियो॥ पंचासग  
 प्रवीनवाजीगरसगकुलधुनिगीनोगाकरियो॥ ३८७ अथअनुभावनिरूपण॥ अंतरआईमा  
 वरसगपापकविनानग्नान॥ ताहिग्नानगोचरकरेतेअनुभावप्रमान॥ ३८८॥ विसयहोतऊ  
 दीपनसुकरनहोतअनुभाव तेपुनचारप्रकारकेकायकमानसभाव॥ ३८९॥ शैशिकसात्व  
 जानियेकायकमुजशेषादि॥ मानसहरसादिककहोशैशिकलहोसवादि ४००॥ नाटनच  
 चतुरमुजतादिकौनटजुजितावैआय॥ सात्वकपुलकादिककहोसवैकविनकेराय॥ ४०१॥



तहाश्रंगारकेस्रनुभाव॥आनननयनप्रसादविलोकनिमुसकानिमधुरवचनधृतिमोद॥  
 श्रंगविकारविविधिकरिकीजतिरसश्रंगारश्रमिनयचह्मकोद॥ ४०२ यथा॥ मुकताहलहार  
 अरोजनिऊपरकाननकंचनहीरतरोना॥ चंपकमालगरैरतिसंगरदूतहैंइहिभीतधरौ  
 ना॥ नंदकुमानपीयानिरघैतुहिएकहीभयनसंभ्रममोना॥ प्रातसमीरस्रधीरसरोरदु  
 द्रोहीकरात्तछटामईटोना॥ ४०३॥ हास्परसकेस्रनुभाव॥ विल्लतमेघसाचारवचनसरुश्रंग  
 विकारविविधिविधिजाने॥ हास्परसहिस्रनुभावहैंहितेश्रमिनयग्रंथनमांऊवधाने॥ ४०४  
 यथा॥ भाजनकरिकपालमंडलतहमधुरमयंककलाधारिवाती॥ फनपतिफारफनाम  
 नतापरसुभगसंजोयसियासरसाती॥ सांऊसमेंसिसुदीपजगावतसैलराजतनयां  
 दरसाती॥ कछइककुटलकटात्तभंगजुतडीठकरीतिहितनमुसकाती॥ ४०५ करुणार  
 सकेस्रनुभाव॥ सासअसासरुदिनमोहागमबहुविलापमुघसोषप्रलापन॥ वैवरणादि  
 विविधिस्रनुभावनिकरुणजितावडुकारिकेयापन॥ ४०६ यथा॥ त्रिदिवहजाततातमोरेक  
 विबुधमनिलयनसोकवसहियरो॥ स्रजहुंनदीनवाकवानीकेकंकनसिथलहोततननियरो



अजहुंनसरसहोतअरजनपरचंदनरसकेसरिसंगपियरो अजहुंलगधिरहोतनअंजननै  
 ननिनैननिनिकरतनीरअडिरो॥ ४०७ रौद्ररसकेअनुभाव॥ बहुविधिस्रजप्रहारनिशंकुल  
 सिरकंपनिकरपीसनिहोय॥ योरअनेकअरअजेतिनसोंअभिनयरौद्ररसहिकविलोप  
 ४०८ यथा॥ संगरभीमकांधिमगुटीकहुकरिघनसदअधररसचव्वि॥ व्योममाजव  
 गरायवारननिविधसमानरहेगुनगव्वि॥ तिनइनकेजुकपोलतलनतेअमरावलि  
 ऊडियअतिभव्वि॥ होयकलंकरेखनहिसोईरहियअमियकरिविवहिदव्वि॥ ४०९ वीरर  
 सकेअनुभाव॥ अतिभवावअष्टाहपराक्रमसूरवीरताऊकृतवोल॥ विविधिविनयदा  
 नादिकसोंरसवीरजिताबहुकरतकलोल॥ ४१० यथाऊकृतवीर॥ अग्रइंद्रजितसाइस  
 समग्रैसमरव्याघारकलाबहुजान॥ भासमानतिहपासदसाननसजुदमनधारतधनु  
 वान॥ रहिविधिकरतलोकसबढाहरजाहरजगतकुलाहलआन॥ संध्यासमरतरा  
 मचंद्रकैडूटियनहिकुंभकपवमान॥ ४११ ॥ दानवीरकोअनुभावयथा॥ ऊनअदासजिन  
 होहुमोहुतजिघरजिनजाहुदेखिअनुभाजन॥ जाचतहोंपुनतुमहियहोसवधमियेंइकधि



दीननिवाजन॥ दासहिमुहिजानततौसभहीवसुमतिलेहसंगहीनाजन गुरुदक्षिणाकनक  
 हीहैतौकरतधनदतेवहेउपाजन॥ ४१२ दयावीरकोअनुभाव यथा॥ धायरहीधनघोर  
 संघेरीमैदामिनीजोतउरावतडुंभत॥ मूसरधारपरैतहव्याकुलगाव्रसवधनिकेकु  
 लनांभत॥ दीनदयावसनंदकुमारगिरैजिनसैलयहैभयलाभत॥ वैनछुटीकरतेन  
 नधरैनचिस्पोतनतेपियरोपटघांभत॥ ४१३ भयानककोअनुभाव॥ करपगङ्गाम  
 सतकसवसंगनिकंपपुलकवैवर्नभंगसर॥ ऊठताकवाकंठसोषनयेगपापकवहेभि  
 यानकरसधर॥ ४१४ ॥ यथा॥ आधकचवायेघासग्रासतिवधेरेमुखफैलेफैनपटलनिले  
 तफुनकैयाहै व्याकुलसकाकुकंठघोरधनधरघोषसाधैकढीसावैविघतेजतापतैया  
 है॥ सकुचतकायडगमगतसकंपपायसासनसोहलतअधरहरवैयाहै विद्युरेअया  
 सनकेआननकुहरमधिइहिविधिभीतरहीकानूजकीगैयाहै ४१५॥ वीभतसकेअनुभाव  
 मुखद्रगधमनलोचननासामुखढांपनिसभसंगसंकोरन॥ अवकतचनननिपातआदि  
 येवीभत्सानुभावचहुंसोरन॥ ४१६॥ यथा॥ विकटकपटहरिवदनकुहरिमधिदिन  
 रिदेखिइदिराकांपी॥ हनेदनुजतनुपललकवलकेअमकरमुखहिअंसकनिढांपी

कटकैहै



४१७॥ अदभुतनसकेअनुभाव॥ गदगदवचनकेपसरभंगनिअनिमिषदेखनिसाधु  
 वाडुकरि परसगहिनऊल्लासपुलकअरुहाहाकारनिअदभुतनसभरि॥ ४१८॥  
 बाहुदंडखंडतिअरिमंडलपंडववलहिचकितसेजोये अजहलंगदेवनिकेनैननि  
 निमवनलगतलघतरसभोये॥ ४१९॥ अथआठासात्वकभाव॥ जियतसनीरस  
 त्वतिहिधरमजुसात्वकभावकाहितकवलोक॥ हरखरागभयदुषविषादरिसवि  
 समैकृतधंभसुगतिरोक॥ ४२०॥ मनसंतापरिसहरखलाजभयअमपीठाआ  
 घातअरुअनि॥ वपुमैहोयवारकोऊदगमसोईसात्वकभावसेदभनि ४२१॥ सी  
 तअलिंगनहरखक्कोधभयइनविकारकरोमअमंग॥ सोरुमंचभयहरखक्कोध  
 मदसरखभावपलटनिसरभंग॥ ४२२॥ हरखभीतआलिंगनतेवपुचलनिभा  
 भाववेपथपहिचानो अमआतापसीतभयक्कोधरुमोहजपुनवैवर्नवसानो  
 ४२३॥ हरखअमरखधूमभयजंभासोकभीतिअनमिषअवलोकानि अश्रविका  
 रजनैनसलिलअरुप्रलैसतनकीचेष्टारोकानि ४२४॥ तत्रसंभोयथा॥ पी  
 ननितंवनिषातरीगातनिवारकेभारहिढोवतिसी॥ निजभौनहिकैसेगहेअति



भारीअरौजनि के भरोसावतिसी॥ पहुंचीचलिनीठिकदंवकेकुंजवसीठकोआननजोव  
 तिसी॥ मनमोहनिसोंकरिमोहयकीतहआपनेधंभहिगोवतिसी॥ ४२५ खेदो यथा॥  
 तुवअरजनिअपरअलीअमजलविंडुललाम कुसमनिकीवरधनिमनोकारीहस्तध  
 सोंकाम॥ ४२६ रोमांच यथा एकहीसाथवकलमुकलनतैरोसभरैकिजनिजटोलनि  
 वढिवढिसनगुंजतिअलिचढिचढिनवनवनूतनमंजरीदोलनि॥ सोधुनिसुनि  
 सनिकेलकुंजमधवसतकानूवनतजितजिडोलनि कुलकिकुलकितनमुलकि  
 मुलकिमुघपुलकिपुलकिकतअठतकोपोलनि॥ ४२७॥ खरभंगयथा प्रगटहोयख  
 रभंगजो कहेकछूरिसआन रहितराधिकांमोनहीपियसमीपयहजान ४२८ वेप  
 ययथा॥ कतचुनियतचंपककुसमअरजनिमंडनकाज॥ लग्योकंपकरमेरिये  
 सनतसोंतिमहिआज ४२९ वेपययथा॥ मुखमुखसोंमिलिकैरह्योलालसिखाधुनिलेत  
 दिनकरकरनिकरनिदवेहिमकरकीडुतिदेत॥ ४३०॥ अश्रयथा॥ भोपियनियरोअवनिय  
 हिवितदुखतंतजजाहु परतअरहिद्रगवारकनयहैकरनकीचाह॥ ४३१॥ प्रलययथा॥

कठिकठि



शानंदसदनमैसोवदननवायोनहीसीसनधुनायोधरैमोतीमनिदावरी जाक्जके  
 नंगभक्त्योमंगनहिफेसोढीलोघंघटवसननसवान्योतिहिठावरी वोलैननिषे  
 धवैनकीनेनमरुननैनप्यारीकरिप्रीतिलतापलकनिघावरी॥कैलिकला  
 कातरहियोहीनंदनंदनकेशाननसरोजवैपरतभरिभावरी ४३२॥त्रिंभादूनव  
 मसात्वकभावहैसोयथा॥राधिकमनमैमानगरिवैठीजायस्कंत॥लखिजंभात  
 करसांगुरनिधुनिकीबीरसिकंत ४३३॥इतिविधिरसधुनिसकलयहकस्योम  
 नेकप्रकार॥भावादिकधुनिभेदभवकरियेकरविसतार॥अथनृपकोश्राशीर  
 वाद॥कवित्तासुलफकपोलपरजुलफधुंधरवानीकुलहीसूयनगगारंगेका  
 समीरके॥कुंडलश्रवनलोलवाजवंदवाहनिमैअवयंनवहारहेममनिहीरके॥प  
 नहीमनपपगनपरनरागतकरधरैयासरंगधनहीमोदद्वैतीरके॥जयसिंहभूपतिकेप  
 नकेपलैयाहौवलैयालैहोंचास्योभेयाधैयानधुवीरके॥ ४३४॥इतिश्रीमतिमहाना  
 जाधिराजश्रीजयसिंहभूपालवचनाग्यापतिकविकुलकोविदचूडामणिश्रीकृ



स्वकविकलानिधिविनचिते मलंकारकलानिधौ न स धुनि निरूपणं नाम पंचमी कला  
 पा॥ अथ भावधुनि निरूपणं ॥ दोहा ॥ नति देवादि कविष्य मरु संचारी जु प्रधान ॥ ताहि मा  
 वधुनि वाहित है कोविद स कवि सज्जन ४३५ देवता विषै नति यथा जहा म्माय तु वपद विधे  
 दस कोरि सारग सखन न कविना थल शिव तु वपाय पाय सख म्माय जु तौ न हि धर कनर  
 कहुं मंगल लग्यो ईस तु व कंठ कोण मधिकाल कूटहुं मोह म्मत भल ॥ लियो म्मत हं  
 जो तु व वपु ते जु दो म्माय तौ मुहि नरु चै पल ४३६ मुन विषै रति यथा तत छिन पात कपट लह  
 नन को सम न थ है न हान स भदार ॥ परत पुन्य पुंज सौ पावत पन मपि य स पाव ना सार ॥  
 मर स पर स तु व दन स सर स सख वन सन को पाव स घन भार तिहुं काल तन धार न की गु  
 न महि मा प्रगट करत निन धार ४३७ श्री कृष्ण विषै रति यथा ॥ कवहुं छिजत जात माखन का  
 को सात टेढी भौह नि मरु न नैन मन के लुट कवा ॥ कवहुं घुघरु काटि न क गुन कवो लै डो  
 लत घुटन वा निवल सो जु टन वा ॥ कवहुं कोलत तात तोतने वै न निभुकि कवहुं सैं चत मल  
 कै कर छुटन वा ॥ वालि के लि करत भुवाल क विलाल घर की जीये मने द कोट नंद के छे  
 टन वा ॥ ४३८ यथा वा ॥ नी की व्रज ललना गुला वैरंग पलना मै सो है कोरि चंद सम सी स



मानपधिया ॥ राजैरंगकली सीजकली मलकनि मंगकना कीजकली तामैपी नोरंगनधि  
 यां कचिरचधौढा भालमंजनद्रगनिअरहेममनिहीरहारमिलीवाघनधियां ताततातवै  
 नतुतरातजातमातकरयातजातमासनसिनातजातमधियां ४३८ यथावा ॥ पालनेमैकुल  
 रायकेमोदभरीहुलनायकेलेतिवलेयां मंचलउटविरंचिसोमांगजियोमेरेगोवध  
 रानिपलेया श्रीजयसिंहकोकामदखेलेजसोमतिमंकमैकानललेया ॥ ४४० अथ  
 साभासभावाभासनिरूपणे ॥ असमरुभावविलोकियतमनुचितजहाप्रवित्त ॥ तहरसभावाभा  
 सकरिभासतसकवसचित्त ॥ ४४१ नसाभासयथा ॥ कहिकहिकामिनिकिहिनरहिप्रसंसहि  
 जिहिविनरतिछिनएकनरी किनरनमुखमुखनिजप्राणहनेजिहिहेरतफिरतअमंगभरी  
 कहिकोजनम्योसुमलगनचंदमुखिजिहिपरिरंभनकरतघरी कहिसफलतियहकिह  
 कीतपसंपतमदननगरजिहिध्यानघरी ४४२ भावाभासयथा सरदसमयनाकासासिव  
 दनीममलकमलदलचपललोचनी ॥ जोवरजोवनअमगतंरंगतरंगतकिभ्रमजुतरु  
 चिरुचिरुचनी तौकाकरोंधरोतहांकिहिविधिमधुरमिंदतामोहिसोचनी सोचित  
 नीजहिकिहिरपायकरिभैईसुनिसदिनमोहिसोचनी ॥ ४४३ ॥ अथभावसांतसादिल



भावप्रसमममरुसंधिजहअदयसवलताहोय तहतेईधनिवननिकोभावतिहैकविलोय  
 ४४४ तहाभावसांतियथा॥तिहितरुनीकेनीकेसंगरागरंगरंगेकुचनकीप्रगटही  
 यरतनिसानीहै सैसाअरआपनोसचरनप्रनाममिसकैसैकैशिपायेलेतगति  
 पहिचानीहै यहअनिकसोसनिकहांकहांकहिमैहूंमेटनकोसंकांभुजासंकांभुजा  
 है॥तैहीपरिभनप्रमेदभरिसंगसंगपहिलौप्रसंगभोरीभामिनिभुलानीहै ४४५  
 भावोदययथा॥दंपतएकहीसेजलसैतहसैतिकोनाअसन्पोललनानै रोससोफे  
 रिनहीमुषताकहकंतकितीमनुहारनिठानै तअसवहेलितकीनोअटाकदैनाय  
 रसोसिनमौनहिआनै सोएनहोहिकहूंवलियोंकहियीवहिफेरिलखेरिसभानै॥  
 ४४६ भावसंधियथा इतछाटेमनभावतेअतगुरजनसरकैन दैघोरेअसवारज्योभ  
 भयेवालकेनै॥ ४४७ भावसवलतायथा प्रगटहोंजहिंयैढीठसंगलागेद्वगदे  
 खिहोंगीकहूंआडीलाजकुलकानिहै वहिरूपमाधुरीकोसारयहमेरोनेहकोऊ  
 जिनजानोअरुजानिहैतौजानिहै धिकतनजोवनकुटंवविनदेवेलालकरिहौज  
 तनजोपैमोहिमनिआनिहै॥हायमुनलीतौधरीषाधंतीषेदपारैडारैधारैपानथी

चिन्ह



नजननह्यो कंठ आनि है ४४८ दाहना ॥ होत मुख हन सत हां इनहि मुख ता जान सेवक ना  
 ज विवाह मधि जै से होत प्रधान ॥ ४४९ ॥ अथ लक्ष्म मधनि निरूप्यते ॥ ज्यो गिब मै श्व सव  
 की मां की बहु विधि होत त्यों जहल सिय तु व्यंग क्त म सो धुनि त्रिविधि ऊ दोत ४५० ॥ सव  
 क्तिसंभव बहु रिश्रय सक्ति संभत ॥ अमै सक्ति संभत पुनि तीन भेद अदभत ४५१ ॥ अ  
 लंकार अरु वस्तु जह व्यंग सवद सो होइ ॥ सव सक्ति संभव सधुनि भेद वसाने दोइ  
 ४५२ ॥ सवद ते अलंकार धुनि ॥ यथा ॥ देख्यो एक आस ही मैल सँ अदय जा को पदमिन ?  
 चक्रन सो सदा वंधुता करै ॥ मंडल अखंड अरु अधिक अनंदकारी मित्र आगे फनन प्र  
 कास माधुरी भरै ॥ नाथा परि नं मन सो कवहं नर ह्यो लह्यो नाते नाते चरन नि संतत प्र  
 भाधरै ॥ वंदावन चंदक चिरूप सधा फनन सो प्रेम मत वारेन कीजिय जट ता हरै ४५३  
 ॥ यथा वा ॥ मोर अठी पलकै न हिलागत पागत प्रेम सलखे न लेख्यो कां पि अठै पु  
 लकै भरि संग निसार सधा रस पान विसेख्यो मूढ भई गुन ग्यान समै वितयो चिततै  
 अचितै यह पेख्यो ॥ रंग भरी सभरै निकहं इन नैन निमाली कलानिधि देख्यो ४५४  
 ॥ यथा वा ॥ वात नसन तत न लागत अनत जु न देखि अत लोचन ही कै से कै पती जि छै



संगनत्रिभंगनकीदिशिगतिमानदहैसोतिनसमानहममैसेसखदीजियै व्रजमैविदितज  
 संधाईकेसफतएहीजमुनाकेसावतमगजुनोकलीजियै फननहैसौगुनकहालगवसानि  
 यतजानियतजियमैसकलकहाकीजीयै॥४५५॥ दोहरा प्रथमकवितवितरेकवियऊमाती  
 जैमाहि व्याजसूतिधुनिसेललितकहितसवसेनाहि ४५६॥ जदपिसलंकारिजकह्यो  
 सलंकारधुनिनाहि तौहंवा<sup>स</sup>मनश्चमनज्योसलंकारधुनिमाहि॥४५७॥ सलंकारस  
 वतेवसतुधनियथा॥ सौनभसानसदामकरंदपरागधरैरुचिरूपकीसाला सोहतिसे  
 भाकैसंपतिभारमहासकमारसरंगनसाला॥ भावगकरभरीगुनगुंफितमादकमो  
 दकमाधुनीसाला लालकेलालचहैचितमैनितभषितकंठतुंहीवनमाला ४५८ य  
 थावा॥ व्रजभवनसायेलवौभवनभषितसंग॥ रंगभरीरैनीयहैजिनतंहोयविरं  
 ग ४५९॥ मनुकूलनस्वाधीनपतिकादिप्रथमध्वनिआश॥ दूजैरतिरसरंगिवौ ध्वनिप  
 रगटदरसाइ॥ यथावा॥ पंथियस्थितरहैनशहिंपथरचलकेग्राम॥ अन्रतऊठेपयौध  
 रनिलखिलीजैविसराम॥ ४६०॥ हौतुमजौउभेगधमतौह्यारहोवनाय यहैवसध्वनि  
 यतईहांसलंकारसनिआय ४६१॥ अथअरधसक्तिसंभवोधुनिरनिरूपयतेदोहा



मरयसक्तिसंभवसुधुनिमरयहिव्यंजकपा३॥ मरयसुतीनप्रकारकोवननतहैं कविरा  
 य ४६३॥ श्रुतः संभवी एकमरुकविप्रौढोक्तिजात कविनिवद्धप्रौढोक्तिजोतातेजात  
 दिखात ४६४॥ वसतुमलं कृतिभेदकरितीनोद्वैविधिजान तातेकहितश्चमेदयहव्यंजक  
 मरयवसान ४६५॥ छंदमांतकेमरयमेवसुमलं कृतव्यंगि तातेवानहिभेदकरिसुधु  
 सक्तिभवरंगि॥ ४६६॥ श्रुतः संभवी वसुसो वसुव्यंगयथा॥ सुनैपुननिप्रवेसकरि  
 विजनरिंदकेनंद॥ आजगेहपतिदूरवनवहुगोधनसुखकंद॥ ४६७॥ सवैया॥ आवतसां  
 मनवेरलगावतजातसवेरसवेरलगावैं॥ मोनरहैगुनलोगनमोहनसुनैमैंगोह  
 नकौनछुडावैं॥ फरनप्रेमपयसपयो<sup>नि</sup>धिसाचुकेसंगीसुभायसुहावैं प्रीतमकीयर  
 रीतिसुनैव्रजकीवनितामनमोदवढावैं ४६८॥ यथावा॥ मलससिनोमनिधूतसुतार  
 नवहुतपुत्तधनसंपतिपर॥ पियपरसंसवचनोमलिमुखतियदगहरखहुलास  
 हिमर॥ ४६९॥ स्वयंदूतताव्यंगमरुयहपियहमरैजोग॥ इनदुहंमरयनिधुनिलयो  
 जेकविसद्दयलोग ४७०॥ वसुतेमलंकारधुर्नियथा॥ धनिआइतुहंजुमरेपिय  
 संगममनंदसिंधुकैसोतसनी मुखवालतिचंचलरीचहंवैननिसैननिदेतिनिसं



कवनी॥पियधारतिनीबियकेफंदनाकरकैधोफैवैसंगियाकीतनी हमआपुनीयेतवसौ  
हनसातजुहोकछुसुधिहंसजनी ४७१॥तंस्रधन्यहैंधन्ययहव्यतिनेकालंकार ईहांवसू  
तेव्यंगहैजानोसकवऊदार ४७२॥सलंकारतेवसू यथा॥प्रातविकासलहैनवनीनज  
कोनकीडुतिलहैहै आनंदकैमकरंदसनैरुचिरूपपरागनिपूनरहैहै माधुरीसार  
पधारधरेरतिनायकसायकचेहीकहैहै नंदकुमाररसीकेविलोचनजानतिहैउ  
रतेरेवनेहै ४७३॥कामवानरूपककीयेमानधीनहरदाहि सकलप्रयोजनव्यंगहै  
वसूनीततैसादि॥ ४७४ यथावा॥गुरुगंजनतैडरतनहिघंजननैनीनारि॥पांयनजा  
वकदैचलील्पावनजमुनावारि ४७५॥ईहांहेतुसलंकारतेहैंगाढेसुनुराग ताते  
काहूवदतनहियहिधुनिदेतसुहार ४७६ सलंकारतेसलंकारव्यंगयथा इककुंज  
रइहिंकुंजमैसंजनपुंजसमान कंजमालदलभंजिवीकूकतकरतपियान ४७७॥कल  
नकुंजनहैसरेइहीसपनूतमल॥पदमिनिकीअपमातियहव्यंगलखोसुनुकूल ४७८  
एवांयोसूतःसंभवीस्यर्थहै कविप्रौढोक्तिनिरमितवसूतेवसूव्यंग यथा॥चारक  
पलासकेसुनपसिखरनिपरआनिमुखवैननीकीताननिकोवानिकै रामचंद्रना

द्विरे

आदि



वरेसजससनसिधवधगावतिमुदितिकोंतिगसोसानिकै सानिसनितेइदिगवार  
नविसालसनमंजुलमणालजालपायेजियजानिकै कैरीकैरीसाधैंकरिकाननके  
सासपासफेरिकेरिसंडनिडुलावैमोहमानिकै॥४७८॥ ईहावस्तुकरिजिनहुकेष्यर्थ  
ग्यानकछुनाहि चमत्कारकरितिनुहुकोठवजसयहधुनिमाहि॥ ४८०॥ अथमलंकारतेव  
स्तुधनि॥ यथा॥ आठहंकुभकामिनीनकेकुचकलसचंदनसनसचंदनससंगनाग  
है॥ आठहंदिगीसनकेकंठअरसीसमुकताहलचंवेलीचारुचौंसरतुलंगहै आठ  
हुंअडिग्गदिग्गजनकेविहारहेतषीरनिधिनीलहिनीनकोस्तहागहै दसरथनंदन  
धुवीनकोसजसहैसलालकविभारतीकेभालभस्मोभालंगहै॥ ४८१॥ ह्यारूपकतै  
जामियौवस्तुव्यंग्यहहोत॥ सीतलताकसुगंधताऊजलतारुऊदोत ४८२ वस्तुतै  
मलंकारयथा॥ पानावारपानजातरूपेकेपहानपरइंद्रकैअगारदेवनारिनिवषा  
न्योहै॥ तैहीछिनथलकतस्थितिपरषीरनिधिसंवरअनपजोअनवरवितान्योहै॥  
दसरथनंदमहाभागवलीनामचंद्रावरैसजसनसलोकवसयान्योहै कहंजान्यो  
हीरकरिहारकरिजान्योकाहकाहजान्योहरकाहहनाकरिजान्योहै ४८३ मलंकार

माला



तैश्चलंकार यथा॥ वेदश्चम्पासकरतजटमतिजहिविषयविरतवडैरिहसतसी सनसल  
 धासरवरिकविवरमुखकमलचासनहिपायवसतसी दनसावतिसवभुवनमंडिलहि  
 औरसौजुचहं औरलसतसी सखश्चनेकमुखप्रगटवपुषसोजयतिगिरानिसादि  
 नहुलसतसी॥ ४८४॥ प्रथमवस्तुकरिव्यंगहैअल्लेखालंकार वियजल्पेष्टाव्यंगहै  
 विधिव्यतिरेकप्रकार॥ ४८५॥ यथावा॥ गजवननपजयसाहकेलियदिगपजत्रयप  
 त्र॥ भोरगौरचलतचौरसिरयैरंस्तनससिधज॥ ४८६॥ कवितकेष्वर्थदोहामैहै॥  
 दानजलवाढेठाढेगाढेगरजतजिनैदिग्गजिदिसानिमदमुक्खितकपोलहैं अकृत  
 ऊदंडसंडादंडनिप्रचंडस्वरिमंडलकेयंडनमैमंडतकलोलहैं स्तरससिधत्रसेनध  
 त्रनिविनाजैसीसचहं औरचौरचलैचंचरीकलोलहै औरसेनघुवीरभपनाजैंदखा  
 नदारवाननहजारहीनहाननश्चमोलहैं॥ ४८७॥ यथावा॥ रूपेकेपहारपरहीनबके  
 धौनहरस्तथासंस्तधारिकीनीचांदनीफानसहै बैठेतरांराजैश्चतिपानवतीपानपति  
 गंगाकीतरंगसीससोहतिसनसहै॥ तिनमैलसतिश्चकलंककलाचंदकीसवनसत  
 जामधिपियषधनसहै औरसेसमैरघुवीरगावततिहारेजसताहूतेतिहारेश्चतिसं



दरदरसहै ४८८॥ छत्रचौरअपमाधुनितसौरगजनिव्यतिरेक॥ विद्यैसजसव्यतिरेक  
 धुनिसानलघोसविवेक॥ ४८९॥ येचारेकविप्रौढोक्तिसिद्धमर्थहै॥ श्रवकविनिवद्ध  
 वक्ताकीप्रौढोक्तिमैवस्ततैवस्तधुनियथा॥ चंदनगंधकैलालचजेमलयाचलदी  
 हदरीनमैहारे॥ फेरितहांरतिनंगप्रसंगभुजंगनिकैवहुपानसिंघानै इहीविधिछी  
 नहैकाकीवचेसुवडेवनवीथिनवीचविहारे तेईवसंतकेपौनस्रवैविनहीजनसास  
 नसोवलघारे॥ ४९० सोरठा॥ मलयानलचहंशोरकहाकहानहिकरतहै इनसास  
 नकेजोरधुनितवस्तुसोवस्तुयह॥ ४९१॥ वस्तुतैमलंकारधुनियथा॥ बहुदूतिनकेमधु  
 नेहितवैननिनैकुनमालीचलायभयो तिहिंमोचितकेमितधीनजनैनहिजानति कौनसुभा  
 वलयो॥ अहिवापुनेमानहिदैकेविसासहिंयेनिजपासहीवासदयो पियनंदकुमारवि  
 लोकनकैधनमानहतेपहलैसगयो ४९२॥ घंदा॥ ईहांवस्तुकारिविनामनायेमनी  
 व्यंगयहविभावनाकहि कैअप्रेथापियदरसनकोनहिसहागवलधीनसकैसहि  
 ४९३॥ मलंकारसोवस्तुयथा तुवमालेनखनदधतनिमोअधिसनकेभाग मरुनड  
 कूलप्रसाददिययहनरोसकोनाग॥ ४९४ घंदा॥ क्योंद्रगकुपितकरैइहिअंतरमले



कारतैवस्तव्यंगधुनि॥ आलेनयश्चतकहादुरैयतइनप्रसादमैलहोआजुसुनि॥ ४८४  
 अलंकारसौअलंकारधुनि॥ यथा॥ मगलोचनीनारिहजारनहीजहंतावनिभावनिभरिभ  
 नी॥ तिहिंश्रीनंदलालपियाहिंयरावरैवातिनहोतप्रवेसघरी इतिहेतयरेरतिनायक  
 सायकभालिनकेसंगशोडिधरी॥ निसवासरऔरनकाजकधृतनतैतनुआपनेसंग  
 करी॥ ४८५॥ ईहांविसेयोक्तिधुनितकरतहेतुअलंकार॥ तनुतेतउहंतनुकीयेमाव  
 तिनहीयेमंगार॥ ४८६॥ सव्यर्थइनअमैइकीसक्तिसौजुसंभत॥ सौधुनिआकप्रका  
 रकीजानिलेहुअदभत॥ ४८७॥ यथा॥ सदावलाकामददरसरसरूपसंगसकलसं  
 तापहरजाकीछांहजीजियै॥ जीवनकेदानकोअदारजगदेवियतकाननकोसखद  
 मधुरधुनिकीजीयै॥ लोकवरहीकोकुलकावतरचातकीनहरखकोआगमप्रगट  
 लखिलीजियै॥ चंचलाविलासभरेपरतनदीनआसआलीसामघनतननैकुद्रगदीजि  
 यै ४८८॥ दोहा॥ ऐसेइहिंधुनिकेसकलभेदअछानहिहोत॥ अनतरसादिकसवनमिलिऐकैभे  
 दअदोत॥ ४८९॥ नवरसतहांश्रंगारसरसहिद्वैभेदवद्यानहु॥ संभोगकविप्रलंभप्रथमअ  
 नगिनतप्रमानहु होतपरसपरदरसपरसचुवनकुसमोचय जलकेलीरितुकेलिअ



सतरवकोचंद्रोदय॥ अभिलाषयादिविप्रलम्भपुनर्भेदवहुतगंथनिकहे॥ तेपुनिविभावस्र  
 नुभावव्यभिचारिनिर्माणवहुतागहे॥ ५००॥ तहपुननायकनायकाऊत्तमादिवहुतीति॥  
 तहउदेसकालरुदसाभेदवहुतपरतीति॥ ५०१॥ रहिविधि एकसंगारहीअनतकहापुनि  
 और असंलक्ष्यमधरमलैरककहिकविसिन्मौर॥ ५०२॥ भेदस्रठारहिवक्थमैनी  
 केहीदरसात॥ एकरहितपुनिसकलएपदहंमंगलयात ५०३॥ पदहिव्यंगधुनिजोग  
 सौवाक्यहिव्यंगप्रसंग॥ एकनासकाभरनज्योसोहतसवतियसंग॥ ५०४॥ पदव्यंग  
 धुनिकेऊदाहर्न॥ सेवकसेवकजासुहैंकमलाकमलायाहि॥ अवतारस्रअवतारहीक्षि  
 चै याक्रियामजिताहि॥ ५०५॥ निहकपटनिकटवंतीअथैजन्मभावकरिरहितपुनि॥ निरु  
 पाधिरूपअर्थीतरनिदूजेपदसंस्कृतमितसुनि॥ ५०६॥ याहीपदप्रकास्पअर्थीतरसंस्कृति  
 तधुनिकेऊदाहर्न यथावा॥ तरवेलिनिक्केफलसौफलहीनसिताससिताकसुधासु  
 धाई॥ दाससदासईसौमधुसौमधुईसुईखलखीमधुनाई॥ सीतलताअनसौनभसंजुत  
 माधुनीसागरनीकीलुनाई॥ राजतिवामगलोचनीकेअधरामृतकीनकहंसमताई॥  
 ५०७ यथावा॥ न्यारोहंजोरहैप्रेमसौ एकसौसोईतौचितयौचितकहावै हैसिगरीहीदसांति



नयौ नयै सोई तौ प्रेम यो प्रेम सहै वै ॥ जौ नंदन नंदन नैन सनंदन सोई तौ जौवन जौवन भावै जौ  
 न सहै उन को विरहान ल सोई तौ याव स याव ल यावै ५०८ ॥ अतं ततिर स ज्ञात वाच्य धनि  
 पद प्रकास्य यथा बल व्यवहार जद पि सति दा कन दर सत जगत तद पि न रधीन नि हिय वय  
 स्य बहु मत व्यवसा स्तु ये न लहत विमोह क हं भ रि भी न नि ५०९ ॥ ह्यो अचेत व्यवसाय कौ  
 न हि विमोह क हं होय ॥ तातै गपि वो ल ध्य सम कार ज पट धु नि सोय ॥ ५१० ॥ अलक्ष्म वि  
 प्रलंभ श्रंगार मै पद प्रकास्य धनियथा ॥ वहु रीति मनोहर वै न नि की वहु नै न नि की गति सै  
 न मरी वाहरंग म न्यो परि रं मन संग नि वे संग वे पुल कै प सरी वर माधुरी सार म  
 न्यो अधर मृत वे न व के लि सनंद रूरी ॥ तव वै से सुधान स श्रोत भये सव होत भये विष  
 मार घरी ॥ ५११ ॥ वर वे इ न इ न पद धनि त स नु भ व गो चर मर्थ ॥ वि प्रलंभ श्रंगार को यो  
 य क व हे स मर्थ ॥ ५१२ ॥ संभोग मै यथा ॥ गठ गुन यं धन कै पंथ न च लोंगी क व म ठ भाव धा  
 डार ति ई स सी स धु नै गो ॥ आन ति य मान ही कै मान पर मान ल है मान विन कौ लों ने र गु  
 न ग न गु नै गो ॥ यों क हि सि धा ई स भ स विन स जान रा धे सा धे हि त कै से चित न ई चों प ठ



नैगो॥समयमुषीहैंचौंकिवोलीहेलीहरैंकाहिसंतरहीवैछोकरहंकेतयहसुनैगो॥  
 ५१३॥भयकरिनेहविनाकियोसंभोगहिसनुकूल॥सोईईहाप्रधानसोसमयमु  
 षीपदमूल॥५१४॥पदप्रकास्यभावादिजोतहविचित्रतानाहि तातेधुनिसंलक्ष्य  
 कमकारियतपदकेमाहि॥५१५॥सद्वसक्तिऊदभवमैअलंकारपदप्रकास्यकहि  
 तहै॥रुहिनपरगहिनै॥करिनेजितअतिकरालकरवालमुजध्रुव॥गटककुटिलभ  
 कुटीतटजुवियभालपटतुमभीमसनसमुव॥५१६॥ईहांभियानकवीरकोभीम  
 सैनअपमान॥ताहिप्रकासकभीमपदयहलखिलेहुजान॥५१७॥सद्वसक्तिऊद  
 भवमैवस्तुपदप्रकास्यकहितहै॥वहुभोगनिदानकरैदुषमोचनसोचनकौनहि  
 सौसरदेख्यो॥होतिइकंतमनोरथकौफलस्वारथसौपरमानथपेख्यो॥भावभरेइ  
 काकआलापसतापमिटावनकोअवरेख्यो भागनिसौंसतआगमकोलहिकाहे  
 अनंदअलेखेनलेख्यो॥५१८॥वियोअर्थपियमिलनजोतवहीहोतप्रकास सद्व  
 सक्तिभववस्तुधनिलखियतबुधिविलास॥५१९॥अर्थसक्तिसंभवदादसभेद



पदप्रकास्य यथा॥ तत्रादौ वस्तुते वस्तुधुनि पदप्रकास्य कति है॥ सांगसना इगुलाव  
 निसौ मलिया गरसंग विलेपन लाई सांथ यौ सून जहं इहि संतर साई ईहां पुनिचा  
 यच लाई॥ हेली कछू इकतौ सकमारता है अति ही अदभत लखाई॥ जासैं भई अवही  
 सिंह मी सी जलाय सकै अघिया अकुलाई॥ ५२०॥ अवही पद के वस्तु सों करि परपुर  
 वप्रसंग॥ सिंह मगई यह वस्तु ध्वनि होत प्रकास अमंग॥ ५२१॥ अर्थ सक्ति संभव  
 वस्तु सों अलंकार पदप्रकास्य यथा॥ तिहि के विन देवै महा उषभोग विलीन भये सव पाप  
 रे तिहि चिंतत आनंद सार सुधा लहि पुन्य सम हट रे सिंगरे जग का मनवापन ब्रह्महि  
 घावत आघौ न तासु असा सगरे तिहि संतर ही इक गोपसुता गई मुक्ति अचारि हरे  
 ईहरे॥ ५२२॥ छिन मै भै अघ सुकृत फल जन्म सहस्र जिन भोग॥ सव समस्त पद व्यं  
 ग यह अतिसयो कित का विलोग॥ ५२३॥ अनेक जन्म भोग पाप पुन्य भोग अपरांत  
 मुक्ति भई चाहीये सो पाप पुन्य भोग ते पहलै ही मुक्ति भई यह अतिसयो कति चौधो  
 भेद॥ अर्थ सक्ति अदभत अलंकार सों वस्तु व्यंग पदप्रकास्य यथा॥ करी कुंभ तुला  
 तऊन करी है पुंभ तुला कुच विनहार मनोहारी कहियत है वेली सील सति पै नवे



वेलीसीलसतिप्रपञ्चनाहोंनऐकपोतश्चनावहियतहै॥नयकीहैछवितऊयकीहैनि  
 रविष्ठविमंगनकेरूपमैअनेगगहियतहै वसीलनकाईतऊनयसीरहाईपियइहिति  
 यसवहीअनौघोलहियतहै॥५२४॥सदसक्तिसंभतविबोधजुतिहिसंगजुअर्थीतर  
 न्यास॥ताकरिविधिहंइहअनवर्ततवस्तुसनवपदकियोप्रकास परपअर्थसक्ति  
 ऊदभतअलंकारसोंअलंकारपदप्रकास यथा॥आजुप्राततुवपियअधरमल  
 नकमलदलभाय॥यहसुनिअलिमुअनववधूरहीवदननिहुनाय॥५२५॥आ  
 रूपककरतैंपियहिचुवनकियवहुवार॥तासोंअधरमलीनयहकाव्यहेतुअलं  
 कार॥५२६॥यहचाख्योठैरस्वतासंभवीअर्थव्यंजकहै॥अवकविप्रौढोक्तिप  
 दप्रकासनयसक्तिऊदभवकीव्यंजकताकहितहै॥तहांप्रथमकविप्रौढोक्ति  
 अर्थसक्तिऊदभवपदप्रकासवस्तुसोंवस्तुव्यंगयथा॥कुटिलवियोगनिकेपान  
 तनताकिताकिरोपिधिरजीवायहरावतकमानहै॥फलीमधुमाधवीमधुरमधु  
 मत्तमधुकरसरसोरसोईसुनियतकानहै परननघत्रपतिधरैसिरघजयहचंद्र  
 कानहोयचांरुताहीकोकीरतवितानहै इनरितुराजनजनीनमोगसजनीबीराज



त्रिभुवनको करत पंचवान है ॥ ५२८ ॥ चंद धवल रजनी न मै धुनित ललित निज चाप  
 भुवन राज शक्यत करत मन मय धरत प्रताप ॥ ५२९ ॥ जिन कामिन को मदन नृपति  
 न नर नारिन माहि ॥ तिहि सासन सों विमुखि न कोऊ इति जग नाहि ५३० ॥ जागत ऊ  
 पमोगहि करत तिन की नै न विताइ ॥ भुवन राज पद सों यहै वस्तु प्रकासत आइ ॥ ५३१  
 कवि प्रौढोक्ति मर्थ सत्पुदम वपद प्रकास्य वस्तु सों मलंकार व्यंग यथा ॥ चंद मुखी तु  
 वई धन ती धन साइक जान मनो भव घाती नासत है सवही मपनो वल म्मावत ही यह  
 वै ससताती ॥ आइ दसा सिगरी ऊधरै ससि सीतल सौरविते जसी ताती ५३२ ॥ विनो  
 धनी हंपर स्पर सवै दसाइ कवार ॥ प्रगटत मिलि पद वस्तु सों सुविनो धालंकार ५३३  
 कवि प्रौढोक्ति मर्थ सत्पुदम वपद प्रकास्य मलंकार सों वस्तु व्यंग यथा ॥ सो न ठा  
 विरहिता पमृति भीत हिंय नाकारि वरजियत हं ॥ न चलत कुच मरमीत विमल जा  
 तिया कोहरा ॥ ५३४ ॥ सुध जात इति हेतु मलंकार करि ता नित ॥ कंपत सो थितिले तन  
 चलत पद को व्यंग यहा ॥ ५३५ ॥ कवि प्रौढोक्ति मर्थ सत्पुदम वपद प्रकास्य मलंकार



सों अलंकार व्यंग ॥ यथा ॥ वह मुग्ध मधुर स्यामल वपु विलसत तु वध म्लिल मल्लिकामंडि  
 ता ॥ कलित ललित म्माकार काम जौं डपर सुद्रग चंड विहंडित ॥ तिंहि चंद मुषी के चारु कंध  
 तैवल हि पाइत न मंडि अमंडित ॥ जैयत सूरत संगर मैलंग रजंग रजोर जंग को पंडित ॥ ५३  
 ६ यथा वा ॥ वह तिय चिहुन कला पस्याम मधुर वपु काम है ॥ सूरत समर जय था पधरत पा  
 यति हि कंध वल ॥ ५३७ ॥ स्यां रूप ककरि वहु म्माकार यन के सपास त्यों कंध न म्माईय जिऊ  
 रति विरति हुं चार घटी नहि धरत कंध पद विभावनाईय ॥ ५३८ ॥ ये चारो कवि प्रौढोक्ति निर  
 मित अर्थ है ॥ अथ कवि निवद्ध प्रौढोक्ति वक्ता की सिद्धि अर्थ कहै है ॥ तहां प्रथम अर्थ सत्तु  
 दुव कवि निवद्ध प्रौढोक्ति पद प्रकास वस्तु सों वस्तु व्यंग यथा ॥ नव प्रन्योस सिकेर सिक  
 को तुम कहो वनाइ ॥ पुनि सहाग परी तुहैं को प्रदोष नि सखाइ ॥ ५३९ ॥ ईहां वस्तु कवि  
 मेरी नाई हे तुम प्रथम और ठारागी फेरि नय हनव प्रदोषादि पद व्यंग वस्तु लहियो  
 वड भागी ५४० ॥ अर्थ सत्तु दुव कवि निवद्ध प्रौढोक्ति पद प्रकास वस्तु सों अलंकार ॥  
 व्यंग यथा ॥ सखिन वनिध वंन समर रंग मै सखी समान सुडिहु अकवारी ॥ हार हस्यो हं

ज्यों



तिनफिरिसाध्यातवकिं हिविधिकहितैरतिथानी॥ ५४१॥ ईहाहारकेछेदमनंतरमौनैरति  
 निहचैकरिभासिय॥ सोकहिकैसीयहव्यतरेककिं हिविधिपदकेवरूपकासिय ५४२  
 मर्थसत्तुदभवकविनिवद्धप्रौढोक्तिपदप्रकास्पमलंकानसौंवरूपव्यंगयथा॥ पैठतय  
 हदानहिवदनमोनदेखपथमोन॥ मंसधरीगगरीगिरीमरीकरीकतसोन॥ ५४३॥  
 ईहांहेतुहीमलंकानसौंलघिसंकेतजातनिजपीय॥ जोतंगयोचहतिताँलौजाऔनघट  
 हिकतपदधुनिकीय॥ ५४४ यथावा॥ चपललोचनीतुहिनिनयविहवलजलमनपूर  
 दानपनसमिसगगरियानिजमनकियचकचर॥ ५४५॥ नदीजलकूललतावनमा  
 जसंकेतकियोरुतहांनहमायो॥ जहंदानप्रवेसकेमौसनमायो लखातवफेरनदीम  
 नमायो॥ दानभिरायहस्योमिसहीघटतौकतकीजैनमापसतायो॥ हांतुवसाससुभी  
 मीपसवैविधिसाधिहांकारूनहैहैलमायो॥ ५४६॥ इहिवरूतिव्यंजतकरैलवि  
 योसकविसमर्थ॥ दानपनसमिसइहिंपदजुप्रगटमपनतिमर्थ॥ ५४७॥ मर्थस  
 त्तुडुवकविनिवद्धप्रौढोक्तिपदप्रकास्पमलंकानसौंमलंकानव्यंग यथा॥ मधुन्स



जो न क्व संतमिलि दियत कन ई सुहाग ॥ पियन वोठा जिमि कूटियो परतियतु वहिय लाग  
 ५४८ ॥ काव्य हेतु करि वृद्ध रूप नतिय हम हिंसा डिमि भिलषत जु रहई ॥ तो आचरन न क  
 हियो जात इह आशे यहि परति पद कहिई ॥ ५४९ ॥ ये चान्को कविनि वृद्ध वक्ता की प्रौ  
 ढा क्तिसिद्ध मर्थ है ॥ दोहना ॥ सत्रह सौ नम्र ठारहौ सव पैंती सुगनाहि मर्थ स  
 क्ति भव्यंग को लखि प्रबंध हं माहि ॥ ५५० ॥ यथा विष्णु पद ॥ नंद घर जाय वि  
 नवति धाय ॥ नंदति यके पास पठई गोप वन तन भाय ॥ ध्रुवं ॥ आ जु होति नव स  
 ह मा नै दुही जात न गाय ॥ कहं भाजन कहं ने ती कहं लै वध राय ॥ अप मप नी सा स  
 नि पा स वे स व जाय कहित रिसाय ॥ हम सौं ये दुही जात ना ही मा पु ले डु ड हाय ॥ वै न  
 रु निये नंद घर नी दिये कु वर वताय ॥ क्लृप्त प्रभति न जत न सौं दियो प्रेम सि  
 साय ॥ ५१ ॥ कामातु न कान्हि च हित ता हित सकल जपाय ॥ वरु न रूप वर मर्थ धुनि  
 प्रगट प्रबंध लसाय ॥ यथा वा ॥ ग्रंथ गो मायु से वा दिक मै ॥ गी ध सौ र गो मायु स  
 मा कुल इत अत वहु कं कला न ठेन ॥ सव जीवन को परम भयान क इति मसान की



जैनहिजेर॥ पुनि ईहां जीवत जनकोऊ काल धर्म लहि तुन तस्य वेन॥ प्रिय कै धौ दै घी सभ प्रा  
 निन गति सै सिये होति रहि वेन॥ ५५२॥ यह दिन समर यगीध मुष पुन सविदा कहै वेन॥ पुनि  
 निस समर यसियार मुघति न विरमावन सैन॥ ५५३॥ यहै सव ही तो मूढ इतौ न विनेह घ  
 री ककरहु रहि वार॥ है बहु विघ्न मुहुरत यह कह जीवै तसव जीव संधार॥ केचन वरन स  
 ग यह वाल कनहि पायो जो वन सकुमार॥ गीध वचन सौं कै सेत जिहो तुम निसंक या कह  
 निरधार॥ ५५४॥ तजे ग्रंथ विसतार मे और रंगारह मेऊ॥ लक्ष्म देखिल खिली जिम  
 निज मन सौ कवि देऊ॥ ५५५॥ व्यंजक पद कौ संपत्ति न चना वरणा हंजाति॥ असंल  
 ष्य क्रम तीन विधिता ते कसो वधान॥ ५५६॥ सक प्रबंध मधि होत तव भेद एक पंचास॥  
 नीकी भाति वताई ये हिंय मै होत सुलास॥ ५५७॥ पद कौ संपत्ति न चना वरणा है॥ प्रकृति क प्रत्य  
 काल पुनि वचन पुरुष संबंध॥ ऊलट नित जित उपसरग सरवनाम पद गंध ५५८॥  
 और निपात वधानि ये कर मकत सधिकारन॥ और सव्यी भाव कहि फन वनिपात हि व  
 रन ५५९॥ न चना तीन प्रकार की तीन समास वताइ॥ वरन सम धुर कोठार मूढ इतने



व्यंजकगाय॥ ५५८॥ तथा प्रकृति की व्यंजकता यथा॥ रतिकेलिकलनिपटुमानभटी  
 करि मंगपटी हनली हरिज॥ तव कोमल कर किसलै करि मंगपियनयन जुगल सुंदर  
 तरु॥ तिहिं तीजन यन लखि नमकि नमकि गिरिजा धरिवदन सुधाकरु॥ परिचुं  
 वितजयत जयति परै न वसुकरु न दन दधुं वनरु॥ ५६०॥ जयति न पुनि सोहत ईहां  
 जं पन जदपि समान॥ तदपि मलौक किरीति भो सो ईजयति निदान॥ ५६१॥ यथावा॥  
 सौं हनयाति हि यै सरसा तमनावन को वहु बुधिविसेषी पांय परै हरि हाहा करै त अंत  
 अनत्यो न कहूं मलियेसी॥ नैकुचलै अठि दोयै कपें डही धाइ गहे गिनी नीवी नलेषी  
 भेटि मुजानि मनावति सापही प्रीत कीरीत मनो धियै देसी॥ ५६२॥ गहे दोर क कोपै  
 डही न पुनि दोय इक द्वार॥ संचारी संभोग मै यह अत कंठासार॥ ५६३॥ पहिलै म  
 ध्यात प्रकृति जिधात की व्यंजकता कही ईहा सुवंत की प्रकृति पै डय हर सवता की व्यं  
 ड जकता है यह विसेष जानीये॥ तिरौ सुप प्रत्यय की व्यंजकता यथा॥ वन वन पै ड पै  
 ड डुल से सुक चंचु चार कदली निमकूर॥ दिस दिस पवन लतानि नचावत मरुवाज



तको किल सनत्तर॥ नरनैनरनारिनारिप्रतिविद्युत्ततुत्तसाइकनिकामकन॥ पुनपुन  
 भई निवरतमाननीमननिमानचनचारिसमन॥ ५६४॥ विद्युत्तनिसाध्यनिवृत्तिसिधति  
 डरूपव्यंगविराजै॥ कतप्रत्ययकरिपुनिश्रुतीतताश्रितिसयहेतसमाजै॥ ५६५॥ यथर्व  
 लिखतआइकछुभुवहिप्रानपतिनायसीसरहेषायठगोरी॥ निराहारसवसखीनि  
 नंतरआसूनैननिनीरजकोरी॥ पंजनसुकानिसवैहसिवोपठिवोदियशेडितुहइत  
 श्रीरी॥ दुसहदसाधारतितनतातेतजिअवमानकठनमनगोरी॥ ५६६॥ लिखतआइन  
 तुलिखनकष्टतहपुवप्रसादपनजंतयाइपिय॥ वैठेनहीभुवहिनतुभुवमैलिखतनव  
 धिसौबिरमावतहीय॥ ५६७॥ वैलनिकोचठिवोवसिवोपुनगावकोसंगीसदाविष  
 गोहैं जानतहैंपुनवासकीरीतनभानतिहैमनरानियौकोहैं मानभरेपतिनागरि  
 शानकेलेतिहैमोलचितैमनमोहै॥ सोनेसेआंगमैपैनुतिरांगअलीहमजोहैंसोहैं  
 श्रितिसोहैं॥ ५६८॥ अखीनागरियांनकेयहसुअनादरमाहि तिनदेवतअवहेलि  
 हरिलैहिंरुयेधुनिआहि॥ ५६९॥ यहसुस्वामीभावसंबंधकीव्यंजकताहैयथा



वा॥ गोपिन को पीवै अचित पिय अधराम तपी अ॥ मुरली निज परमेदन हि छिद्र धन  
 निकै जी अ॥ ५१०॥ ईहा गोपीन को धन यह व्यंग॥ काल भूत भविष्य वर्तमान त्रिविधि  
 तहां भूत काल की व्यंजकता यथा॥ लोचन लाल सुभाय ही देखि यै पंकज को रंग ल  
 टि सो लीयो संतत वै नव जावत ही रदन छद स छद हेरत हीयो॥ रैनिरू कानन के  
 लिमचावत गात निकट कस्यै सुमवीयो काहे को नंद के नंदन संकत स्या पुन पौ सु  
 पनाध सो कीयो॥ ५११॥ टीका॥ कीयो या कृत प्रत्यय को व्यंग जो तुम पहिले ही सुपरा  
 धी हो तापी छे सामु हे स्याये यह स्रतिसयोक्ति सुलंकार ता को व्यंग जु मोहि प्रतिभय की  
 अधिक ई वाहि प्रतिप्रेम की यह वस्तु॥ काल की व्यंजकता यथा वा॥ ईस चाप भंज  
 नि प्रगट दसरथ न पति सगार॥ स हो मनोहर है भयो यह धृती या सुकुमान॥ ५१२॥  
 वर्तमान को भूत कहियत भ्रुपति की अक्त॥ परम रोस स्या टोप को प्रगट करत य  
 य जुक्त॥ ५१३॥ वचन कहै एक वचन द्विवचना दितिन की व्यंजकता यथा॥ अहि चित ऊ  
 न गुन गाति किन ऊन चाहनि अहि प्रेम॥ ऊन बोलनि को रसिक वर यह परनाम रुने



म ५१४॥ वेगुनवेस्रमलासमनबेवरतनिबेनैन वहिरिततवऊहिभांतिमवशहिवि  
 धिभोसखदैन॥ ५१५॥ टीका॥ प्रेमकोहितकोएकत्वसौरनकोबहुत्वताकरिसौरमनेकरू  
 पहाह परिप्रेमएकरूपनिरूपाधिहै यहव्यंग॥ पुरखकहेप्रथमपुरखमध्यमपुरख  
 उत्तमपुरखताकेऊलटनिकीव्यंजकता यथा॥ रविम्रथयोघामसूमिटीवननजी  
 कबहुफल॥ चलौतिनहिवीनतसवैशिवाहिकरैमनुकूल॥ ५१६वार्ता॥ ईहांचलियौ  
 कहिनचहीये तहांचलोकाहितहै हमतुमभेदनही यहप्रेमकीमधिकईव्यंग तहु  
 तकीव्यंजकता यथा॥ वारहीवारसमीपहैवापुरवीथिनडोलतहैनसिकाई॥  
 देखहीदेखिमनोभवरूपधरैरतिज्योम्रतिहीम्रतुराई॥ राधिकांम्रापनीरंगम्रटा  
 केगरोखैघटासेकटाछनटाई॥ सरीम्रमिलाखलुलैम्रंगरानिपसीजतरीगत  
 भीजतमाई ५१७टीका॥ ईहादयावनेम्रंगम्रंगककहियैतद्धितातसब्दहै सोभाषामै  
 जेवनाहीतातेवहम्रर्थलैकेम्रंगरानैयौंकरे॥ उपसरगकीव्यंजकता यथा म्र  
 रूविलोकम्ररूवानिसवैपुलकीपुलकावलिदेखै मंदहसैंसवमंदहसीरूम



सा

लीन भई वेमलीन हि पेखैं॥ चंद मुखी अपने कर आन सलै मुख की सुख माखव रेखैं॥ ताही ते आ  
 लिन के मुख की गति जानी परै बहु भांति विसेखैं॥ ५७५॥ सुया अपसरग को व्यंग जो सखी  
 न को या को प्रेम सख कहै॥ सर्व नाम की व्यंजकता यथा॥ बीच सभा मतिवंत सखीन की कंत  
 सखी म मरति ठानी॥ वाह गही जु फुलै ललगावन सो अन के परसै पहचानी वा  
 वरी जात ते नाह प्रवीन मन्हा अगी सा जु नयो सतरानी॥ नाक सकोरि सखी निविदा क  
 नी सो छवि कों हूं नही विसरानी ५७६॥ या सरवनाम को व्यंग जो वह वस्तु अनुभव गोच  
 र है॥ निपात की व्यंजकता यथा॥ देखत मुख नंदन द को हियो हराये नैन॥ और लक्ष्य अ  
 निको हीयो यह ईश्वर जनै न॥ ५७७ टीका॥ ईहां हीयो हस्यो र हीयो लक्ष्यो ईहां या च  
 कार रूपी निपात के मरथ सो तुल्य योगिता व्यंग जव ही अन को हीयो हस्यो तव ही अन  
 पिय को हियो लक्ष्यो तातै हीयै स्तुन्य भई ताते अन को हीयो रु अन को हियो एक ही है यह  
 वस्तु व्यंग जानीयै॥ दोहरा॥ वहि तु वहिय मधि वासिनी तु मतिं हि रिय मधि वास॥ तु म  
 ही द्वै पूरनि हिय निलहौ प्रवेसन नास॥ ५७८॥ वहि तु मरो हिय मधि वस्तु मवा को हि



हियमाहि॥ तुमही है फरन रुदै लहो पै ठि वी नाहि॥ ५८२॥ अधिके जोग मै आधाव को कर्मत्व  
 होत है ताको व्यंग जु वियापिके तुमारे हृदय मै रहित है रंच हूं रमहि सवकासनही॥ अव्यई भा  
 व को व्यंजकता यथा॥ केतक सावत केतक जात किते रहै मरति वंत से भेले॥ फरन आनंद मं  
 गल चार ईहा पुर द्वा रिका माज सकेले॥ वाम सिरो मनि संगम मै प्रति मंदर भूरि मनोरथ  
 भेले॥ खेलत सै सेविते दिन ये जिन ही दिन वा ब्रज वी धिन धेले॥ ५८३॥ ईहां प्रति मंदर आ  
 सव्य ई भाव को व्यंग जु एक हूं मंदर वच्यो नही या भांति मरति प्रगट कीनी॥ फर वनि पात  
 को व्यंग यथा॥ आनंद कै प्रति भाव भनै मन भलि गई सगली पिघली जे चिंत मठा चतुरा  
 री भनै सकसा नो सवै सुधि दृष्टा यद ईते॥ श्री ब्रह्मान सुता हरि संग कत हल केलि कथा  
 मधुनी वे॥ भोन सखी न केनै नन माज ग ई निस को रंगु घा वै सलीये॥ ५८४॥ ब्रह्मान सु  
 ता को प्रधान्य करि फर वनि पाति है ता को व्यंग विपरीत रता दिक जानिये॥ दोहरा॥ गुन  
 प्रसंग रचना वरन धुनि कहि है दरसाइ॥ सरु प्रबंध को व्यंग लखिलेहु प्रबंध हि जाय॥  
 ५८५॥ गुनिये इक पंचास को भेद जु इक पंचास॥ द्वैत जार घट सतरु इक विलसत भे



दविकास॥ ५८६॥ एकभातिसंस्तिष्ठि श्रुसंकरतीनप्रकार॥ तिनहिचौगुनेकीजियैखलंका  
 रमतिसार॥ ५८७॥ भेदइतेतवरोतहैदसरुजानसतचार॥ ऊपरचारवताइयैभेदनिलेहु  
 विचार॥ ५८८॥ सुकुभेदइक्यानवैतिनसौसंजुतलेखि सवैपचावनचारिसतदससह  
 श्रमवरेखि॥ ५८९॥ जरनिनयेषीपरसपरअमैरहितइकठोर सोसंश्रवतावईकवि  
 कुलकेसिरमौर॥ ५९०॥ जहांहोयसंदेहश्रुसंगीसंगविचार श्रुव्यंजकजहांकोहैसं  
 करत्रिविधजचार॥ ५९१॥ संस्तिष्ठयथा॥ रूपकीक्यारीवईगुनवेलमनोभवसोकातदेख  
 नपाईयै॥ भागनश्राईनिकेतनकोछिनएककीपाडुनीलाडलडाईयै ताहितितारीवधूक  
 श्रुभाष्योकिवारलगीडगसंस्तुनिडाईयै काहेकोकान्तरुठाईयैसोवलिजाईयैआपम  
 नाईयैलाईयै॥ ५९२॥ यथावा॥ श्राजुभयोघनस्यामऊदैसवमानंदसंकरयौअलहैगे पौ  
 नचलैजलसीकरसीतलकुंजकेपुंजविलासलहैगे॥ भूमिभरीडुवचारहरीतनता  
 पमिटेअवयोनसहैगे॥ फरनदीनंदगांवरवानोवगो घनहोकीदरीनरहैगे॥ ५९३  
 टीका॥ इहोगुरजनसमीपगोवरधननिकटनगरनागरीप्रतिगिरिकंदराबैसंके



तमैवैठे श्री कृष्ण को विनवै है सखी देवागत मेघ केश लसौ सो वाच्यार्थ प्रगट ही है ॥ तहा ऊ दी  
 पन विभाव तुल्य जोगिता व्यंग ही है श्री कृष्ण संकेत वै ठेरु मेह अने मरु मेघ सो अपमा व्यंग ही  
 है मरु वन सा अमेय वता ॥ तातै वेग मिसान करो यह व्यंग मरु मिसि हरी या कहै सो पांय  
 न को खेद अने होय गे यह व्यंग मरु नंद गां वनवानो या कहि वे सो ठौर ठौर नर नारी भी  
 नै यह वस्तु व्यंग ॥ पूरन दी कहै सो जमुना तट हंस के तन ही यह व्यंग ताते गिर कंद  
 रा ही मिसान की जै यह व्यंग इन सवन की संश्रिष्ट है संश्रिष्ट यथावा ॥ हरी हरी हा  
 र मरु हा हरि कुंज घनी कदली निहलावत थोरै चंदन गंध के लाल रसों मलिया चल  
 दी हदरी नज कोरै चाय भरे चढ ऊचै मचान निजे कर सजन धान पिछौ नै ये मधुपान  
 न कील हरीतिन के तन की मम कंद निचारै ॥ ५४ टीका ॥ ईहां मनुस्माना को प्रमोद नही म  
 रु विरहीन की मधुपान सो मरु या नंदो नो व्यंग की संश्रिष्ट है संकर यथा ॥ हौ पद मि  
 न वरि कुमदिनी तुम मधुसूदन मंत वाहि वामलोचन सुख ददधि नह महि अवंत ॥  
 ५४ टीका ॥ ईहां हम मरु मनुमा रे मरु राग बहुत है जातै हम हि दधन कहै अदार लोचन देखि



वौश्रुसुखदहौ वादिप्रतिश्रुनरागसैसोनही जातैवामकहैअफनरासैसेदेखिवेसौवाहि  
 सुखदहौकहैसुखहतीहैं॥ ईहांहेतुअलंकारवंगहै जातैहैंपदमिनीवहिकुमदनी  
 वासोंवरिघटहींहै॥ अथवाहमनामहींसोपदिनीहै अर्थसोंनाही नहीतोतुमअनुन  
 कहेतोई अरुवहिनामहींसोंकुमदिनीहैअर्थसोंनाही अन्यथासासक्तनहोते इनदूनोवंगन  
 कोसंदेहहै अरुअपकसोंहेतुवंगहै अरुमधुसूदनभ्रमरहै ताकीदूनोठानपीतहै तातैवाको  
 दोषनाही पदमिनीहीकोदोषहैजुप्रातफलमिलैहै यहमधुसूदनपदवंगवसुताकोवंग  
 गरूपकतिनकोअंगंगीभावसंकरहै अैसेमधुसूदनमनहींहै कहेसदाजप्रताहै यस  
 भावोक्तको दधनद्रगपदमनीप्रबोधकर्यवामकुमदिनीप्रबोधकचंडहै यावंगको  
 ईहांएकमधुसूदनपदहींवंगकहै अरुदशिनकहेसरलअविलोकनिसोंहमहोअनुरा  
 गनही वामकहैकुटलतासोंअंहाअनुरागहै यावसुसोंमधुसूदनसभावोक्तिवंगहै  
 तातेतुममैविवेकनहीतातेतुमसोंकथुनकहीये यहसाधेपवंगहै इनदूनोनकीसंशि  
 विधुनिहै अरुगर्वधैर्यगल्पादन्यनिर्वेदअवहिस्याइत्पादिभावसावल्पहै ॥







गावत है अलिमंजलवीनसे भोजन की वापिन माग्न घोरै॥ घोर प्रकासित है रविमंडल मानो म  
 यूसमहावर घोरै॥ चुं विरसो अदयाचल योसमै जागे कसौ करिके तो निहारे ६०१ टीका ईहां  
 चुंवनवाधित तवसंजोगमा जलछप्रातकी अधिक ईवंग॥ सो प्रगटही है॥ छंद॥ ईहां भई फ  
 निपासबंधविधितु वेदवनहि सै हथील गे॥ सो अनियतु मान डोण गिर महावीरवल पूरजमगे  
 ईहां लखनिके सरनि पठाई य समर इंद्रजित भेज सुनगे किन हूं ईहा पुनरश्च सपतिकी सीस  
 मालकटिय नि सजगे॥ ६०२॥ किन हूं या को अर्थ सक्ति मलवस्तु अंग मै य ह अर्थ ता को अंग  
 पुनि नायक की धीरो दात ताई॥ छंद॥ अपन सादिवाच्य वाक्या रथ ता को अंग सादिलख्य ज  
 मा॥ अपन अंग कहिता हिक हित है अदाहन सन जाय सवै भ्रम॥ ६०३ सवैया॥ अतिसंदर को प  
 मै जै सोल सै मुख सोन प्रभाविन को पलसी॥ दिन को पही को पकरो किन कामिनि देखो च  
 हे नंदनंदरसी॥ अदियाचलि अपर पूरन इंद्र की इंदिया लटिल ईसी वसी इति भांति स॥  
 श्रीमुख वै ननिको सुनिवाल विनोद वढाय हसी॥ ६०४ टीका॥ ईहां विप्रलंभ हास्य को अंग है  
 दोहा॥ मुग्धे परिहर मान मन मानहु पिय जन वै न॥ संवुजदल जलविंद समजो वन जानहु

वि



श्रेण॥ ६०५॥ ईहांसांतविप्रलंभकोसंगहै सवैया यत्सोईमनोभववानतेआगनेमेखलाकोयु  
 नतोवनवाये पीनअयेजनअपरगाठनषष्टदानकोदधनिहाये नाभिहियोडुहअननि  
 हैजघनस्थलकोनसलेतसुषाये नीवीयेफुंदनापैछुकोरहैरंगभक्तोकरभूपकोभाये॥  
 ६०६॥ ईहांसंगानकरुणाकोसंगहै यथावा॥ संगरनैनिनमैतवसंगसमेसुतितोरजरंजि  
 तभानी॥ तोहितसाहिवआजुतजीहमसोवततोहिसुलिंगनकारी तंनभईवरसंगनका  
 हकीनाहकनाहकोसीसऊतानी जातिसवैहमसायसतीभईदैसुवतोधिनसौतिहमा  
 नी॥ ६०७॥ ईहांअसंगानकरुणकोसंगहै॥ छंदा॥ अतुलईसकेभालनयनकोरुचि  
 सोमनजावकरसठारी गिरजाकेजुगचरननयनकीजोतिहोडुनितमंगलकारी  
 सकसासकसवढायवढीजिननैननिचढीकामरसवारी प्रातकोकनदमध्यतुला  
 कहसरसएकधिनमांगअसारी ६०८॥ शिवमहादेवपारवतीविषयसंगीकोसंगर  
 सहै॥ कवित॥ अचेअचेसुचलसुनेकचहंसोअपरेपोंहीसातोसागरसरितसरसोन  
 है॥ तिनइतनैनकोधरतनहिहारतसुतोहिनमौनमोकैरहितनहिकौनहै॥ सैसेसुच



राजकारि वारस वनी को जाल गुप्त संसहि जे कवता के भोन है तौ लौर युवीर याहि ध  
 रै धीर रावरो ई भुजसु मित भई वानी सवै भोन है ॥ ६० ॥ ईहां भविष्य रति भाव राज वि  
 षय रति भाव को संग है ॥ ६१ ॥ वैरिन की वन तानि चंदि करि पेषत तिन के पति निवावरे ॥ तु  
 तुव भटति न पन भत चुं वत प्रणमत पक्षत गहत चावरे ॥ ते सरितु मति प्रसंसति रघु व  
 रह मरे सुकृत न लखिय रावरे ॥ विपति गई सव सवै की जियै अचित होय सो महा भाऊ  
 ॥ ६१ ॥ चमकत चहूँ दिस सति कराल करवाल दामिनी कंपन सों विकट ललाट पैंट  
 जुटियति हि कुटिल भकुटित टंगे पनिसों सुभट ठटत न जनि गरजनि सति दीह प्र  
 चलदल चंपनिसों तुव सजु निमद कत गई यदि धिय नरितु वरहय सुर पुं टमपनि  
 सों ॥ ६१ ॥ चंद मुखी मृगलोचनी नारिन साय प्रमोद प्रवाहनि पैठे ॥ तो सरि ज्यों ही  
 कदै मधुपान हि सात एवंडे चंदनी पैठे ॥ सौर प्रसंग हुको तव नाम तहां किहू लीनो  
 तवै सति सैठे नीकी दसा विष सी विष मै सवरा घसरावरे ते जस मैठे ॥ ६१ ॥ ईहां रा  
 ज विषय रति भाव को संग वासरूपी भाव को अदय है सहि सवर सवी ते जु सपर एहि



सहि नहि सक्तता सक्त पजाल ॥ सौन सैल तनया की वात निपर मरसि का पशु मए दिखाल  
 वने कपट वपु मेघ त्रिपुर हर हर करिक न तति हिव न दभुवाल ॥ तन सिय लता डुहने नि  
 ज कौतहि देहि प्रमोद वाल विधु भाल ॥ ६१३ ॥ इहां महा देव विषय रति भाव को संग आ  
 वेग धैर्य डहूं भाव न की संधि है ॥ कहूं देखत को अस्व रे सति चंचल को न तन रहम आहि  
 कुमारी हाथ सहायो ऊदे रह हाय ह को न अने कहि जाति तुमारी ॥ सै से महा वली राम  
 न रिंदति हारे विष की प्रान डुलारी ॥ कानन चारी फल दल फल निभार लियै कहै का  
 हू सो भारी ॥ ६१४ ॥ इहां संकास कृत्या धृति सम्यति अम दैन्य विवोध अशकता इन भावन  
 की सवलताना ज रति भाव को संग है ॥ कंचन मग त्रि सना मति धाई यजन स्थान मम भ्र  
 म मकु लाईय ॥ दर दर दर वेदे हिव चन मुख आसु धार नि सहित बुलाईय ॥ कपिन संग  
 परिचान करिय मनुचित दस मुख तन द्रष्टि डुलाईय ॥ इति विधिराम भयो हों जग मै कु  
 सल वसता तऊ न यन लाईय ॥ ६१५ ॥ इहां सव सक्ति मल नाम सो अपमानोपमेय भाव  
 वाच्य को संग है ॥ यथावा ॥ पंकज पराग सनिभ एहों सनागत न चंपक के वाग मनुना



नागवीजवणैहो मालतीनिमेलिकरीकेलिकरीकेलिवनजायनायवेलिवनभरे  
 नोनैहो॥सेवतीकेसदनसदाहीरहोसादरगुलावकीगलीहंगुनगारकीसोंग  
 एहो॥तपतीकैतीनपरिरेवाजकेनीरतरिलीनेभोरभीरयोंसमीरधविधएहो॥  
 ६१६॥ईहानायकानायकव्रतांतसदसक्तिमलसमासोक्तिरूप पवनव्रतांतपर  
 श्रोपितवाहीकोसंगहै॥ सगरीरजनीहिवितायकहंस्रतिसीतलसंगऊदोतभयो  
 बहुभोतिवियोगविरुत्तिसीनलगीकरायादिश्राऊदयो मुखयोलइहीदिनना  
 यकसोंमलिनादनिदेतऊराहनयो सहरैहीहैस्रपनेकरसोतनुरंजततासविश  
 सधयो ६१७॥ईहानायकानायकव्रतांतमरधसक्तिमलवरुत्तरूपसमासोक्ति॥  
 रविपदमिनीव्रतांतपरश्रोपितताहीकोसंगहै॥ वाच्यसिद्धकोसंगयथा॥भूमि  
 उपजावतमरतिवढावतमरसकेवसरियहियंहरहावत॥पूलयऊपावतधरत  
 मरधहितमहिकरततनदुषहिसहावत॥पुरवाईफुंकारतढत<sup>डग</sup>जेलदभुवंगमवि  
 धहिवहावत॥तिरिविषधामरवियोगनीनिकोमरनदेतनहिचेतलहावत॥६१८॥



ईहाविषजलकोनामहै ॥ तामै व्यंगहलाहलसोजलदमुजेगयावाच्यकीसिद्धिकरतहै  
 यथावा ॥ होकतगेनीगवानगुवालिनिवेकातरूपभरेदधिदानी ॥ मोहिकहाऊनकोवहिसं  
 गमकाहूहियैभूमहोभूममानी ॥ यौगुनलोगरुनायकहैतियसालिनहंसपनेऊनसानी लोल  
 कपोलभनीपुलकावलिताहमुठावनकोदरसानी ६१६ ॥ ईहांपुलकावलिकोव्यंगप्रेम स  
 ताहिमुठावनिकोयावाच्यकीसिद्धिकरतहै ॥ यथावा कविता ॥ मुँसमहितावाँदिपैदूनीडुतियावभ  
 ईचंपापटमोहैजालदारवादलाईहै मखनसमाजसाजीकैयुकमातसवाजीदीपकजवाहरकी  
 जोतिषवशाईहै ॥ जिततितदेखियतिततितपेखियतफरनप्रकासभ्रकासभासमाईहै ॥ कामकी।  
 सीसालारचीनघुवनभूपतहादेखीदीपमालानववालावनिमाईहै ६१७ ॥ टीका ईहांतीनितु  
 कनकोव्यंगनववालायावाच्यकीसिद्धिकरतहै ॥ कसगम्प यथा ॥ नमिलैलालचदनसकोमिलै  
 विरहिकीभीता ॥ मिलैनामिलैहूँनहीसखतुमसोंइहरीत ॥ ६१८ ॥ ईहांज्योमिलैनहोयकविनहकोभ  
 यनहोयत्योंकन्योचहियै यहव्यंगमस्फुटहै संदिग्धप्रधान्ययथा ॥ चौंकाचमकदमकमडमुस  
 कानिरमकमकमलकावलिमोचन ॥ सैपनमाडलिलानलसतजहनंजनकरतरुचिरकाचि

॥ मरितावचंडमा ॥  
 ॥ सोईजाकोमुयहै ॥



शचना॥ विंदी फल सुंदर मधना धन निरख चंदकंज निचित सोचना॥ राधिक मुख परकरत भावै  
 लाल च भरिलालन के लोचना॥ ६२॥ ईहां चुवन की रक्षा व्यंग॥ मरु नैन न भावै भरीवौ वाच्य  
 नद नो को संदेह है यथावा॥ इतै विरहा कुल व्याकुल बाल वितावति वासर नीठ विहाल॥ इतै प  
 रतं वदरानित मोहि उनावति लै विजुरी करवाला॥ अतै न वसाने दे के निधि या पुवे दे डुति नै तुम मे  
 द विसाल॥ अहां दिस जाहु चले नित ही जित वे पिय गोविंद लाल रसाल॥ ६३॥ ईहां तुमै देख  
 मवध की सधि होय व्यंग॥ मरु वाच्य इनद नो को प्राधान्य संदिग्ध है तुल्य प्राधान्य व्यंग यथा॥  
 होय न हेरति संग रसंत मै भो है तै लटिल ईसी वंकाई॥ त्यों अतिलाल कटा घर रहे य किने नौ की  
 निरखी धिरताई॥ मानो मनोज का ऊतार धस्यो निज चाप जवै लखी जीतिल हाई छाडि दई भल की  
 बहु साधिकै वाकी वची सनि व्यंग दुनाई॥ ६४॥ ईहां अतप्रेषा वाच्य अपम व्यंग एडहंस मप्रधा  
 न है॥ काकु गम्य यथा॥ कानूर के मुख चंद सधाम धुरी मुरली धुनि कानन मानिहें॥ नैन न  
 मारु मरी गुरुलाज समेत वहे कुल काननि भा निहें॥ चित्त चुभे ई मनो भववान सौ वापिय नेह  
 की मानन मानिहें॥ कोऊ कष्ट कहो किनरी तुम देत जु सीखवहे हित जानिहें॥ ६५॥ ईहां



काननिम्नानहो इत्यादिव्यंगकाकुसोपाईये॥ अमनोगपयथा॥ वाजमुनातटमाधुनीकुंजलतानितै॥  
 काहीसाथऊडाने॥ मत्तविहंगनिकीनिकुलाहलसोसुनकेतियसंगजुडाने रीगतभीजतस्योपसीजत  
 स्यानसभायसरेईसुडाने॥ कियोनहिजातकष्यतकाजमहागहरेनसस्योघबुडाने॥ ईईयथावा॥  
 बुल्लकलिंदीकेकुंजकदंबकेकोसुनवाविनपावसकूकें॥ कोरुऊठेपियपीयपुकारिरुहीघोस  
 म्हापपीहनहंके॥ साधुनिकोसुनिकेमनमोहवडिडोयहकाजसवैचितकूके हाथनमैठहरा  
 तनभाजनटीलेभयेसंगगोपवधूके॥ ई२॥ ईहादससंकेतपियकुंजमैप्रविष्टमयोयावंगतैवा  
 चहंकोचमतकारहै॥ यथावा॥ जानतिसियानमालीमानिमनिम्नानतहोमानतहोसीषजेसिया  
 इतुमयाजहै धीनजधरतिम्योप्रतिमनमयहंसांकरतिहोम्यावैभरीतेहकेसमाजहै तोलौसिंग  
 नीयैसुधिवुधिरिंयरासतिहोम्यावतनजौलौनेदलालरतिराजहै॥ देखतहोऊनकोलागिजात  
 नैनामनुनागीजातमनमेरोमागिजातलाजहै॥ ई३॥ ईहांपियकेरूपकोयाधिकव्यंगतातैवाच्य  
 हीकोचमतकारहै दोहराधुनिइनम्याठनिसोंगुनाभेदषसैचालीस॥ स्योनतिरासीसहसहैदेखले  
 हुकविईसा॥ इतिश्रीमतमहाराजाधिराजमहाराजकूरमकुलकलसदितीयजैसिंहवचनागप

नभदिगगजजुतपश्वसुरविहयरितरजनीस॥  
 गुनीभतकेसुककोदेखिलेहुकविईसा॥ ई४॥



६२

62

पतञ्जलीकृष्णभट्टकविकलानिधिविरचितेऽलंकारकलानिधौ गुणीभूतमंगनिरूपणं ना  
 मसप्ततमीकला ॥ ७ ॥ अथ अष्टमकाव्यनिरूपणं ॥ छंदः ॥ सव्यचित्रमरुमर्थचित्रजो  
 प्रथमदोषविधिकाव्यवताये ॥ गुणप्रधानकरिताकीवरतनिचित्रमर्थसदनिकविगायो  
 ६३० ॥ ताते लघुनलघिजिनजानोयहबुद्धिसकाविसमर्थ ॥ अथ चित्रमैसव्यमरुचित्ररुस  
 वचित्रमैमर्थ ६३१ ॥ और ठौर हंकोसो है रूपकादिसलंकारसव्यको और निबहुविधजानो  
 सुंदर हंजै से विनमंडनवनितामुखनिबखान्यो ॥ ६३२ ॥ रूपकादिसलंकारवाहिरै और नि  
 पुनिमनिमान्यो आधेपसुतिडसलंकारपुनिसदनको जुबखान्यो ६३३ ॥ सोयहसव्यच  
 नचतुराईमर्थनिसोऊनखान्यो ॥ सव्यमर्थसलंकारभेदतेऊमैइष्टपरिमान्यो सव्यचित्र  
 यथाकविता ॥ काननकुरंगपरसरजतुरंगपरजंगपरहोतजवधैचियततंगवर ॥ कोनिककु  
 लंगपरमंबुदसरंगपररंगभरैहंगपरहत्कीषलंगहर ॥ रीमिगुनगानपरदैएहयधानप  
 रजयसिंहमैजानकेनाजैकावियानपर नटकीकलानपरचारचपलानपरवेगभरेवान  
 परतानपवमानपर ॥ ६३४ ॥ ईहांव्रत्पानुप्रासहै लघुनमागेकोहंगे यथावा ॥ निपविसने



ससुवजयसिंहभपदीनेमैसेतुरीतिनकीवतावैतुलाकौनसौ सुनजकेसातहूनदृष्टिदर  
 सातसरसातहयवासवकोएकैगढगोनसौ॥जकरेदुवागनिसौअकरेकरीनिमालप  
 करैनजातकरष्टेनरसोनसौ मनहनसंगलेतसंगनमैरंगलेतनैकुहींकैतंगलेत  
 जंगलेतपौनसौ॥६३५॥यथावा॥कोटिबलखंडेजिनविघनविहंडेमोहतिमिरऊदंडेहरे  
 देतसाअवरकौ मधव्रहमंडेजसजोतिखंडखंडेब्रह्मतेजसांप्रचंडेजीतेलेतदिनकरकौ॥  
 घनज्योघुमंडेनहेसानंदअखंडेजोगध्यानकोनखंडेसुखदातासुननरकौ मुनिकुलमंडेजि  
 नमुनीमारकंडेदेहुमंगलअमंडेदसरथकेकुवरकौ॥ यथावा सघननिकुंजनिमैलतात  
 य रुकुंजनिमैपल्लवसगुंजनिमैसांकरीदरीनमै॥वनमैअवासनमैभोंहरानिवासनमैआनं  
 दविलासनमैमेहकीनरीनमै॥अंधियारेधामनिमैकृष्णपद्मजामनिमैग्रीष्मकीधा  
 मनिमैगरपादेगरीनमै चैतचंदचांदनीकीचाहिवेकीचाहजनमैरामचंद्रकीनतिपटैसुन  
 घरीनमै॥६३७॥यथावा॥आजुदसराहेकेअष्टाहकाविलोकतुहैदेतहैअसीससुनिवे  
 न कोसावधानोहोडु॥अमरिदराजमारकंडेमुनिमानिहोडुकीनतिप्रतापससिसुनजनवा



नेहोहु॥ पारथज्योवीरजगजानेहोहुजयसाहचिंतकेप्रमाननितवित्तकेवजानेहोहु॥ वाज  
 तेसदानेहोहुदेसमवादानेहोहुरंगभरेवानेहोहुसाहिमनमानेहोहु॥ ६३० ॥ अर्थचित्रयथा ॥  
 बालमृनाललताकमनीयभुजाऊरम्यानंदगेहमृशेरति॥ सानदसारसुधाकरमंडलमा  
 ननकीश्वरिसोजगशेरति॥ सेतसिनोरहुकानमलोचनीजोनुमईमृदुहासनिमोहति॥  
 श्रीजयसिंहभुवालमनोहरकीरतिकामिनिसांमृतिसोहति॥ ६३१ ॥ ईहोरूपकालंकार  
 है॥ यथावा॥ सोहतसदाईविधिमाननकमलवनगंगाकेतरंगनिमैसंगविहरतिहै  
 बैठजायऊचैहिमगिरसिखरनपरहेमगिरऊपरविहारहिकरतिहै नितिस्ररिक्किभु  
 कताहलचुगतपियैमानसरयानीहियैमानंदभरतिहै॥ रामचंद्रभूमिपतिरावरेसु  
 जसहंसराजैतिहूलोकमृषपृष्टहिधरतिहै॥ ६३२ ॥ ईहोरूपकश्लेषसंकीर्णहै यथा  
 वा॥ मानसरयाडिराजहंसनकेवंसदौरैदेखिदेखिऊडुडुसायनकीफैनकौ चैतचंद  
 चांदनीहिंचाहिचाहिचावरहिंमंचरहिनाचहिचकोरचितचैनकौ रामभूपगावैगिरा  
 रावरेसुजसताहिदेहदेहमांगतगनेसमवलैनकौ॥ गेहगेहमुकतामवेहएतपैलीलस



लेहलेहललनाम्रलीनकोहैवैनको ६४१॥ ईहांआतिमानम्रलंकारहै॥ यथावा॥ जंघुदीप  
 धायदीपदीपनमेजायमोहिगहवैहैगैलधीरसिंधुपैलेपात्रकी लोका लोकधायकुलसै  
 लधरिपायदिगदंतनिदवायजैहोंपुरीसरनराजकी तातैकढीजातितोतैरोकीनरहोंगीक  
 तपसान्तमुजापरिचंभनइलाजकी सरसरिभोरैजिनभलैरतनाकरतंकीरतिहोंम्रध  
 रामचंद्रमहानाजकी ६४२॥ ईहांआतिमानम्रलंकारहै॥ यथावा॥ मंजुलविमलमुक्ता  
 नमैकरतरुचिकियेसुचिमानसमिवासरसाईहै दोनोपधरुजरेधरतकलनादकी  
 योधिजनकेहियैवहुमानंदवढाईहै॥ हंसजानिघोषैकतसरसुतिमातिमोपैचढोई  
 चरतसवरूपरसहाईहै॥ रामचंद्रभपतिकीकित्तिमुहिजानविधिलोकतकम्राईवि  
 धिचासोमुखगाईहै॥ ६४३॥ ईहांआतिमानम्रलंकारहै॥ यथावा॥ गंगाकोप्रवाहिजानि  
 सीसपैम्रनावैपानकंकनवनावैजानिभोगभुजगेसकौ॥ सीतभानजानिभालरूपरदि  
 पावैम्रंगम्रंगनिलगावैजानिचंदनसुवेसकौ॥ विसदविसालदिगवारनकीखालजा  
 नसोहतदिगंवरकोम्रंवरहमेसकौ॥ दसरथनंदवलीरामचंद्रभपवररावरोसजस



कैधोमंडनमहेसके ६४४॥ यथावा ध्ये ॥ प्रगटमहीतलमेदऊनगसिरहीरकिरनगर गह  
 पतिगहताराकिसवैश्रुतकूलवसतिघर ॥ दौलतिजेवजरायजगहिजगमगहिजवाहन दीप  
 दानदीपतविधानदीपनलौजाहन ॥ कविलालकारियकोविदसुनहुश्रीजयसिंहगुवाल  
 मुवा ॥ तुवसत्तदीपततआजुपुनिकांतकितप्रतापहुवा ॥ ६४५॥ छंद ॥ जदपिविभावा  
 दिकवरगानकरिसवैकाव्यनसहीकोचाहत तदपप्रगटरसरहितमेदद्वैकहिसयं  
 गधरमस्रवगाहत ॥ ६४६॥ सवस्रयस्रलंकारमेदतैपुनितेपुनिमेदवहुतपहिचाने स्र  
 लंकारनिर्णयमैतिनकोसवसरूपकरिहोयहजाने ॥ ६४७॥ इतिश्रीमतमहानाजम  
 महाराजाधिराजश्रीजयसिंहभूपालवचनागपतकविकुलचढामणिश्रीकृष्णभट  
 कविकलाविरचितेस्रलंकारकलानिधोसवार्धचित्रकाव्योदेनामस्रष्टमकला ८॥  
 स्रयगुणनकोसरूपकरितै ॥ दोहरा ॥ ज्योसातमकेआहिगुनवीरतादिवहुमान त्यों  
 सस्रंगीकेधरमजैऊतकर्षनिदान ॥ ६४८॥ स्रचलस्थिततेहोहिगुनस्रजोस्रंगद्वार  
 तारादिकज्योकरतहैंस्रंगीकोपागार ॥ ६४९॥ अनुप्रासउपमादिसवस्रलंकारतेजानि



इतनेही मैपरस्परभेदइकै पहिचान॥ ६५० वाचकद्वाराश्लंकाररसको उपकारी यथा  
 येहै प्रानश्चानंदनिदानपियनंदलालमंदमुसकानिवनतानिसुखदानकी केरिमेन  
 माधुरीविलोकातहीनैनचैनरोकातहीसंचलसोहोतहितहानरी॥ कवकीमनावति  
 नमानतिमनीकैमनमानहैमानोजकोरखोजुवानतानरी मानहंसोमानकरिजान  
 तिसुजानिपनोमानिनिश्चनौखीइनकीतोमानमानरी॥ ६५१ यथावा॥ चायभरेप्पा  
 रोमुखचाहिनसकातचधहोतजहारातेडुहंनैननिगकागकी॥ भोतनिकेभंगसंगअ  
 जहंसमतभलेवरुनीविरुमिपलकनकैधकाधकी॥ केसरिकेधौरआयलीनेअतिशय  
 शायश्वकीधरानिधिनधिननिधकाशकी॥ कुंडलगलकप्रतिधलककपोलतलअ  
 लकाचिलकचकचौधनिचकाचकी॥ ६५२॥ वाच्यद्वाराश्लंकाररसको उपकारी यथा  
 संततसुहागसनीतंहीव्रजईससीसचंद्रिकातिलकरुचिरंगनिरंगीरहै चंदनगु  
 लावघनसारसंगरागतंहीसंगसंगप्रीतमकेप्रीतसोपगीरहै तंहीवनमालपट  
 पीततंविसालतनवंसिकारसालतंहीमुखसोलगीरहै तोविनवनैनवनमालीके



विलासअननैननिमैतहीदिनजामिनिजजगीरहै॥ ६५३ यथावा॥ कोरिक्जवाहरकीजोतिइ  
 कठाहरहैजालिनकेवाहरानमाहरसीहोतहै॥ सौरभकेफैलभरैभोरगलीगेलक्षितछाई  
 छविछैलउपमाकेमनभोनहै कैद्यौकामआरसकैफलोफलसारसकैसारदसुधाक  
 रकैसुखमाकेभोनहै पक्षोजियद्योषैपियप्रेमपरपोषैशहिकंचनऊरोषैलखिलीजैय  
 हकौनहै॥ ६५४॥ कहुं नीरसमैमूलकारउक्तिवित्रहीहैरसकेपोषकनही यथा॥ मकर  
 दैआदिराससंक्रमकरतहिमकरकोमहिमकरमेततफिकरई॥ करकरकरैसवसं  
 पतिसुकरकरकरकरकरैआतपसोदिककरचिकरई॥ करारेकरारेकलिकलुसमका  
 रेतमकारेकाकलाकनपैकरतसिकरई॥ सभकोआकरकमलाकरविकासकरदिन  
 करकरनिकोनिकरनिकरई॥ ६५५॥ कहुं छतहुंरसकोउपकारीनही यथा॥ कुंडलकैठा  
 टभोरमुकटकोघाटअतिलंपटलिलाटतटभ्रकुटीनिहटिगै॥ नैननिकेनाटनटि  
 पलककपाटइटिपीतपटपाटपटिकटिसौलपटिगै॥ ऊरकैऊघाटऊरमालनिकेऊ  
 टपस्योकीछैकोटिकाटछविजालनिसौजटिगै॥ मोमनअटकभटकअटिगैनिराट



वैही वंसी वट वाट वट पान संग वटि गै॥ ६५१॥ यथा वा॥ भो ह की चढा वनि मै चौ प की वढा वनि  
 मै आनन कढा वनि मै घूंघट के पट की॥ गट कि ठा वनि मै वात की ठा वनि मै दूती की ठा व  
 नि मै कोटिक कपट की प्यारे पांय पान नि मै माधुरी स पान नि मै सोभा सिंधु पान नि मै भू लि भ  
 लि भट की लट की लट नि लपटा वति ही छुट्यो मान सट की सनौट वा कै चंद्रिका मुकट की  
 ६५२ कहुं वा च्या लंकार न सो पकारी न ही यथा॥ मित्र कहुं गये के जनि को वन आनन वांछि भो  
 व्याधि मलीने॥ भो न प्र कार न लागे चहुं दिस सानसी धाय के प्ये ठिंग कीने तिंहि वम वि  
 योग भरे चक वास मुरार लता तजि दीने नलीने॥ मने मुय ना सी है आग न दैनिक सै  
 जिन पान कहुं दुषधीने ६५३ टीका पहिलै टकाना घर के अनु प्रा सधत हं श्रंगान को अ  
 पकारी न ही॥ फेरि मुरा निलता को आगन की अत्प्रेषा प्रकित श्रंगान र रस को अपकारी  
 न ही॥ जातै मुरा नलता जीवने कि वे को समर्थ न ही समर्थ होय तो जीव को ने कि वे विप्र  
 लंभ को जय कर्ष कहीं है॥ जातै विरहि मै मरण हंस हि वै है॥ डहुं ठौर वाच क मरु वाच ही को  
 अपकारी है मलंकार॥ दोहा गुना लंकार विभाग के॥ जे सम वाय संवंध को न हति सूनता



आदि॥ ते रंगुन कर जानि यौ कहित विबुध जन मादि॥ ६६॥ जे संजोग संबंध सो रहितार दे  
 आदि मूलं कारते जानि यौ यहै विभाग मनादि॥ ६६१॥ ओज प्रभित मनु प्रास आदि दुहे रत  
 एक सम वाय संबंध॥ यह जु कह्यो काहु श्वान ने सो नहि जानत कछु मति मंध॥ ६६२॥ काव्य  
 सोमकारी जु धन मगु नति हि अधिक ईहे तु मूलं कार॥ यह नही जातै सव गुन नि कि किते नि क  
 रि कविता विवहार॥ ६६३॥ सव नि कहत म सम गुना तव गौडी मरु पंचाली रीति का वि  
 न होय कि केन कहित पुनि आवत मौर चिंत मै मीति॥ ६६४॥ यथा॥ नट्ट हलिग मट्ट मरु जट्ट  
 हट्ट लिग हट्ट॥ नट्ट जट्ट दुहे अट्ट लखि कट्ट नहि सम हट्ट॥ ६६५॥ ओज गुन यहै यहै काव्य होय  
 जाय॥ मरु गुण विना ही मूलं कार काव्य व्यवहार के प्रवर्तत है॥ यथा॥ लोचन चकोर दुसरो  
 चन करन काज को रिदिज राज सम राजत वदन है॥ परम विरहि जु रहन प्रवीन र मधर म  
 धुर साधारस को सदन है॥ तीधन ये वर रणी सेति रघु कटा शनि सो चित कत लान करि कीज  
 त कदन है॥ रंग सो रंगीली कीध वीली श्व निरखत नैन न को मादक सो प्यावत मदन है॥  
 ६६६॥ रूप का अपमा गुण निरपेक्ष काव्य व्यवहार के प्रवर्तक है॥ सव गुण न को भेद कहित है



दोहो माधुरीउजप्रसादइमतेगुनतीनप्रकार॥ नपुनिमौरगंयनिकोहैदसप्रकारनिनधान॥  
 ६६१॥ कोऊअंतरगतइननिकोऊदोषाभाव॥ अन्यदोषरूपैकहंयातेनदसगनाव॥ ६६८॥ इन  
 केक्रमसौलक्षणकारितहै॥ दोहो॥ आनंदततामाधुरीडुतिकारनसंभोग॥ डुतिसुखमीज्योग  
 लितताकारितसकलकविलोग॥ ६६९॥ विप्रलंभसुरुकरगमैमौरसांतरसमाह अंतरज  
 ततरसधिकहीडुतिमाधुर्यलयाहि॥ ६७०॥ चितविसतारसरूपगुनदीपतिकारनउज र  
 हितवीरवीरधसुरौद्रसधिकचितचोज॥ ६७१॥ वरतविधूमडुतासज्योंधरतसधजलवानि  
 व्यापिरहितहैचितकोसोप्रसादगुनजान॥ ६७२॥ सभरससवरचनानिमैयहगुनचहियत  
 आया॥ गुनरसकेसवरसुरधरहितलक्षणाया॥ ६७३॥ छंद॥ डुतिश्रंगारसुरुकरगसं  
 तमैवीरवीरभूसुरौद्रविस्तार॥ हासरुसदभुतसुरुभयानकारितचितविकासतीनोगुनसा  
 र॥ ६७४॥ दोहो॥ गुनस्यनि कैधर्मनहिसवधर्मनहिसाहि॥ वरगसमासकरवरनियैव्यंज  
 कहैतिनमाहि॥ ६७५॥ कौनगुनकेव्यंजकौनयहकारितहै॥ छेदा॥ टठउठवर्जतवर्गपंचहं  
 सिरउजगनमसमेतलीजीये लघुजुतरेफराकारमध्यवृतिमधुरनचनमाधुर्यकीजि



ये॥ यथावा॥ अथ यस्मिन् गङ्गा की निधि गङ्गा भोहि मङ्ग मरी मङ्ग मङ्ग जोवन ऊचें गङ्गा भीने है  
 चङ्ग के से मोरें गङ्गा मङ्ग मरे सङ्ग सङ्ग मङ्ग मरे रज निचको रङ्ग कीने है॥ कंचु की सु रङ्ग  
 कसे तंग नि तु रङ्ग सै से ऊर ज ऊतें ग नि म तें ग कुं म हीने है॥ करति कु रङ्ग नै नी ता कै सें ग  
 रङ्ग रङ्गे ज मुना प्र सें ग जि हि मङ्ग त प धीने है॥ ६१ यथावा॥ मृति ही सु रङ्ग ल सै कंचु  
 की मर सनी के सरि सो राजित ड कूल गु न गोरी के॥ कपोल नि लाल रङ्ग लाल त गुला  
 ल रङ्ग मध रतें को न रङ्ग भाल रङ्ग गोरी के॥ रङ्ग ही सो धूटे वार वि धरे वदन पर मंच ल  
 चुचात रङ्ग रङ्ग ऊक गोरी के॥ प्रीत म के सें ग मै म न रङ्ग स र सा इ यो राज तु है म ज म  
 ग मङ्ग रङ्ग होरी के ६२ यथावा॥ रति है न समता को मृति है म न प रूप मङ्ग सें ग ल सी  
 सारी जर क सी सु रङ्ग है॥ मंजन कै रे म मलि गंजन चतु र नै न मंजन सों ल है मी न वें  
 जन कु रङ्ग है जोवन कै जो रज जी जग मगी जो तिल सै सग वगी सो धें को धे वी जु सी गु रं  
 ग है॥ कंचु की के वंद क सै ऊर ज ऊतें ग ल सै तंग क सै मान हें म न रङ्ग के तु रङ्ग है ६३ यथावा  
 मृति ही म धीर कीने को कि पि क की र वा जै मंजुल मंजीर ऊठें हें स कुल धा इ कै म मी



केतरंगनिचलतिमृदपौनस्याजुकीनीरौनकौतैकुंजभोनस्याइकै॥ पतंगप्रदीपचाहचं  
 चलाचमकचाइचातकचकितरहेचुहलमचाइकै॥ कंचनचंवेलीचाइचंचरीकचाचरति  
 स्राचरहिनाचरिचकोरचंदचाइकै॥ ६७४ मयसोजगुनल॥ प्रथमत्रतीयनिरेफमलं  
 क्ततद्रजेचौषेसाधमिलावो॥ तादिसकारखकारदीहव्रतिविकटगुंफगुनस्राजहिलावो॥  
 यथा षष्ठी॥ दियदपट्टिखंगदट्टिकट्टजसीसनिकट्टिय॥ तासुधरध्वनरुधिरधारधाइयधर  
 पट्टिय॥ घोइघोइहरचननलहियमिष्णामहतभुवा॥ कैलासहउट्टभासिदप्पस्रप्पहिस्रभ  
 यहुव॥ जियजंभहरनमडदंभहरवीसविक्रमविफलभुजयंभेभो॥ लंकाहिस्रायसंकाधरहि  
 जहरनतापसरूपयै॥ ६८० यथावा॥ चंडकरचक्रकुंडलीसंभोगपासदिखदंतदिगदंतिन  
 केकुंतकरलीनेहो॥ पधयप्रचंडवज्रविजुलक्तपानिघोरचाहतनस्रानस्रजुहुजयकी  
 नैहो॥ दुष्टदुरजोधनविहंडनऊदंडवाहुदंडमहिमंडलमैभीमभावभीनैहो॥ फरनप्र  
 कोपप्रलैपावककरालज्वालजियजागेनहिकाहूकेस्रधीनैहो॥ ६८१ यथावा॥ जुहुजय  
 ऊहुततुनंगटापटंकट्टिघाटवाटगिरितटवरवटकाटिगे॥ धाईधरधरिधानधानाध



रघोरनीनिमंघुकारभारमैकमलैतटश्रुतिगे॥फेरिमदमो कालमतंगनिकेपाइधरैध  
 सकिधराकेपुटसातोफुटिफुटिगे॥राजारामचंद्रतवैजमगिफनिंदफनमनिगनजोतिनके  
 जालजगजटिगे॥६८२॥यथावा॥चकिरहेलधनविथकिरहेतानापतिथकिरहेसंगदऊ  
 चकिरहेहनमान॥थकिरहेवीरवाकसकिरहेसक्कादिकतकिरहेतीनलोकजकिरहेजा  
 तुधान॥आजुहुहुदसासनदैरथसमाजिरनआयोलाखिभरभेभीतभयेचंदमान॥विपुल  
 पुलकपरपरिनकपोलरामआनंदमलसडगदेवतधनुसवान॥६८३॥एषे अतिगरजित  
 घनगरजितटितजिमबंभतइकिय॥प्रगटियवपुविकरालमसरघनकालकडकिय॥  
 सटकतविकटजटानिअटकिघनघटागरकिय॥विजुघटाअपरातगटकिगिरत  
 टनिपटकिय॥वहुडट्टवडिचडिडियनभहिमडियनविऊडियससिय॥मुखरोससासनर  
 सिंहकेसतलोकऊरधजसिय॥६८४॥कटकटसरआनिविकटअटतब्रह्मंडकोहै॥ज  
 टाकोटिघनघटाफटिछुटिछटिछटाहै॥अमरनटीकुचतटनिगटकिअंचलपटगट  
 कात॥तिअतिअकरनसरकंटकनिरविअथअटकत॥अगिलेतवदनजालावलीडगफु



लिंगव्रंदनिवमत॥ नमपुहमिपट्टिनरकेहरियप्रगटपिष्ठिसुनगननमत॥ ६८५॥ अज्जल  
 विज्जुलवरनजटादिकतटनिसटक्किय॥ मेघघटाघपटातघटालपटानिपटक्किय॥ लो  
 चनपुटविकरालअनलगलजालरुगलिय॥ लहलहंतनसनादवग्गिअसुननिअंसुगि  
 लिय॥ अतिदीहदाढनववज्ज<sup>वर</sup>वर<sup>वर</sup>राटव्रह्मंडडर॥ वंभहिविदारिकटकाटकरतुगटकि  
 प्रकट्टियविकटतर॥ ६८६॥ धकाधकापावकाधवतलाललालनैनतडितघटासीअज्जटाको  
 टिसटिकै॥ दूटैघनघटाभारफूटैगिरिलोहसारछुटैव्रह्मंडद्वारकिरीटकैअटकै॥ दौकी  
 सीलपटलहलहतकरालजीभिवाढैकोहकाढैडाढैसत्रुप्रानडटकै॥ तीयेनवरनकी  
 खरीयैखरखराहटकंठघोरभानीनरकेहरियप्रगटकै॥ ६८७॥ कीजैअत्रकाटिकाटिका  
 नमतिकुभिनकैढारौचारुचौरहयपुत्तसेतसाहके॥ वंडितप्रचंडमुंडमंडलकीमालानचो  
 साजोगजजंघनिकैमंडिपऊमाहके॥ सुंडनिकीभेरनिवजावोढंडडालघुरोअोनकुंडम  
 रोनंगधिरकोअक्षाहके॥ कूडीप्रेतनारिवकैकोलाहलिकरियतिसंभ्रमकपालीगेह  
 कालीसतव्याहके॥ ६८८॥ अथप्रसादगुरानिरूपण॥ जाकारिसदनिसुनतहीप्रगटअर्थ



दरसाइ॥ साधाननसभरसरचनेसोप्रसादगुनसाइ॥ ६८८॥ यथा॥ नेसमनसमसमसिरोरुह  
 सेंदरीकेसघनघटाकीस्वामताईसरसातिहै॥ तामैउहेंऊनकरिपनमसवारीपाटीपियम  
 नपारिवेकीघाटीदरसातिहै॥ गुफितगुननिगजमेतिनसवारीमांगताकीअपमाकोमति  
 एकैशकुलातिहै चमकितमकितमपुंजकीचमनिचीरिमानोचारुचंद्रमाकीचौंकीच  
 लीजातिहै॥ ६८९॥ तनलतरोननितरनिशौरतारापतितेजभरीतानातनेहीननकीभास  
 पै॥ पाटीनीलरूपसभासाभासोमलिततहांवंदीमुक्तारीव्योमगेगाकेविलासपै कान  
 निकैऊपरगनकछुटलाकीजोतिवरनीनजातिबुधिवलकेविकासपै॥ भासतप्रका  
 समानभासमानभासवीचमानहुसकासदीपकामकेसकासपै॥ ६९०॥ पीनऊरोरुह  
 जंघनिकोसंगपायडुहंदिसतैकुभिलाई॥ मध्यकैसंगमलीनमलीगईतातैहडीतिरि  
 ठौरलसाई॥ सैठभरीढिलरीवहियानिकैडारतनैनसवैऊदसाई प्रातयहैनलनीदल  
 सेजवनावतितोतनतापतचाई॥ ६९१॥ यहप्रसादगुनसनवरसवरणचनानसितहै॥  
 फलेमधिपंकजस्रमंदमकरंदगनैवीचीवीचतिनकैपनागनिपगतिहै मातेकलहं



सकंजकरतकुनितकलतिनकीनिकुंजनिमैगांईसीजगतिहै॥कंचनकीपैरीफलमाती  
 मनिमानिककेठाढीतियतापैमुनमनहुंठगतिहै॥आसपासपांतितरवरकीविराजमा  
 नकैसीनीकीसोभातरवरकीलगतिहै॥६८३॥जद्यपिगुनपरतंत्रहैरचनादिकबहुभा  
 ३॥वक्तावाच्यप्रबंधकीतदपिअचितताआ३॥६८४॥तासोरचनावृत्तिवरणकहुसौरभा  
 तिलैजाही॥तातैअचितविचारिकीजियैरचनादिकसवठाही॥६८५॥कहुंवाच्यअरु  
 प्रबंधकीअपेक्षाविनावक्ताहीकेअचितवरणरचनाहैयथा॥मंदरहलायोअहुअहु  
 तसमुद्रफरफरनदरीज्योघोसहोतइकसारहैदेतदीहडंकानिकेगाजतमलयघन  
 घटनिकेसंघटज्योघोरघोरवारहैकृष्णाक्तोधअग्रदूतकुरकुलनासहेतवज्रघातवा  
 नघहिरातविकारहै॥मेरेसिंहनादज्योगंभीरधीरधरनीमैकीनीकिनधमाधमी  
 घोसाकीघुकारहै॥६८६॥इहांवक्ताभीमसैनहैतातेवरणरचनाश्राजकेअचितहैअ  
 रथश्राजकोव्यंजकनाही॥कहुंवक्ताप्रबंधकीअपेक्षाविनावक्ताहीकेअचितवरणर  
 चनाहैयथा॥वज्रसमगाइकेघाइकेप्रमानअहुअधलितवेगभरिफून्कोरोससास



१०

१०

सों॥ देवत मरुनर विरय हिति रीधे केरि म्या योरा दुया स का जैं का प्यो इही जा स सों॥ कंधरा  
 कुहर कूरमा रुत भंभात भरि मेरी ज्यो भनत रा म विक्रम दुला स सों॥ भीम कुंभ करण को  
 अतंग अतमंग य ह भारी डीठि फारे नीठि पस्यो है म का स सों॥ ६८॥ कंद वक्ता वाच्य की म्र  
 पेष्ठा विन प्रवेध हं कि अचित वरण रचना दि कहै॥ म्राम्पा पिका माग संगार हुं मधुर ची  
 कने वरण न कनीयै कया प्रसंग म्रौ डर स हं मै म्रति ही अकृत वरण निधरीयै॥ म्ररुना  
 ट का दि रौ डर स हं मै दाह समासन क व हं मरीयै म्रै से म्रौ रौ अचित जानि कै स व ही ठै  
 ररी त म्रनु सरीयै॥ ६९॥ दोहरा॥ इति विधि मम्मट मत कहै ये गुन तीन प्रधान॥ रस म्रं  
 गी के धरम विन व्यंज क वरण प्रमान॥ ७०॥ काहू मत दस गुन कोहै सव्य म्रर्थ के माहि तिन कै  
 लछन भाषि हों इन तै जु देखनाहि॥ ७१॥ कवित म्रशीर्वाद को॥ काहित कहानी मात जस मत  
 रानी कानू जागत निसानी मुख हं हं दुनिठानी है म्रौ धिरा जधानी भये राम चक्षु पानी प्रि  
 या तासु सिया नाम तिया सिय सौ तुलानी है॥ पितु म्रानं मानीति नघोर वन म्रानी हरी राव  
 न म्रमानी यह वात जग जानी है॥ लछन धनुष हा हा धनुष धन म्र श्मि वानी रिस सानी ज



यमपसुमदानीहै १०१॥ इति श्रीमतमहाराजश्रीजयसिंहभपालवचनाम्पप्रकविकोविदचूढा  
 मणिश्रीलालभटदेवरिविवरचितेअलंकारकलानिधोगुणनिरूपणनामनवमीकला ४९  
 अथप्राचीनमतवेअनुसारगुणनिरूपणकरतहै॥ अंदा॥ सलेखप्रसादश्रौनसमताअरुमाधु  
 र्यरुसकामारताहिमनि॥ अथसक्तिपुनिअदारतासुनशोजरुकांतिसमाधिवहुनमनि १०२  
 ना॥ येवैदरभीरीतिकेदसगुनप्राप्तसमान॥ जुदेजुदेलधनकाहितगानहुकविसंग्यान १०३  
 अथसश्लेषलक्षण॥ जहांवहुतहूपदधरैसंधिचतुरईहेत॥ इकसेभासतआहिसोश्लेषकह्यो  
 सुखदेत॥ यथाअंदा॥ अंशितधुनि॥ तरलितहोतभुजंगवरपरतगेगऊतइत॥ जटाजटधूट  
 तजवहिनित्ततहर्नित्त॥ तवहिडुरवितंतिभुवनधितंतंतधुनितितंतजहिनमितंतसगन  
 सितंतंतगुनगितंतितदसपवितंततरनितजितंतंपससिमितंतंकहिंचकितंतंतरलित॥ १०४ जय  
 जयसुनरनरऊचरतगनपतिकरतगनऊ॥ वज्रऊतवननावबुधसंज्रऊतसमकऊ॥ स  
 ऊऊतसमकऊऊगगलगऊऊतगनःतऊऊतअतिलऊऊतवरनऊऊतमनःध  
 ऊऊमिसिनरऊऊलनिनिमंऊऊनचयःभऊऊतजुतरऊऊतअरिवऊऊयज



य॥ १०५॥ वरसतवरसतसरनरनिमसरनिजित्ततजंग॥ जयसेकरसेकटहनगगधवर  
 अतमंग॥ पफुनतमनेगधै इसंगगगनमुरधंगगगवरिअतेगगगुनयन॥ संगप्परम  
 मतेगंचरमसरंजंदरसतमगंगभर्ये<sup>सु</sup>ठगंगदरिमरंगधरसत ३ वितरतनितरतिमक्त  
 चितम्रतिमनुरक्तजुनामजयरगिरसगिरीसजावामत्तनमभिरामवामत्तनमभिराम  
 गिरिजनिभामविलसत॥ नामधरमललामत्रिभुवनकामवरसत धामवप्रहिम  
 धामतुलितसंधामगिरिपर कामदहननिकामप्पुनवयकामवरभर सामगगन  
 चहुजामभनतऊदामजिहिंसगामगुननिमराममकरतप्रणाममृदिसदसण  
 मगगरलसगामगगरमृदिदामगगनधरा॥ धामविधुसिरवामदुरतविरामंकरपर  
 कालभयहरहालगजपतिवाल प्परमविसालवसनसदालद्वरविकनाले तर  
 वपुलालनतरसिरजालविरचितपालद्ववलकपालद्वरदिकपालप्रणतक्तपाल  
 त्रिभुवनपालविधुजुतभालभलकतकालविलुलतव्यालद्वरततकालधनिकालि  
 कालकलुषकुचालदलनवितालगगनकरतालदियजिंहिकालप्रकटजटालनट



तपतालभुवनमवालप्पनतविहालतरनिनिहालकरतरसालजससरसतालवरनि  
 अतालवितरत॥ भुवपतिश्रीजयसिंहकहुमंगलदेहुमपान॥ जैजैजगकरतारहरमा  
 नहवनविहार॥ भुवनसधारजुगपद दारगवरिपहारवसतमहारकृतुमरहारभु  
 जगसवारंकरतअदारतनमृतिसारतजगतुसारविसदपहारभुवपति॥ पांचमंमि  
 तधुनिधंदै॥ मयप्रसादलघन॥ जहांउजगुनसोमिलीसवदसिथलतामाय सोप्र  
 सादगुनकाहितहैसकलकाविनकेराय॥ १०८॥ यथा॥ मानसरधाडिराजहंसनकेवंस  
 दोरेदेखदेखसकडुकाइरकीफैनको॥ चैतचंदचांदनीहिचाहिचाहिचाचरहिंआचरहिं  
 चहिचकोरचितचैनको॥ रामनपगावैगिरारावरेसजसताहिदेहिदेहिमांगतगनेसमखलै  
 नको॥ गेहगेहमुकतामवेहाहफैलीलखिलेहलेहललनामलीनिकहेवैनको॥ १०९॥ मय  
 समतालधन॥ मारंमतजिंहिनीतिसोताहीसोंजहमंता॥ आदिसंतमगमेदनहिसमताता  
 हिमनेता॥ ११०॥ यथा॥ सौरभकैजानैमलिकुंजनिनुमानेकलगुंजनिवितानेवहुमानंदविधा  
 नके॥ सारदकैगानेरसपानदसमानेमुनिनानदहंमानेमनधनमचवानिके॥ सखदसहाने



२२

७२

सधाहंतेसधिकानेवसधाभैवनसानेदरसानेदानमानके॥लालमनमानेभांतिभांतिवैवसा  
 नेजसपुंजसरसानेनघुनाथमहाजानके॥१११ यहकहंदोषहंहै यथा॥काटेकोटिनाकंस  
 निपाटेनारयानसेनसाटेघाटवाटठाठठाटेघोनवानके॥केलीकोकरतकिलकत  
 करतारीदेतकूदतकपीसवैनकहितगुमानके॥भपनसमेरपनपुरंदरहंकेघरभोग  
 वतीपुरघोरघहिरेनिसानके॥देवनिकेमतेकियैलेकागठफतेकीयैरामफरोकामजय  
 सिंहमहाजानके॥११२॥ ईहांनौद्वीभत्समैजुकोमलवनरामागरल्पागहैसगुराहीहै  
 अथमाधुर्यलखन॥जुदेजुदेपदसकलजहानहिसमासदरसाय॥सोमाधुर्यवसानही  
 सहृदयसनससमाय॥११३ यथा॥लोकलीकजाललोपिलीगीनेहलाजनकेवीतेस  
 न ववालनकेनैननकेतारैहै॥तिसंरिसेहैतनमनदुखसैहैसैसेसारीनिसरैहैहैहैधीनज  
 कोधारैहैरसकरसालअंगमाधुरीविसालमनावतनंदलालपियतेहंतैविसारैहैं कौन  
 तियमानतिसनौखीयहमानगतिवेतोपियप्राणपतिप्राणहंतेप्यारैहै॥११४ यथावा वा  
 लिकानवीनसकमारफलमालिकासीसोहैसखसालिकाकीदीनीआजुमानमै लाल



हीकैलायकललामलोललीकलंकलतासीलहलहैललितललनानिमै नासानथसो  
 हैमनमथमनमोहैलषिकौनविकिजाइविनमोलकीविकानिमै आनंदकीकंदधविधाज  
 तिस्रनेकषंदचंदहंसकानिकरैमंदमुसकानिमै॥ ११५ अथसुकमानताल॥ दोषकष्टता।  
 आइसोकठिनवरणताजानि॥ तिहिस्रभावजोहोयसोसुकमानतावसानि॥ यथा॥ मंगुलिस्र  
 धरदलहलतसकलकालमलिकुलकलितकलपतरुकलिका॥ कैधोमराहनीकेमं  
 त्रकीनिधानमुनिदेवनरनारनिकेचित्तनकीधलिका॥ व्रजतियप्रानिनिकरततकितान  
 निस्रनेकसरताननिकेवाननिकीनलिका॥ कुंजकुंजगुंजतगरुनगुनपुंजभरीराजतिर  
 सालीवनमालीकीमुरलिका॥ ११६ यथा॥ साहिवसुजानरामचंद्रनृपकित्तनटीचली  
 तिहुंलोकसोकनचतअतावली॥ मोदतिकुमोदनैनीमंगुलमरणालभुजाफरनमयंकमु  
 श्रीमित्तचित्तवावली॥ ओढैचैतचंदिनीवसननववादलाइमंदाकिनीमंगपरितारा  
 मुकतावली पावनधरतजासुवाजतहैहरैहरैनपनमधुरराजहंसनकीआवली ११७ अथ  
 अर्थव्यक्तिलक्षण॥ जोप्रसादकरिसरतहीअर्थप्रतीतिहेत॥ अर्थव्यक्तितासोकाहितकाविता



सागरसेतु॥ ११९॥ यथा॥ दसरथनंदवलीरामचंद्रभूपतिकीकीरतिकफरपयफरनसोंतलीहै  
 भारीविसतानीचिभुवनजजिम्हारीस्रतिचंचलचकोरनिकैकुलसनुकलीहै जाहिलहिपारजा  
 तिसौअभविसारिजातिसरगनकाजैसुधारसनिकीमलीहै धावतचहंदिसगुंजपुंजभौरन  
 केदेखियतकुंजकुंजमालतीसीफलीहै॥ १२०॥ यथावा॥ सुधाकैपयोधिमकरंदमयमंदिरमै  
 फरनमयंककरिसासनप्रभाऊको॥ तहांकविलालरसनाकीमसनंदपरवैछोगुनभूपधरै  
 वानिकवनाऊको ताकीसासलागैचिरजीवोकाहिसागैभयोमासोंसुनरागैकसोवैनऊनचा  
 ऊको॥ ऊंचेकाहिटेरोचिरजीवोप्रभुमेरोमेहिचेरोकाहिहेरोरामचंद्रमहाभाऊको॥ १२१॥ स्र  
 थऊदारतालधन॥ दूटिदूटिपदनत्पसेकरतचलतजिहिठौर॥ सोविकटईऊदारतावरण  
 तकाविसिरमौर॥ १२२॥ यथा॥ साजेताजेतुरीजिनकीनडुतिडुरीस्रिसीसनिपैधुरीकियैबेल  
 निऊमाहेकी॥ साजेतुंगकुंजरजेगुंजरतमदभरेजिनैस्रभिलाषपरदलस्रवगाहेकी साजे  
 जंगजीतजोधासिपहसिलारधरैदीपतिडुवनदलदलनडुवाहेकी॥ वीरध्वजवंससिर  
 मौररामभूपवरजगमगजाहरजलसदसराहेकी॥ १२३॥ यथावा॥ जयसिंहभूपसत



जनमसुखदसादीकीनीमजलिसिकीजलसमनमानिकै ॥ ज्ञाचैतहावानिकसौमाचैतैह  
 ताननिकैमानडुमरतिवंतराखेरागमानिकै वाजैपगधुंधरूनि साजैसुखभांतिभांतिराजैज 7  
 लगावतमधुरमुसकानिकै ॥ नैननिनचावैसौलचावैकटमदक्षकेष्विभरेष्वरहरैषाकरे  
 नटानिकै ॥ १२४ ॥ सौजसाजैकहिसायेसुखीरमैयथावा ॥ इंदुपरीधरकीसीधरनीसौतरकी  
 सीभोगवतीभरकीसीसुगनिप्रतापकी सरहदैसरकीसीसैलदरीदरकीसीदुर्गभमिकर  
 कीसीकरीविनदापुकी कौनधरैधरहरिसायेपरहरिसिंधुअयोधरहरिगतिदेविहयथा  
 पुकी ॥ तीनोलोकलटपटसाठेदिसस्रटपटगटपटचढैचमराजारामसापुकी १२५ ॥ अथ  
 कांतिलधन ॥ ग्रामीननिसाधारनजुदैपदधरियतनाहि सोऊजलताकांतिकरवरगतकवित  
 निमाहि ॥ १२६ ॥ ग्रामीनसाधारनपदयथा ॥ चायभरेनाचतनटीनिकेनयनसरसरसनिपंचसरदं  
 कीजिनसादीकी ॥ वीनमालिमालधुनकूंजैकविकोकिलसोफालनिसमाजरितुराजहंतेजा  
 दीकी ॥ मंडलीलैवैठेकित्तिवाफतावितानतानताहिसमतानद्विजराजजोनुषादीकी सादी  
 राघवेसघरसादीदसराहेकीमैगादीजीतलीनीकामवादीरसवादीकी १२७ ॥ अथसमा



धिलक्षण दोहा॥ जहां सव जे चढी कम ही सो दन साय सो समाधि गुन कहित है कविता मै सन साय॥

१२२॥ यथा॥ परै तुंग तुंड न भकुंडल तै संड भरिता मन के मुंड न मै मल कत दंत है जंगन के रे रे दो  
र दीन यद रे रे दिख पै यत न हे रे दु रे दिग जदि गंत है मारतें डमंडल सो मी डत कपोल तल लोलि  
मलि आवलिक लोल विलसंत है राघव सभ मिपाल रावरे अथाह मन मुदित मनोहर मत  
गमय मेत है १२३ यथा॥ दान करि दलित दलि द्रदल संघकार आन भप अडगन आभाह जो  
र है॥ दसर अजोर जल निधि तै अदित नित राजा राम चंद्र त्रिभुवन चित चोर है लोक लोक गाई  
त्रिभुवन सखदाई जाकी पूरन प्रभाई मन भाई चहं सोर है जाकी किति चंद्रिका को पियत रहि  
तर्मिते कंज तदिसा नि कंज सकवि चकोर है॥ १२४ एस दगुन के हे सव सर्थ गुन कहित है॥ अंध॥  
एक पदारथ कहित बहुत पद बहुत पदारथ कहित एक पद॥ वहै पदारथ वाक्य न चनिक रि  
ड विधि प्रौढि कहि सो जक वितह द॥ १२५ एक पदारथ बहुत पद करि क्लोस यथा॥ मन सूयाप  
तिन यन तै अदित जो तित सखंड॥ माल तिल कजा कैल सत सो सभ देहु अदंड॥ १२६ बहुत  
पदारथ एक पद करि कहि सै सयथा॥ अति घोर घने घमसान मई घन पाव सकी अति घारी



तामैचमंकतिविजुक्तापानिवनश्चिनमसन्धारनिहारी॥ नाघववीनभुवप्पतिकेभुजदंडलधै  
 तिहिवारसिधारी॥ कंपतिवैरिनकीजयसंपतिव्याकुलहैअभिसारकानारी॥ १२॥ छंद॥ इ  
 कवाक्यानथवाक्यअनेकनिकारियतताकोव्यासकहितहै॥ अरुअनेकवाक्यानथशककारिकारि  
 यतताहिसमासलहितहै॥ १२८॥ दोहरा॥ यथेहपुनप्रौढिवतावईसोऊजजमनेत वामनादिपं  
 डितमैतैयहजानहुमतिवेंत॥ १२९॥ एकवाक्यानथकोअनेकवाक्यकारिकारिनो यथा॥ चंद  
 कोहंतोअकासकेचंदतेकोनविमोक्षसदेतचकोरनि॥ चंदनहीतोकोहयहचंदकोचांदि  
 नीकोंवगरीचहंआरनि॥ चंदहईअरुचंदतेन्यारोविनाजैकोहोकिहिवुधिकेजोरनि चं  
 दनचंदतैन्यारोललाटयहहैमुखचंदअटारीकीधोरनि॥ १३०॥ इहांचंदसोमुखहैय  
 ह॥ ~~असली~~ कानथअनेकवाक्यकारिप्रपंच॥ अनेकवाक्यानथकोएकवाक्यकारिकारनो  
 यथा॥ गुंजहरापहिरायधवीलिहिकानलगीकारिनेहकीमैंडैं॥ आविनहीमुखकाईवि  
 दाकारीआयनदीसरगांवकेवैंडैं॥ ध्यानधनैमनमोहवकोलविआइव्योजतायमनोर  
 थमैंडैं॥ तैतिनकेभुवभंगसंदेसोगईससंकेतनिकेतकेपैंडैं॥ १३१॥ यहविचित्रताईल



घनपुनकहंगुनहोय॥ कहितकाव्यव्यविहारकोतिनविनदंकविलोय १३२॥ दोष  
 म्रपुष्पारथतज्योताहीकोजुम्रभावा॥ सोईसामिप्रायताओजकहितकविरा<sup>व</sup>यै॥ १३३॥ घ  
 नस्पामकरीरसकीवरवामनमोहनमोहलीयोमनहै मुरलीधरमाललईमधुरी  
 मुखचंदसुधारसकैधनहै॥ वनमैवनमालीकरीवनमालवनायप्रसूननिकेगनहै॥  
 हरिजहरवाइहस्योविरहावहुवासरतैजुमस्योतनहै १३४ म्रथप्रसादगुनलघन॥  
 दोषववान्योम्रधिकपदतिहिस्रभावजोहोय॥ म्रथविमलतारैवहैहैप्रसादगुनसोय १३५ म्र  
 धिकपदयथा॥ म्रधरवंधुवंधुकडुतिससिरुचिमुखसमस्राइ॥ तुवडगजुगलप्रभानिर  
 यिसंजनपरतयिसाइ॥ १३६॥ ताकोम्रभावकहैम्रथजितनोतितनोईपदयथा॥ साहिवश्रीर  
 घुवीरमहीपकीकितिमईमुकताजगजानी॥ ताहिगहैविक्रयाडिंगमानीरुएकहीकान  
 कोभवनठानी म्राजहंलौननहीवियेकानकोहेरतहीतिहुंलोकरिनी याहीतैई  
 सकैसंगप्रवेसकैम्राधैहीसंगनहीहैभवानी १३७॥ म्रथमाधुर्यलघन॥ म्रनवीकृत  
 दूषनकसोतिहिस्रभावजियजानि॥ सोईअक्तिविचित्रताहैमाधुर्यवधानि १३८ म्रन



वीकृतयथा॥ तातेतु रंगमये तो कहां भयो जीन जना ऊजनी निसवारे॥ ऊचे मतंगमये तो  
 कहां भयो कूलवडी जनवा फिनवारे धोरे सवासमये तो कहां भयो चंदमुखी मुखचंद ऊज्या  
 रे॥ लक्षविलासमये तो कहां भयो भरिभरे प्रभुता गुनभारे॥ १३६॥ ईहां जो हिंय जानकी  
 नाथ विसारे यो कहिये तो दोष न होय॥ अथ सौकुमार्य यथा॥ दोष स्रमंगल रूप सो है स्र  
 स्त्रील प्रमान सो कोठार सुकमार ताति हि सभाव जिय जानि॥ १३७॥ अथ मंगल स्त्रील  
 यथा॥ मीचु वियोग डुहं वदत सपने सपने भा३॥ मीच हजीति वियोग खल मोतन स्रलि ठह  
 ना॥ १३८॥ ताको सभाव यथा॥ मुहि विदेस की आन को वै न गने लग आय॥ तिहि ठां प्रान निरुक्ति  
 फिन्पो हिय हीन हो समाय॥ १३९॥ अथ सौदार्य लक्षण॥ ग्राम्य गनायो दूषन नि ति हि सभाव  
 जो होय॥ सोई आय ऊदान ता कहित वडे कविलोय॥ १४०॥ ग्राम्य यथा॥ स्रली मदन चंडाल  
 मुहि वान निमानत नित ताहि वचावन कवल धौपिय मन मोहन मित॥ १४१॥ ति हि सभाव य  
 था॥ बेव्रज पतनि जवि दई निपट निरदई काम॥ दई दई कर जियत सव यागो कल ग्राम॥  
 १४२॥ अथ स्र्य व्यक्तिल॥ वालवधू हय आदिको प्रगटत वसु सभाव अर्थ व्यक्ती ता सों काहि



१६

76

तवडेकविनकेराव॥ १४५ यथा ललितलपेटावारेवादलाईछोगावारेलांवीजुलफनिकारे  
 रूपअजियाहै काननिकमकवारेलाचनचटकवारेमाननमटकवारेमुसकिनिहारेहै॥  
 पंकजचरनिवारेपंकजकननिवारेलालस्रधरनिवारेगालगदकारेहै कांदरीकेचुकवा  
 रेकंचनसेतनवारेनचैनंदवारेघुंघरूनिघोरवारेहै॥ १४६ सीपिहनाऊकसौहेऊनोजति  
 याधविपैरतिकोटिकवारी मंगनिसौरतरानिमरीमुसकानिकैवानिमयंकऊज्यारी आढनी  
 लालहन्पोलहिंगास्रतिगारेडंडानिचुरीचटकारी काहूनईइकगोपिकुमारिनैदेखिस  
 मारकियैवनवारी॥ १४७ अथकांतिल॥ जामैरसदीपतिधैदिपतचंदकीजोति सोईकांति  
 वझानीयेवनकवित्तमधहोत॥ १४८ यथा॥ कोरकहुतासनिकीकोरमानुभासनिकीदामि  
 नीप्रकासनकीदीहडुतिमेंदकी॥ नगरनगरपथवगरवगरवनजगरमगरजोतिमाने  
 दकेकंदकी सेतधविधारीफलस्रगेनागसारीसाजसाजतहीहारीकतप्पानीनेदनेदकी  
 वारिधिमेवुंदज्पोनजानियतन्यारीमुखचंदकीऊज्यारीमिलीचंदकी १४९ अथसलेख  
 लक्षणावहुतकियास्रचतुनईगढतारुवहुजुक्ति॥ अथमेलघटनामईसलेखक



वितकी उत्ति॥ १५० सो सवैया यथा॥ एक ही से जव सी दहं देखै पाये ते आये पिय ससभीने एक  
 के नैन दुहं कर मंद कै केलिक लाह ठके थल कीने रंच कयी वफा यरु मंचि प्रेम हुलास  
 तिया हिय दीने अंतर हास प्रकास उजास कपोल निरुजी को चुंवनिलीने १५१ अथ समतात  
 जिहि क्रम सो आनंभ है तिहि क्रम सो जरु अंत॥ होत न प्राक्रम मेद है समता ताहि मरंत॥ १५२  
 यथा॥ ऊगत सविता लाल है असलाल ही होत॥ संपति विपति वडेन को एकै रूप उदेत॥  
 १५३ समाध ल॥ अर्थ अहेतु अन्य की याया हेतु कजिं हि ठांकी जै॥ अर्थ द्विभाषत समाधि  
 सो जिन मतियं चनि भी जै १५४॥ वाही को प्रतिभास्यो अन्य कविको नही सो अर्थ अहेतु॥  
 यथा॥ सो है काम धाम सो आराम अभिराम यह कंज तस काम जहो सारंग रु सारंगी कह  
 कतिको किला करत सकसा रोयु नियुं जै अलिमाल मनुवा जै कल सारंगी सौ नभ सम  
 हमरे फले फल कै यो रंग जिन को सिंगार यै अंग लल नारंगी तैं ही छिन मंडै मतैं ३  
 गल के चिबुकानि करत थका थकी सी पकी लाल नोरंगी॥ १५५ अन्य ध्याया हेतु अर्थ यथा  
 पीय संग पियामधिमान सरोवर केलि करै कर वारि ऊधारे फले सरोरहु के वन मै कम ३



मलासीलसैतिनसंगसिंगारै॥ आपनेनैननिकेप्रतिविंविनिपंकजकैममहाथपसारै॥  
 कैयुकवारठगीतवसीतेसरोजरूपैयरी॥ कविचारै १५६॥ इतिविधियहप्राचीनम  
 तमैगुनलखनकीन॥ मम्मटमतकरकीजियतपहिलेमैयहलीन॥ १५७॥ ध्ये॥ प्रौढसो  
 जगुननारिसाइकछुविचित्रताई॥ केतेदोषस्रभावदोषनजतकिनसाई॥ स्वभावोक्तिहीस्र  
 र्थव्यक्तिकोतिसुनसदीपति॥ स्वेसस्रस्रर्थविचित्रदोषविनसमताकीगति स्रस्रर्थद  
 धिनितहोयहीयातेगुननसमाधिपुनि तातेनस्रर्थगुनहैं॥ रिकहंयहमम्मटमतक  
 हितसुनि १५८॥ यहनवीनप्राचीनसवमैकियगुननिविवेक॥ अलंकारस्रवभावहों  
 सवस्रर्थनससेक॥ १५९॥ कवित्तसाशीर्वाद्ये॥ यप्यनअयप्यनसपधस्ररिदप्यन  
 केधप्यनकरोरिजंगकप्यनकलेसज॥ चप्यनप्रतापतेजतप्यनकोजासुजसजप्य  
 नस्रौस्रप्यनसमप्यनहमेसज॥ होतवकसीसविसैवीसवीसतीससुनईसकैसी  
 संपैद्विजदीननिवैपेसज॥ जयसिंहदानीतुहैहोहुसवदानीदानकाकेराजधा  
 नीराजैराजादानकेसज॥ १६०॥ इतिश्रीमहाराजराजानामचंडेशाप्रेरितंकविकोवि



दकलानिधिक्तोत्सलंकारकलानिधोदसमीकला ॥ १०॥ अथसदालंकारकहितहै खंदा  
 औरभांतिकाष्टुवचनकस्योकिहं औरभांतिकाहसंजोको स्लेषकाकुकरिसोवजोक्ति  
 सलंकारसकविनचितचोको ॥ १६॥ एकहोयपदभंगकरि एकभंगवसान इतिवि  
 धिदोयप्रकारसो स्लेषकहितयहजान १६२ पदभंगस्लेषकरिवजोक्तियथा ॥ वाततोस  
 नहुकैसेपौनसुनियतकारिपाउहीनकारिवेको कौनउमहतिहै सुन्योईसुनहोतौक  
 कारितभ्रमंदवैनवाजतहीजानियतभ्रहोरोहतिहै ॥ वाढीनदीदेवीकोहाननदी  
 कोवासहमदेनहाईकाहंआइपरतिउहतिनाहीतैसुवेगसुनिलीजैयोहवाइदूनीकुल  
 कीतियासोफेरवातनिकहतिहै ॥ १६३ यथावा ॥ वातनविलोकोकतपौनकोविलोकियत  
 प्रीतमनिहारोतुमपीवोअधकारको बोलेवलवीरतोविदोरोकंसकेसीजिमैं ठीक  
 तजातकियो ठीककिरिवानको ॥ अैसेवहुभांतिवतरायसतराय ठगीदूतिकानपावैवा  
 कैवैननकोपारको ॥ १६४ यथावा ॥ लेडुकरवालकोहैभाजैकरवालगरहितवेसरनक  
 हैताकतसरनको ॥ जोरनसारहोकोहोरहितश्रंगामहासोकाननकोगहैकहैलेतवनवन



को पीरे भले होडु कहै पीरे होय जात निज भाल को अभाग कहै और सो वचन को राजा रा  
 म चंद्र मै से रावरे डर निहित वात न हंसाल परै वैर निके मन को ॥ १६५ ॥ अथ अमंगल स्लोक  
 या ॥ काढो जाय रंभन के गाभन को चीरि चीरि काढै सरि वंसन कै अंकुर उकासी के ॥ हे  
 रि परिसून कुल कंद भविले दुभलै मडिन को तोरि कोरोटेर निहुला सीके लाय मुख  
 पंविन के फल नि संघार को मै से सुनि वन वन वै न वन वासी के ॥ भागै ही मुका मवि  
 न जागै ही विहात रै निम्रागै ही तरा से वीर तेरे ससमा सीके ॥ १६६ ॥ यथा वा ॥ पीन क  
 ठार लया इपरै जिय जानहु वाल अरो जति होरे ॥ होतु मचंचल मै अति तीक्ष्ण न ईश्वर का  
 कामिन मै से निहारे स्पाम महा कुटिलाई के आकर ये तुव के समली नि सवादे रुग को  
 तुव मझल होइ मिमान वती हिमनावत प्यादे ॥ १६७ ॥ काकुव को क्लियया ऊग्या जुमान तो  
 ऊगन दै सरविंद नि मै अलिहंस चुपै है ॥ कुंज गुलावन कै चट कै चकवा चकवी चित  
 मोदन मै है लेहु भले सुख वासर के रजनी सुख तै सजनी अथ कहै ये व्रज चंद सवै व्रज  
 के हित आनु गये फिरि काल न मै है ॥ १६८ ॥ अथ अनुप्रास लक्षण ॥ होति वरणा समता व



है मनुप्रास परकास इकछे कानुप्रास है वियो व्रत्ति मनुप्रास ॥ १६८ ॥ इन डहं न केल की  
 जत वरणा मने क की समता जहं इकवार ॥ सो छे कानुप्रास है कहि सव्यालंकार ॥ १७० ॥  
 वरणा जु एक मने क की समता है बहुवार ॥ ताहि व्रत्ति मनुप्रास कहि भाषत सकवि उदार  
 १७१ छे कानुप्रास यथा ॥ देख्यो दीपमालिका कै सौ सरज्जास की नो राम भूपमोन दीप  
 दान मन भायो है भूमि न भस्मा ठहं दिसादि पति दीपति सो जगमग जोति जगजाहि न जगायो  
 है ॥ छटत हवाई हय फल मुय चं पाचं ड जोति न म्नात सवाजी ख्याल वनि म्नायो है सूरस सिंहे मनि  
 मानिकत नै यानि सो मानो विधि इंदिरा को मंदिर बनायो है ॥ १७२ ॥ व्रत्पानुप्रास एक वरणा की  
 बहुवार समता सो यथा ॥ गनपति गवरि गिरी सगिर गिरा पति गिर वर धारी देहु आयु वरुदा  
 नको म्रस्व सधामा वलि व्यास हन मान विभीषन कप म्रगु नाम देहु विजै के विहान को इन सो  
 समेति चिरजीवी कै थै लेत मान कंडे मुनि देत वृद्ध वर चस म्रपान को जय सिंह भूपतिको  
 संपति म्रन पदेह सभ सखता के काम सूरत कुमार को ॥ १७३ ॥ यथावा ॥ मांडव मोदंग मरूम  
 लै मुलतान मानवार मालवा हं महा माल निमुलाने है मथुरा मेवार मधुमगह मंडोवर



हूँ मेकलमलपाडमरहृमेजमानैहै॥ गजनी गुंगरै गुजनातगोगरोनिगढगढागढपहराहूगा  
 टैगुनगानैहै तिरहुतत्रिपुनात्रिगरततिलगानेनामचंद्र निपदानकेतुरंगकविमानैहैं॥  
 ११४ केरलकेद्योजकनवज्जकहल्लरकुंलकामरूपकामताकमाऊकास्मीरके कामनेर  
 कोलदेसकोलापुरकापयकासीकननाटकनहाटकनवीरके॥ कालंजनकोसलकलि  
 गकलानकरकरनालकुरुदेसकजलीवनकरीरके॥ वेकायकजलवासकाविलकेकैकी  
 लसैकविघरकीनेनामचंद्रदानवीरके॥ ११५ अनेकवरणकीअनेकवारसमता॥ दसरथ  
 नंदसुखकंदराजानामचंद्रतेरेदेतदानघनहूँकेघनघूरिगे पावोतरुत्रासमानचौकपरे  
 आसमानभासमानमानमघवानहूँकेदूरिगे॥ मेरुगिरनैननमैकामधेनुमैननमैगं  
 गापूरपैननमैभरिभयफूरिगे संसनकछुवैसंसनगमायोवंसदारिदकोदानिप  
 वपेटनिहीकूरिगे॥ ११६ यथावा॥ तेरेदेतदानमहादानिराजानामचंद्र दुधिनिधिबीची  
 नीबीहोतनंचिनंचिकै॥ लाग्योमैनमोदलैनवाद्योमैनकामधेनदीनभयोचाहैवैनआ  
 ननविरंचिकै॥ मनकीमरोरनसोमैरगिरिमेद्योमनरसोनितचिंतामनिचिंताचितसंचि



79A  
 कै॥ ईरवाकै अं चतनतापी अपनेचरुचिना वी है नर चतरु पंचरहे वंचि कै १११ यथावा स  
 रतरु पंचतालैरहे परपंचमधि कामधेनुसुतालै पेयियतरु है पाहनपरसमनिकौ सतभ  
 चिंतामनिकौ नपै पठाऊव पुचिंता सों जरुद्र है ॥ मेरोमतो मानिपिय जयसिंह ऊपै जाहु  
 वांचतही छिनमेरी गोरकी फानर है वानीको वरद कलिदोषको वरद कविदरिदरुद  
 मरदनको मरुद है ॥ ११८ यथावा ॥ देखियत वासे मालमहागन वासे मधिमनके सखासे जी  
 ते नैनदुरकी नके ॥ गतिहि प्रपंचतसे नटजिमनंचतसे वंचतसे नाचनटी सरपुरकी नके  
 वकसैतं वेला भूपदान मूलवेला मै से सरवी मै राकी ता जी ते जी तुरकी नके ॥ धावत  
 मै मुखते कढत फेरि स्रावत मै पीठि परलेत ते ईफै नपुरकी नके ॥ ११९ अथ लाटानुप्रास  
 ल॥ सव अर्थ इकरूपत ऊतात परिजको भेद ॥ कहिलारा नुप्रास करि करि करि अधिक ऊमे  
 द ॥ १२० ॥ याके भेद कहित है ॥ बहुपद इकपदको वरनि एकर भिन्न समास ॥ मरु समास  
 स्मास मधि होत नामही पास ॥ १२१ इति विधि पंच प्रकारको है लाटानुप्रास ॥ ऊदाहरन सब  
 कहितें होजिन तै होत हुलास ॥ १२२ बहुपदको लाटानुप्रास ॥ जास समीयन राजति वामद



वानल है हिमदी धिता कै ॥ कोरि कानंदकारी कहानि हिचंड वियोग तपै तनु जा कै ॥ कोरि क  
 आनंदकारी कहानि हिचंड वियोग तपै तनु जा कै ॥ १८३ यथावा ॥ लटियत मै से ही म्र कै लै सुख  
 रासि प्यारी बाचीवनकारी पिय संगर सम से हैं ॥ उन के सनेह लही एक रूप ताई ताते भवन  
 वसन उन ही के संगल से हैं ॥ उन परि रंभ नि की चायन लई है कसि वे रूप रि रंभन की चाय  
 न सो क से हैं ॥ उन मै वस्यो है तन तन मै व से है वै उन ही मै वस्यो मन वे ही मन व से हैं ॥ १८४  
 यथावा ॥ चंदन मंगुल पेटी महा सुख चंदन मंगुल पेटी के जी जै मालती फूल नि से ज  
 विषय विलोकत मालती ओ सुख ली जै पीवत चाकुच कोर सुधार स सो व सुधार स सो  
 न नि पी जै ॥ चांदिनी पै सुख चांदिनी कै संग म्र जु की चांदिनी देखि वौ की जै ॥ १८५ एक पद  
 को लाटानु प्रास यथा ॥ वदन अही व्रज बाल को सां च सुधा कर म्र ॥ कहो सुधा कर कौन  
 पुनि जिहि कलंक दर सा ॥ १८६ यथावा ॥ गुन गन ग्यान देत आनंद वितान देत रीति कवि  
 तान देत वे स गज वाजी है ॥ प्रीति करि पान देत के तो बहु मान देत लोक सन मान देत संप  
 तिस माजी है ॥ रसि कर सीन सुख जोगी द्वारत कि म्र ई क विराजी ओ नि वाजी है तेरे दान



आगे कवि होइ होइ रीनीयातै दीवे कह कीरति न साल नव साजी है १८८ यथावा ॥ कीरति वि  
 मल कुलवनिता ज्यों सय रहत हिय नहि हेत पनवनिता ज्यों वितके ॥ पंडित के दास मूढ मति सोऊ  
 दासर है धोले दिल धिलवती साधु जन वितके कवि पै जपाल नंद लाल से नृपाल कलिका  
 ल मै नम्रान मान दाता गुन मितके ॥ रूह की घुरा कजिन म हंगे कवित्त की घेहि मती सौ कि  
 मती जेगाह की कवित्तके ॥ १८९ एक सौ सै यथा ॥ चंड मरीचि न मी विप्र चंड प्रताप प्रभाच  
 हुंडो रवि राजै ॥ है हिमदी धिति सीतल कीरति आनंद मोघ समाजै ॥ भतल मै कमला पति  
 तुल्य महां कमला सुख वैभव साजै राम सुवाल मही पति पाल मही पति मौलि गुनीनि  
 निवाजै ॥ १९० ॥ भिन्न समासै यथा ॥ तिष्य प्रभाकर की सी प्रभा मरिदा पद्म मायनि सातम  
 थंडै ॥ ज्वाल मरी सुदवानल ज्वाल सी सत्रु मही रुह वंद विहंडै ॥ चंड सदा गति सी गति चं  
 ड विपश्च वितंड घटा नहि मंडै ॥ राघव वीर मही पति के कर तेज मरी ससिते जनि धंडै ॥ १  
 ९१ ॥ समास समासै यथा ॥ राम भूपाल कृपाल तव भवन मरी चहुं कोद ॥ पौनव कम  
 ला कनव सी कमला कनति विनोद ॥ १९२ ॥ अथ जम कलषन ॥ भिन्न अर्थ के पद जहां स

मा



नियतवाहीरीति॥ तादिवद्यानतजमककारिकाविकोविदकारिप्रीति॥ १८३॥ चरनजमकस्ररुच  
 रनकोभागजमकपुनिजान॥ दूजेतीजेचहुयसोप्रथमहोइक्रममान॥ १८४॥ दूजेतीजेचहुय  
 सोतीजेचौधौसाथ प्रथमतीनहंसाथयोंसातमेदकाविनाथ॥ १८५॥ प्रथमदूसरेसंगसरु  
 तीजेचौधेसंग॥ प्रथमचरचेसंगसरुदूजेतीजेदंग॥ १८६॥ इतिविधिचरनजुजमको  
 येनवमेदप्रमान॥ स्रनधवितिवद्यानतोंसकलाव्रतिसुजान॥ १८७॥ प्रथमचरनयादिहि  
 लैयावे॥ दुइतियचौधोयादिमिलावे॥ दूजयादितियचौधेपावे॥ तीजयादिचौधेरुसभा  
 वे॥ १८८॥ प्रथमयादिचहुंयादिनमेले॥ प्रथमस्रंतनिसवस्रंतनिमेले॥ इतिविधिवीसमेद  
 दरसावै॥ मिलतपरस्परवहुतसहावै॥ १८९॥ जहांकाष्ठकाजदाहरनदीजतहै॥ हैसरसेसरसी  
 रुहसेरसभावनसेवनसेवनसाऊ॥ हैसरसेसरसीरुहसेरसभावनसेवनसेवनसाऊ॥ जेवस्र  
 धारतलालचकोरनिनंदतनैनघरेदरसाऊ॥ जेवस्रधारतलालचकोरनिनंदतनेनघरेदर  
 दाऊ॥ १९०॥ जोगिरजाहरयायेंहराहरभोगिनकोवनसोंकरहैयै जौभवपानदसौमहिमा  
 लयभाजितभालहैकामदगैयै॥ जोगिरजाहरयायेंहराहरभोगिनकोवनसोंकरहैयै जौ



८१ भवपादसोमहिमालयमासितभालहैकामदगैयै॥८०१॥ तेजतपैतपनोपमतीधनकीरति  
 में चंद्रप्रकासलहीहै॥ जाचकरावकरेतनवारिधिरज्जनमामहिमापुनहीहै॥ अत्रधुरदुरराम  
 मुवालधरोरितुदानदलैलसहीहै जाचकरावकरेतनवारिधिरज्जनमामहिमापुनही  
 है॥८०२॥ सोमलहीवनतानवनाइकहैरुचिलीनगुमानरुखाई॥ जोवनजोतिसोजेवउ  
 जागरीनागरीनारिनकेमनभाई॥ सोमलहीवनतानवनाइकहैरुचिलीनगुमानसोखा  
 ई॥ चंचलासीश्रितिवंचलश्रंगनिचंदमुखीचितचैनरचाई॥८०३॥ अर्द्धाव्रतिकहीश्लेषव्रति  
 यथा॥ वसईकईलासविलासनभक्षितचंदकलारुचिभासितभालै॥ नामसदाशिवदी  
 नजगैश्रीकंठविराजैसुजानरसालै केलिकरीव्रजभतनकेघनस्पामहरागरमा  
 निकपालै॥ कामदहैगिरजाकरहैचहिंगोकुलकीतियनैनविसालै॥८०४॥ वसई  
 कईलासविलासनभक्षितचंदकलारुचिभासितभालै॥ नामसदाशिवदीनजगैश्री  
 कंठविराजैसुजानरसालै॥ केलिकरीव्रजभतनकेघनरूपहरागरमानिकपालै॥  
 कामदहैगिरजाकरहैचहिंगोकलकीतियनैनविसालै ८०५ पादादिजमकयथा जौर



तजेकनकावलसैतनुनारनिकेतिनतोकविश्रागै॥ जौरतजेकनकावलसैतनसंपतिजोतिच  
 कीजेवनिलागै॥ वाजीसवोजसीवातनिहंपनलायरखोनरीगित्योंजागै वाजीसवोजसीवा  
 तनिहंपररामभपालदियोमनुनागै॥ ८६ चतुसपादादिजमकयथा॥ आलीसुवासनसा  
 वनकीवहुफलेकदंबनिराजतिहै आलीसुवासनसावनकीरितुमेघसमहानिसाजतिहै  
 आलीसुवासनसावनकीमनचारिहुओरसमाजतिहै॥ आलीसुवासनसावनकीपपीता  
 निकीपंकतिगाजतिहै॥ ८७ चतुसपादांतजमकयथा॥ मानसरोवरतेविछुनायकेलेति  
 हैहंसिनकेवरजेहरि॥ वाधुनिकेसुनिकेमुनिकेमनकीमतिहोतकितीवरजेहरि कालि  
 हीतैवेगुलावकीसेजनिलेटेफिरैवहुमैवरजेहरि॥ तंकाहंकेजगलीनिमलीविधिज्यो॥  
 मनकायचलीवरजेहरि॥ ८८ दोहा॥ इहिविधिविविधविचित्रताकरिकैरहतवनाय॥  
 जमकाकाविगडुरुपहैकसोनस्रतिस्रधिकाय॥ ८९ स्रष्ट्रस्रष्ट्रलक्षण॥ वाच्यभेदकशिभि  
 न्नजवभनियतएकअचार॥ हैजवढेसेसदसोस्रष्ट्रजुआठप्रकार॥ ९०॥ काहितवरण  
 पदलिंगस्रष्ट्रभाषाप्रकृतिवसानि॥ प्रत्ययसौरविभक्तिपुनिवचनस्रष्ट्रविषयजानि॥



८११ वरणाश्लेषयथा॥ सोऽति समुलवारीरुचिरंगधरैः ऊततचटतनिहारीकैः ऊवरहै  
 मंकरतिगीनीसुनचरनजेहरीठईपरतिस्त्रातिनमैजीयहितकरहै काननिसषीपडीठि  
 वांकीभाऊमंडलसीदेतमोललीजियतभलकारीगरहै करतसमनरसकेलिसौभरैनिसं  
 गसरसोहैगुनधनुवेलिजाकैकरहै ८१२॥ धनतियधनुकाहिधनुषैहंकहियतएकअचार॥  
 यहैसकारअकारडुहंवरणाश्लेषप्रकार॥ ८१३ पदश्लेषयथा॥ सरसावतभीमकरीनके  
 जालनिधूमसुयोनिनिकोदलभारो॥ वेसकरैनुविलासकैदेवतकोरिनिश्चापकोसंपैनिहा  
 रो॥ धूमिपरीशक्यौरहजारनिमसेकनकनसंयहवारो भवनदुभरदेइवहैसंवैएकसो  
 गेयइमारोतुमारो ८१४॥ लिंगश्लेषयथा॥ भक्तविलोचनकोमनुरेजिनीलंबुजसोभरसा  
 ररुकोरै॥ ध्यानमलंवनजानयहीहितसाधनिजोगिनप्रानमकोरै॥ जेवरसालततश्चि  
 नलक्षियकेमनमानमैधीरजतोरे॥ स्पामलसीकुवलैरुखदातनुनैनकटाशकरोरु  
 भकोरै॥ ८१५॥ तिहंलिंगकेसदयेहैतनुनैनकटाश॥ तिनसोलगेविसेवनसुतैसीहो  
 विधिभाव॥ ८१६॥ लब्धवचनश्लेषपुनियहैरुमतिगरचित्त॥ इकडुइवहुवचनि

३

वादि



दि कति

तपहीलगहिंविसेवनमि॥ ८१७ ॥ भाषासलेष्ययथा॥ मोहितजहिमतमंदतामयनदेहिललितनिज  
 पदविषेदन॥ मंतरजंतसीउजनजानतवहुतमतोदमघोषजघेदन॥ भवजनभेजठतापहार  
 कोविनतोदयासिंधुरहिभेदन॥ भातमदीयमानसेवानसमासुभवानजरोवहुवेदन॥ ८१८॥  
 यथावा॥ सातिदिनाकरलीनमहागिरजापरमोरकतहलधारी॥ कंठहराहरकीलंकुटी  
 तनुनीलमसीरुचिरंजनकानी॥ कामदयारहितोवनगोपतियानउदारकलानिधिभानी॥  
 भावनिजाचितसरवसुनाधिकोतुमनोनितरामरिहानी॥ ८१९॥ एकसौरभाषासवदसरवा  
 नीरुक्कौर॥ डहंमिलिऐककवित्तमैचमत्कारचितचौर॥ ८२०॥ सैसेसौरभाषाहंसलेषजानि  
 यो॥ प्रकितसलेष्ययथा॥ सैनितिफरतरंगभरीश्रिकारेकविंदकानी<sup>२</sup>निठाही॥ चारहंसौर  
 वटोणजससौरकलोलकुलारलकेलिकारी॥ रामभपालकृपानितरंगिनपानिपतीधनता  
 ईसरई॥ धारमहाविकरमरहैघनतेजवहैरिपुकानभाई॥ ८२१॥ नदीवहैपरवाहसोम्र  
 सिजुवहैकरिवार॥ डहंसूर्यवरहातईप्रंतथसलेषविचार॥ ८२२॥ प्रत्ययसलेष्ययथा॥ का  
 मतरोवनहैतुवनामलहैफलैजोईकहैमुखवानी॥ मोहिरतोचहिघैसवहंतीपुनिकाकरिये



तुमहोवड्डेदादेनी संकरजपदपंकजपाससजैमतिनेदिताभावहिमानी॥भूरिजराजनि  
 नादिकभीतिभजोभववंदितामातिभवानी॥ ८२३॥म्यानंदितमतिनेदितामरुनेदीकोभाव इ  
 त्प इनदूनेप्रलैषनकोसलेषकरतदनसाव॥ ८२४॥विभक्तिसलेषयथा॥करिमाम्नामरति  
 निवर्तनहैतुवनामसदातरनी करुनाहियमैनिठुराववटावनकोनवदीपहम्राचरनी ह  
 रिसरवसतंतममेजगमैधरनीधनसंपत्तिकाकरनी मपनेपदपंकजफरनप्रीतिप्रतीतिनहीक  
 हंहरनी॥ ८२५॥रूपतिंडरूपविभक्तिहैकरिहरिसवजचारि॥उहंसर्थकीकारिततेमपनेहिं  
 येविचारि॥ ८२६॥वेचनश्लेषकारिमायेयथाकादोह॥चंदउहंदसरथकुवरतिनकाटाशम्रवदात  
 नीलकमलवनवंधुरुचिसवहीमनसरसात॥ ८२७॥विनिर्निभेदनिमैरहंनवोभेददरसा  
 त॥अपमानरुजपमेयकैजहांश्लेषमनमात॥ ८२८॥यथा॥जोवहुवारलजपरभभ्रतपष्षेदप  
 रसीसपरिंदा॥घनघनघटासैनचतुरंगनिवरसतसंगधाराजलबिंदा॥धरतकठिनसत  
 कोटिदानकरचटिचटिअन्नतमृतुलगयंदा॥होतुमसुमतिसहसद्गदेवतद्युतिरमिपुरं  
 दरविबुधनिहंदा॥ ८२९॥मयचित्रलक्षण॥सगगमुरजपर्थादिकोजहांसमानमाकारवरन



परहिमानंदवनचित्रसालवोअदान॥ ८३१॥

॥ हलै ॥

दखरदखरदौरिहैनखनसखनवाह मखनकारखरसौरिहैखवर  
॥ तोरणवंध ॥ सखरमाह ॥ ८३२॥

द खर द खर दौ खि न खर स खर वा ह

म क श त स मा

चक्रवंध

कराणकरकारिपरतकल  
धौतमकतहैजात सगरीर  
सिकाईतजेसजेमलीनीकते  
॥ ८३३॥



मदगवंध

॥ ८३४ ॥

करिवनकरि ॥ ८३५ ॥

दखरदखर  
परपुखदमद॥  
सखरसखर  
करिवनसखर  
दसहदिसनप्रति  
करिवनकरिहद  
मलदतसखरक  
रादधिवरदो॥  
८३६॥







85

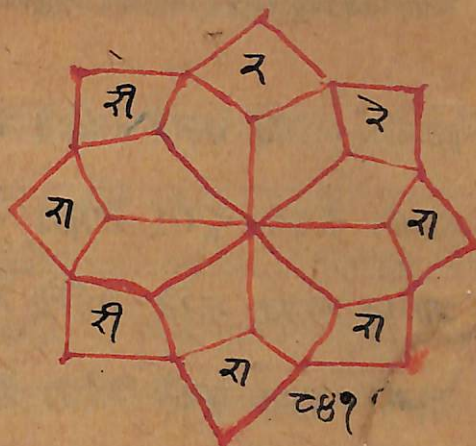
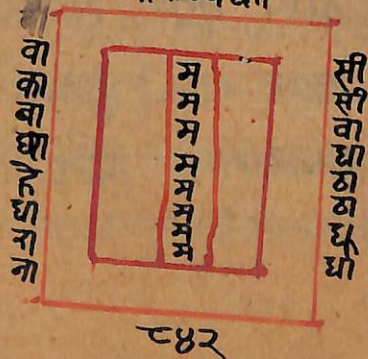
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



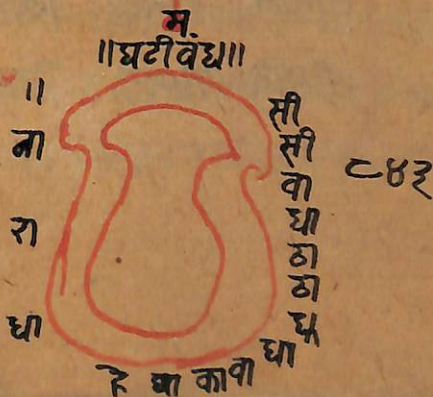
॥ अष्टदल ॥



॥ कपाटवेद्य ॥



॥ घटीवेद्य ॥





एकान्तसदैव्या॥ सेससुनेसससीसवसीसवसीसससीससनासविसाये नाविसयेससनाससीसावसेसावसनाससेसावसाये॥  
सुनसुनयेसवसेससनासुनसुनयेसावसेसावसाये॥ सवसेसावसेससनेसीसीसीसेसावसावसाये॥ ८४४

86

वहु	ज्ञानन	नायक	स्ररतै	सोहियै	नैनके	रोचक	धाम	जगीले	०
सहु	दानन	दायक	दूरतै	टोहियै	चैनके	लोचक	वाम	लगीले	०
गुन	गानन	गायक	मूरतै	मोहियै	मैनके	सोचक	नाम	पगीले	०
अन	मानन	लायक	प्ररतै	रोहियै	गैनके	मोचक	राम	रंगीले	०

284

पर	पीरनि	हारक	चित्तिरि	ध्याइये	ध्यानके	जागर	आस	विकासैं॥
वर	धीरनि	धानक	नित्तिरि	गाइये	मानके	नागर	वास	सुवासैं॥
पर	वीरनि	दानक	कित्तिरि	ध्याइये	आनके	आगर	दास	हुलासैं॥
नर	भीरनि	तानक	वित्तिरि	पाइये	ग्यानके	सागर	भास	विनासैं॥

८४३



अथ पुनरुक्तवदाभासलक्षणाभिन्नाकारसद्वगतजहां एकारथतासीभासै पुनरुक्तवदाभा  
 सवधानतजिनहियबुधिविकासै॥ ८४७ ॥ कवितसभंगस्रभंगरुकेवलत्रिविधिसवदगतहो  
 ई॥ पुनरुक्तवदाभासतीनिविधिवरनतकविसभकोई॥ ८४८ ॥ यथाकवित॥ वसुमतिभूमि  
 वसुधामहिमवनीधमांधराधरनीरसाधिसंजुतसुहातहै पंकजातसारससरसिजसरो  
 जरसोसरमित्रलोकवधभासमानगातहै कुवलैहुलासीसोमहिमकरसीतकांतिकला  
 निधिसुधामैनिसेसरसातहै हरिमघवानसचीपतितैसरसनैनविबुधधनिईससवर  
 सरसातहै॥ ८४९ ॥ यथाका॥ मनमथमनोभमदनरतीसरकामपरदिसमनविषमायुधस  
 मरहै॥ त्रिदसासुपवगीरवानलेषदानवारिनिजुरसरविबुधसुधासीस्रमरहै मंडलगावगत  
 रवारिकिरपानिकारवालचंद्रहासकरदानधाराधरहै॥ नपुपतिभूपतिनदेसनपभपरहै  
 नदेखेकलपतरुकामतरुसुकरुतहै॥ ८५० ॥ दोहरा॥ येसबालंकारसभमैमलकोहेवखा  
 न॥ अथार्थालंकारकाहिदिखायेंहांअन्यान॥ ८५१ ॥ कवितयाशीर्वादको॥ अचलसुता  
 हियलसतहसतलखिनगननगनगन॥ जन्ममरनदुखहरनधरनलखितिपुनपुलकतन



भालमनलकियकोपिअसमसरसंगमसमभन॥ ऊनहिमालकपालरुहिरविकरालपानि  
 पन॥ अतिसुभगसुधाकरखंडजुतसीसवसइसरसरिसरस॥ जयसेकरलालकविंदघ  
 नदेहुसकालरसमयदरस॥ ८५२॥ इतिश्रीमनमाहाराजजयसिंहगुप्तकविकोविदकदा  
 मणिश्रीकृष्णभट्टकविकलानिधिक्षतेमूलंकारकलानिधोसकालंकारनिरूपणे  
 कादशीकला॥ ११॥ अथअर्थालंकारनिरूपणं॥ कवित्वाशीर्वादको॥ कामतरु  
 जंगममहाईजानकामधेनुचिंतामनिचेतनयेनामलहिवोकै॥ सुधाहंतेष्पारीचंद्रि  
 काहंतेऊष्पारीकलकीरतितिहारीकविराजकहिवोकै॥ अतुलममापतीधेतेगतेप्र  
 तापतेजदुषदुवननिकेदिलनिदहिवोकै॥ नामचंद्रभपतुमकामवनदाताएकसेकर  
 कैसेवतनिसंकरहिवोकै॥ ८५३॥ अंदा॥ रघुवनभपकित्तिकेकवितनिलषिष्कठैवैवहुत  
 प्रकार॥ भाषाभावलयअरुलखनवारिहोमूलंकारनिरधान॥ ८५४॥ अथमूलंकारगता  
 वतहै॥ कवित्ता॥ अपमामनन्यवहुतिअपमेयोपमाऊत्प्रेक्षासंदेहरूपकवसानियै॥  
 ऊल्लेखरुपरिनामअपनृतिसलेखकहिसमासोक्तिनिदनसनानीकैकरिमानियै॥ अ



प्रसूतपत्रसंसाधौ अतिसयोक्तिजानिप्रतिवस्तुपमायौ रद्व्यांतरिजानियै॥ दीपकरुतुल्ययो  
 गिताकव्यतिरेककरिआशेषरुविभावनाविसेयोक्तिआनियै ८५५ जथासंख्यसंयोजनन्या  
 सम्यौविरोधकरिस्वभावोक्तिव्याजसूतसहोक्ति लेखियै॥ विनोक्तिपरिव्रतिभाविकरुका  
 व्यलिंगपत्रयायोक्तिऊदातरुसमुच्चयदेखियै॥ पर्यायरुसनुमानपरिकरव्याजोक्तिप  
 रिसंख्याकरनमालारिपुनिदेखियै अन्योन्यरुऊत्तररुसमसारसंसंगतिसमाधिरुस  
 म्यौविषमसुवरेखियै॥ ८५६॥ अधिकरुप्रत्यनीकमीलितस्यै॥ एकावलीसुमिरनभ्रांति  
 मानप्रतीपदिभाखियै॥ सामान्यकविसेवरुतदगुनसुतदगुनहंत्वाघातस्यैसंकरसंश्र  
 यिऊरनाखियै॥ एतेसंश्रयलेकारम्भमटकैमतकरिराखेकाविप्रकासमैकाविजनसा।  
 खियै॥ इहैलक्ष्यलक्षणकैवरननकैहोजहांरघुपतिकितिकारिवेकोअभिलाखियै॥ ८  
 ५७॥ अथअपमाअलंकारलघना॥ अपमेयारिअपमानसोकीजैजहोसमान इकसाध  
 ननधर्मकरितहंअपमाकविजान॥ ८५८॥ वरगनीयअपमेयहैअवरगसोअपमा  
 कासमसमानज्योसरूसयेअपमावाचकजान ८५९॥ साधारनधर्मजुडहुनिरहैध



मरकभाउ॥ फरनलुप्राभेदकरिअपमाद्वैविधिगाउ॥ ८६० ॥ अपमानरुअपमेयस्ररुअ  
 पमावाचकमान॥ पुनि साधारनधर्मजहंपरेणपमासुमान॥ ८६१ ॥ एकदोयस्ररुती  
 निकोजहांकीजियैलोप॥ तहांहोयलुप्रापमादेतजुववितनस्रोप॥ ८६२ ॥ सवलुप्रापमाभे  
 दगनावतहै॥ वाचकलुप्राप्रथमवखानहु॥ फेरिधर्मलुप्राजियजानहु॥ होयधर्मवाचक  
 लुप्रापुनि॥ वाचकोपमेयकलुप्रासुनि॥ ८६३ ॥ स्ररुअपमानलुप्राइकाताकहु॥ धर्मापिमा  
 नलुप्राभाषहु॥ स्ररुवाचकोपमानलुप्रा धर्मापिमानवाचकलुप्रा॥ ८६४ ॥ लुप्रास्राठ  
 प्रकारयेस्रकविनिवरनीजाउ॥ अपमामालारूपजोमालोपमासुमान॥ ८६५ ॥ प्रथ  
 मप्रथमअपमानजहांपरपरप्रतिअपमान रसनोपमावखानतहंसनादामसमान  
 ८६६ ॥ स्रथफरेणपमाउदारन॥ द्वारखरेमहकुंजरगमतनाचैसैराकीरुस्रारवीकथी भी  
 तरभोनजवाहरजोतिजराअजरेपिंजरानिमैपथी॥ श्रीरघुवीरभुपालतुहैसपनैहु  
 नखाउतिहैजयलथी॥ सापुप्रभाववसीक्ततकंताहिसाधीननायकाज्योहरिनथी॥ ८६७  
 यथावा॥ सीतलविमलमधुनाईकोनिधानस्ररुस्रधाकेसमानजाहिकौननपियतहै॥



दारिदरदकोहरनसुभवितरनयाहीतेललामतिहंलोकलघियतहै॥ कोरिचंडकरसेप्र  
 चंडतापतेहभरेविरहतिहारेजवजवतपियतहै तवैसुमिरनकरजयसाहभपनारायन  
 कोसोतेरोनामजपियतहै॥ ८६ यथावा॥ ठाढेरघुवीरभपदारगजगाढेजिनसंगमद  
 जलधलधलधलकतहै देखियतभारेदंतवलयरूपारेनभतारनिकेकुंडलमलमलमल  
 कतहै संडकोप्रचंडपौनव्यौरविधुमंडलतैसुधासातकैयौधलधलधलकतहै जैसै  
 राजपाटस्रभिषेककैसहसधारकलसतैवारिवलवलवलकतहै ८६ यथावा॥ दीने  
 रामचंद्रभपसदमदभीनेगजपोरकेधरतजिनभतलहलतहै मेघसमगाजैसुनदि  
 गजहंलाजैभयसाजैपुरहूतैकोहियहलतहै ठाढेमेरुमंदरवलंदवपुवाढेस्रतिगा  
 ढेरनकाजैस्रिचदनअकलतहै संडभरिआडैनभकुंडजलधारतापैवादीकेभोवठारवि  
 विंवअलतहै ८७ यथावा॥ मेसैरामचंद्रभपदारगजवासेवासेपरमप्रकासेरजार  
 सिक्कीरमासेहै॥ धिततलधहोरितुधिरतदानजलधलभरेशाहभरेशाडतधमासेहै मे  
 चकस्रमासेकालजामकीजमासेदेविदिग्गजदिसानिजासेहैसुहगवासेहै॥ सुनससि



मंडलकी संड जल धार पर गिर हिक वृत्त रज्यों करत तमा से है ८१॥ लुप्रा के अदाहर्न ॥ दामि  
 न गोरी मनोरुल होरी की वै सों भोरी सुधा सम वैनी ॥ होतिस फरक फर सला कवियोग  
 तची सुखियोग जगैनी ॥ हावनि भावनि तास विलासनि हारि गई रति आनंद दैनी नंद कुमा  
 र रंगी गुनरावरे आनि है आहु व है मगनैनी ८२॥ टीका ॥ या कवित्त मै दामि न गोरी यह  
 वाच कलुप्रा ॥ सुधा सम वैनी यह धर्म लुप्रा ॥ होतिस फरक फर सला क यह धर्म वाच कलु  
 प्रा ॥ ति तीर्य वर्न मै वाच को पमेय लुप्रा ॥ मगनैनी या मै धर्मोपमान वाच कलुप्रा जानि  
 यो ८३॥ उपमान लुप्रा यथा ॥ तन मन सुख विसराम कर लखि विलासनि दान सरस  
 कावि सम अंस दूक दून सनियत आन ॥ ८४॥ धर्मोपमान लुप्रा यथा ॥ कंटक कलित  
 केतकी केवन कौ लग कल कंजति अधि कै हो ॥ कुंद कली निकेलि करि कव दू वरु मकरंद  
 पान नहि कै हो ॥ वंचन जुही कांनन निकव के फिरत ले सु कौन रूपै हो ॥ ललित मालती फ  
 ल लल सुलि ममत ममत कत दून रि पै हो ॥ ८५॥ वाच को पमान लुप्रा यथा ॥ नवल मद्गज  
 मंय गति जग मग जोवन जोति ॥ नाहने हस गव गिर ही दिन दिन दीपति होति ॥ ८६॥ अ



भिन्नसाधारनधर्ममैमालोपमायथा॥ राजसिरीजिमहोतिम्रनेकरिदीनतासोजिमपेडतवा  
 नी॥ ज्यो नलिनीहिमदाहकेमाहकुमेदिनिरविश्रातपश्यानी॥ ज्यो यनघोरिघटानिसो  
 चादिनीज्यो निससामरेपञ्चप्रमानी॥ त्योंपियनंदकुमारतिहारेवियोगमैवालविश्या  
 हिवितानी॥ ८७॥ भिन्नसाधारनधर्ममैमालोपमायथा॥ चादिनीज्यो द्रुगशानंदहेरिसुनी  
 ज्यो हिंयेमदकाननसोई॥ हेप्रभुताज्यो वसीकृतलोकलसैरतिज्यो बहुभावनिभोई चंप  
 कदामसीसंगललामगुलावसीकोमलरूपसोंधोई चंचलासीम्रतिचंचलवालवि  
 लाकधरैनहिधीरजकोई॥ ८८॥ यथावा॥ हीरासीहरासीहरदेहसीहलायुधसीह  
 हंससीहसीसीकरकासीघनसारसी॥ सारदसीनारदसीपारदसीपयसीप्रयसी  
 हिमाचलसीरूपेकेपहारसी॥ मोतीसीकुमेदिनिसीकेतकसीचंदनसीमालतीसीमु  
 ननकेमनसीमुरारसी॥ रामचंद्रभपतिकीपुन्यमईकीरतिसीफैलीहैजुनैयाम्राजु  
 गंगजलधारसी ८९॥ रसना<sup>सी</sup>पमायथा॥ कीजतिकेचनदाननिरंतरतासोतन्त्रीतिजा  
 चककीतति॥ राजतश्चरघुवीरमहीपतिदीपनिदीपनिदीपनिदीपतदीपति भाव



तीसीमतिहैमतिसीकरतुतिकरीकरतुतिसीकीरति॥ कीरतिसीमनऊजालहैतनसीधिरई  
 सऊपासनकीरति॥ ८८०॥ यथावा॥ राचिरहीरतिसीमतिहैमतिसीमधुरीश्रुतिभूतिनाजै मरति  
 सीभवभरिप्रभावनिभूषितजाससभासससाजै भासीसभासीसदाजयसंपतिजीतिसकैप  
 रकोजिहिकाजै॥ श्रीरघुवीरमहीपतिवैजयसंपतिसीवपुदीपतिभ्राजै॥ ८८१॥ अथअनन्वया  
 लंकारलघन॥ जोऊपमेयवधानियैसोईजहंऊपमान॥ अनन्वयालंकारसोभासतसुकाविसृज  
 न॥ ८८२॥ यथा॥ दार्णिपरिममतिहृदमहिममतिपानिपपरजहानबिहालहै॥ कीरतिकोमुदीदे  
 तप्रसेदप्रसाधप्रभानिहस्योतमजालहै सोहैसरदुमतुल्यसुन्दुमराजतसिंधुज्योसिंधुविसाल  
 है॥ चंदसोचंददिनेसदिनेससोरामभुवालसोरामभुवालहै ८८३॥ यथावा॥ ईगुनकीझाड  
 लाललस्रतिविसालभालभकुटीसरालचापधरतमदनहै॥ गोलगुनगारेलोलललितक  
 पोलचारुचौकाकीचमकाधईनदनघदनहै॥ स्रानसमेततऊसावसदलिनरुचिसारस  
 सीसनमानसारससनहै॥ चंदनसमानसीरौचंदनसनानतातेराधेकेवदनसमराधेको  
 वदनहै॥ ८८४॥ यथावा॥ मीननकेमीतमैनवाननकेवेधुखीजरीटनकोसवानीलकंजनकेने



नरहैं भोवनकेभेयासगद्याननकेनवानकोहेनंगसागरतरंगनकेचेरेहैं चातकानहंकेकुलना  
 यकचकोवनकेआचारिजसचिरजरूपकेवसेरेहैं नंदलालप्रीतमकीप्रीतकेप्रतीतिकारितेरेनै  
 नसैसेमालीदेवेनैनतेरेहैं॥ ८८५ यथावा॥ अमंडसरितासनमेहलगैजिमिनेहलगैअमंडो  
 चितुहै निसवासरसैससिस्तरदवेतियलाजरहीदविधोकिंतुहै॥ दुमगुलमलताअम  
 गमतिज्योअमप्योनरनारनकोहितुहै पियनंदकिसोरमिलावनकोवनसारितुसीवर  
 वारितुहै ८८६॥ अथअपमेयोपमालक्षण॥ अपमेयकअपमानजहांअलाटिवरनियेफेरि ताके  
 अपमेयोपमाभाषोकवितनिहेरि॥ ८८७ यथा॥ गैयतमित्रसवैजगमैकमलाकरआनंददान  
 समाजै॥ जासुअदैश्रतिदीहतमोहरहैद्विजचक्रनिमंगलसाजै॥ जीवनहेतुसुपंधिनकोमु  
 यमुद्रहिदेतुकमोदनिकाजै रामभुवालसेराजैदिनेसदिनेससेरामभुवालविराजै ८८८  
 अथअप्रेषालंकारलक्षण॥ वरनैप्रकृतहिऔरसोंकारिसंभावनकोय॥ मानोजानोसद  
 कहिसोअप्रेषाहोय ८८९॥ सोअप्रेषातीनिविधिवस्तुहेतुफलरूप॥ जहांसंभावनला  
 यकैअप्रेषाकविभय॥ ८९०॥ वस्तुअप्रेषा यथा॥ जोवनफल्पोवसंतलसैतहंसंग



लतालपटीमलिसैनी नाभीविलातजिजातिसुधाकीसुसुधीलखिनागीनिपैनी राजतिने  
मनिकीतनुराजीवहैरसराजनदीसुधदैनी सागैभईप्रतिविंवतिपाधैतेविंवितजोमृगनैनी  
कीवैनी ८८१ यथावा॥हिमकरकरमंगुनीनिगहिकचकलपातमसैन॥चुंवतरजनीमु  
वसंगोमुद्रितपंकजनैन॥ ८८२ हेतुअप्रेषा यथा॥मधिजामिनिमैमेनाउदानसहैजु  
होंदेखतजाहिसदाधनखी॥तिहिदुखमयंकहिजीतनकोइनकित्तिपियखनवीवनखी इहि  
हेतमुवप्यतिनाममुवालसरोरुहलखियेहनखी मतुनावरेपाइनजागिरहीकविनाजनिभागभ  
नीपनखी॥ ८८३ यथावा॥पानथकरनमुरुभरथभगीनथदैआदिवडेदानिजितेविधिनाउपायो  
है तिनकीसुजसमयपयकीतरंगिनीनिआपनोप्रवाहपयोनिधिसोमिलायोहै ताकेपानकीवैका  
जआपनेकुलव्रतसोषीरनीरभेदनकोभेदभलैयायोहै रामचंद्रभक्तिपालरावरोसुजसहं  
सइहीहेतमानोसिंधुतीनतकधायोहै ८८४ यथावा॥वालपनतेलैनितसंगीइनकोहोमयोमो  
हीकरिातीमृतिउन्नतिकोपायोहै॥मवयहरामचंद्रभूपकविमुखमोहिसुनतप्रमानकाहेजियमै  
लजायोहै कियेइहिकारनहीहिंयैमहंकारजसरूपीनिजसुनुमवलंविकेसिधायोहै पारावा



न पानतीरतपोवन सेवतहीतहां अति वरगुनगन विनमाये हैं ८४५ यथावा ॥ कीनी दीपमालिका  
 कैमौ सरजलसम्राजु नाम चंद्रमपमोनभासत सहाये हैं ॥ अजाथात शतुनी वने ठी रंगमहिलम्रौ  
 अंगन निदीपम्रधरुन धलौषाये हैं ॥ मेने जान सजस प्रताप अविदेधिन को सूरससिपावका अनेक क  
 पसाये हैं वाढत अजेने तेने नेने है घने रेजिन घनिके अंधे र अरि डेर निपठाये हैं ॥ ८४६ यथावा  
 टतहवाई दीह दौन की दवाई अंत निष अविच्छाई तारका से पनका से हैं छूटे मुय चप्पा चंद्रजोति की सवा  
 ई जोति छूटे हथ फल फल दीन घविका से हैं रामचंद्रमपघन दीपमालिका के नि सखाल घरे आतस के  
 भांति भांति भासे हैं जीति अरि भोनन को आये आ जमगे ठे मानहु प्रताप तेज कनत तमा से हैं ॥ ८४७ ॥  
 यथावा ॥ अलि आये वसंत छुटी हिम की जटताल गि आत पतावन को जट दंत न लागे मनोभव  
 तापत वै यह वात जतावन को ॥ रवि जानितु रंगन की जनि भूमिल ग्योदिस अत रधावन को ॥  
 रघुलागे तु रंग पुराने परेति न ही के मनोवदलावन को ॥ ८४८ ॥ यथावा ॥ कंचन की वारी ला  
 गे विलोकन वारी आ जु फलीवन वारी हिं यै आनंद की क्यारी सी ॥ चहूं सोरचाहि चारि आचरत  
 नाचि हैं यै चाचरत चंचल चकोर कैं चारी सी ॥ इन कै समीर मत्त मोरन की भीर अत कुंज

॥ फलोत्प्रेषा ॥

री



दिसा

यों

नतैदोरिदोरिदोरिपुनपानीसी॥ मंगनकैभासभवननकैप्रकासमुखचंदकैअजाससैंचीआवतसैं  
 ध्यानीसी ८१॥ अथससंदेहालंकानलक्षण॥ होयजुसंसयभेदकीअक्तिअनुक्तिप्रमाना॥ भेदअक्तिनि  
 अयगनभनिअयांतपुनिजाना॥ ८२॥ इहिविधितीनप्रकाशकोसंदेहालंकारा॥ भावतनर  
 कविताकुसलजिनकीबुद्धिअदाना॥ ८३॥ भेदोक्तिभैनिअयगर्मससंदेहयथा॥ होयदिनेसकि  
 धोमहिअपरवाकेतोसाततुनीदरसैं॥ कहिकैयहपरनचंदविराजतवाकोकलंकसदापरसैं  
 हैयहसागरधोंगुनकोतहांकैयुं कसौगुनहूसनसैं सुवराघववीरमुवालहिदेखिकाविंदन  
 संसयसौवनसैं ८४॥ निअयांतयथा॥ चंदयहहोयतो कलंककतषोयगयो कमलजुहोयतोस  
 नोवननदेख्योहै॥ नतिनतिनायहायआरसीजुहायतोसनेहलगैदूगोदूगोरूपकतपेख्योहै गोक  
 तगनोघैलघिगोरीकोश्वीलोमुखनंदलालपियअनसंसयविसेख्योहै ललितविलासहा  
 सकुटिलकटाछलाससौरभसनसपायसोईअवरेख्योहै॥ ८५॥ भेदानुक्तिभैसंदेहयथा॥ नंद  
 कुमारतुमैरचिवेकोविनंचिकिधोंरुचिरंगीसुधाकरा॥ कैधोंसिंगानहीएकधरेनसआपुम  
 नोजकिधोंकुसमाकरा॥ वेदअभ्यासहीकेनससोंविषयानसहीनलियैजटाकरा॥ कैसेपुरातन



मृदुनैचैमंजुलकितिप्रतापकोशकन॥६॥यहीसुसंदेहालंकारयथा॥मंजुमनिमानिकके  
 मंसुकेवितानकीकिफननप्रतापचंडमानकेप्रमानकी॥कीरतिकलानिधिकेचारुचंद्रकानकी  
 किदामिनीसेकामिनीकेमंदमुसकानकी मंगावतीश्रीभावनिदिखावतीतीयानिकीकिदंतदु  
 तिदीधितिसुधानकेनिधानकी रामचंद्रभपतिकेभानदीपमालकाकिदीपदीपदीपतिदिपत  
 दीपदानकी॥६॥यथावा॥दीपतिदिवासीसीदिपतिदेहदीपतिसांदामिनीसीदमकैनदिनहं  
 दुनतिहै राजतिमंगतरुनाईकैतरंगरतिरंगकैरुमंगमंगमंगमंजुनतिहै अतरकेसौरभमैत  
 रहैरहेहैंअतिसतरऊरोजदेखभलीगतिमतिहै॥देखोलालरूपधनैरूपहैकिनसहैकिरंग  
 हैकिरंभाहैकिनमाहैकिरतिहै॥६॥अथरूपकालंकारलक्षण॥रूपमानरूपमेयकोहैन  
 परसपरभेद॥अलंकाररूपकवहैहरतकाविनकेषेद॥६॥एकजुसांगवसानियैवियो  
 निरंगवसानि तीजोहोयपरंपरतिमैसेभेदनिजानि॥६॥अथसांगरूपलक्षण॥सर्ववस्तुविष  
 यसुजहांआरोपितसवमर्थ॥कहियतअपनेसदकारिजानहुसकाविसमर्थ॥६॥कितनेस  
 वनिभाषियतकितनेमर्थग्रहीत॥एकदेसवतीससुनिरूपकाविदुधनिप्रीत॥६॥समस्तव



॥ सोभितसुमगसुमसौनभकोभनहै ॥  
॥ मिल्योइनिहितकविको २

८३

१३

कविषयसांगरूपकयथा॥ कविता॥ सुमनसमहमनवेंछितलहतजातेतलम्रवलेविनुतुनतता  
पहरहै सुषदम्रनेकसाखावावेद्वज्रवंदनिमैविदमलिंदनिसोंसफलसफलमलसंकरकोबर  
है बालपनतेरसालधरमकैमालवालसोहियतनेदलालदेवतरुवरहै॥ ८१३॥ यथावा॥ सो  
हतधर्ममलमंजुमतिमालवालनीतिधिरधंभयहरीतसुषदायये कीनतिम्रनेकसाखपत्र  
गुनकोमिलासफलभलेम्रभिलाषनीकेकैलयाइये मंगलसमहफलफलितललितम्रति  
पैसनसफरनविलोकैसुषपाइये॥ जाकीछांहघनघनसेवतविबुधवरनामचंद्रमपतिकाल  
पतरुगाइये॥ ८१४॥ यथावा॥ लोचनवदनकरचननकमलफलेकलम्रलिकावलिस्रलिन  
केनिकरसी॥ कुचकेकपटकोककोकीकेजुगललसैंतानलताललिततरंगततिदरसी दीनय  
नितंवडुहंतीननिविनाजिनहीत्योंत्योंम्रतिवढीज्योंज्योंनेहघटावनसी॥ सारीजरकसीकीग  
लकसोंगकोरेलेतसंदरीलसतिसोभासुधानससनसी॥ ८१५॥ एकदेशवर्तीसांगरूपकयथा  
वलनिधिनपरघुवीनजवैद्वगंजतिरिसनसकेभरमैं अहिंपहलमिलनरनरंगमहलप  
रंदीपदीपतिघनमैं॥ तवरमकेगमकेवरविजुलतासमतेगविलासकरतिकरमैं नससन

ताप



मुखहंपरसैनजातफिरिसनमाइलपलकौनरमैं॥ ८१६॥ अथनिरंगलघन॥ कहिनिरंगद्वैभेद  
 कोसुद्धरुमालारूप॥ होयजुकरूपकसंगविनकहितकविनकेभप॥ ८१७ सुद्धनिरंगरूपकयथा  
 गीतनकीधुनिलेतिकुनंगीज्योहैधिरचित्रलिखीप्रतिमासी॥ नंदकुमारतिहारीकथासुनि  
 योंपुनिफयैजताईविद्यासी॥ अंतनसोवतनींदविनाहंजुताहीतेजानतिहोनसनासी वा  
 अन्नेपीजुनेहलतातिहिंसीचनलाग्यामनोजवि<sup>ली</sup>सी॥ ८१८ निरंगमालारूपकयथा॥ साभा  
 कीलसनिहुलसनिचितचातुरीकीकलाकीलसनिविलसनिगढमतिकी॥ नसकीतरंगनीत  
 रुनताकीहरथनिवनथनिरंगनिकीरंगभभिरतिकी सकलविरंचिकीप्रवीनताकीप्रग  
 टनिनटनिलुनाईकीरटनिरतिपतिकी॥ विद्यावंकवेलनिकीलीजोभरिसंकष्यारेनंद  
 लालमरतिसरूपस्रजमतिकी॥ ८१९॥ अथपरंपरितरूपकलघनदोहना॥ एकस्यारोपअपा  
 यजहांहोयस्रन्यस्यारोप॥ भाषतवहैपरंपरितचारभेदद्वैत्रोप॥ ८२०॥ सलियस्यारुस्रसलिय  
 कहिवाचकडहंप्रकार॥ केवलमालामेदकारिचारभांतनिरधान॥ ८२१ सलियपरंपरित  
 केवलरूपकयथा॥ साहिवनंदकुमारसुजानकीकितिकविंदनियोंपरसंसी आठोदिगी



सनिम्पानहोई सनिमैश्रवनी सनिहंसवतंसी ॥ परनचैतहि मंसकीयंसी तिहं पुनकीति मनावलिनं  
 सी ॥ मुक्तनिवीच धनैरुचिकोसुचिमानसमध्यनिवासिनिहंसी ॥ ४२२ ॥ अस्त्रिष्ट परंपरितमालारू  
 पक यथा ॥ साधुजनमानसनिवास<sup>राज</sup>सहंसकमलाकरविलासकरिवेकोदिनकोहो ॥ कुवलयस्रा  
 नंदनिधानद्विजनाजलोकजीवननिदानवनसातेजलधरहो ॥ भाईविजैप्रथमप्रसिद्धिधनभी  
 मरतिविपुलविनोदकेनिकेतपंचसरहो ॥ राजतविसालवंसमुकतारतनतुमनामचंद्रसैसे  
 स्राज्जाकैनरवरहो ॥ ४२३ ॥ अस्त्रिष्ट परंपरितकेवलरूपकयथा ॥ सुंदरस्रागेभयो नलभपर  
 भानहैतैसीयसुंदरताको ॥ पारथसादिमहानयकेसमजीवन एकसवैजनताको ॥ मैं साहेव  
 श्रीनद्युवीरभुवालहि स्राज्जुभलैकविकोविदताको ॥ श्रीदसरथकोनंदवलीकंदहैकीरति  
 कल्पलताको ॥ ४२४ ॥ अस्त्रिष्ट परंपरितमालारूपकयथा ॥ विजयमतंगजकोनाजातमला  
 नसिलासेतुकविदारिदरदयानावारकौ ॥ चंडकरवारचंडकरकोअदयगिनिकेलिको  
 असीसालयसीससकमानकौ ॥ अन्नतममंदमंदमांचलिविलोकियतसंगनसमुद्रप्रम  
 थनकेविहारकौ ॥ वैरवनिताकेमंगसैडुनविलोपकरनाजैकररामवीरभूपतिअदानकौ



४२५॥ नवपल्लवकरनिवल्लरिनिक्कैकन कमलनिसैं मगनै निनिक्कै मरुकमलमुखनिसैं  
 कमलनीनिकै मुखचंदनिपिकवै निनिक्कै॥ तिमिचंद्रचंद्रकारुचिरदुकूलनिसाठैदि  
 ससखदै निनिक्कै॥ नितकरतकामविज्रमको धरिवलते ईमालिस्रतिपै निनिक्कै॥ ४२६॥  
 इत्पादिरसनारूपकहं जानिये॥ मालोपमाज्यो ईहां हूं पूर्वपूर्वको पनपरप्रतिरूपमेयस्यै  
 मयअल्लेखालंकारलखन॥ वहुतभांति सो वहुत जहं करत एकअल्लेख॥ एको करत मनेकविधि  
 जहअल्लेखसलेख॥ ४२७॥ मनेककरि मनेकभांतिअल्लेख यथा॥ पाना वारपयको मपानजानै ईदिना  
 सौहिमिगिरि जानै हरगेहकी गुसां इनी मानसरजानै राजहंसनकेवंसचंद्रचंद्रकाचकोर  
 जानै तिमरनसा इनी॥ विधिजानै सानद महानद गने सजानै ग्यानी जानै नानद सौ पानद  
 नसा इनी॥ ४२८॥ एककरि मनेकभांतिअल्लेख यथा॥ चरननिको मलनितं वनिमै पीननाभ  
 सरमै गंभीरधीरगजसेगवनकौ मध्यदिसर्षीनअरजनिमै अतंगस्रतिदीरयइगनदुष  
 दारिददवनकौ॥ सौठनि मरुन मुखहासमै अजासयरे मूरति विजयरूपरतिके नवनकौ॥  
 वरुननिकेत एकमानंदको देत हिंयभासोभारिभागधेयभवके भवनकौ ४२९॥ यथावा॥ लघ



कहैनेहरीनदोषकहैआसरोनइंद्रियकहितनितनियहिकीवातहै सोजसकहतभीरुनीरस  
 विसनकहैकलिव्रहैकौनोविधिसोयोनहिजातहै॥ कामकहैकैसेअनलीनीजातिचितव्रतिति  
 याजितकहैसरसतिसरसातहै पनतियकहैपंडसरजनकहैभपनामचंद्र एकहंसनेकसोदि  
 यातहै॥ ८३०॥ अथपरणामालंकारल॥ अपमानजुअपमेयहै प्रकतक्रियाकेअर्थ॥ सोपरिनाम  
 वसानहीपंडितसकविसमर्थ॥ ८३१॥ यथा॥ थिरहैरहतसथापानहैनसंचरतआयेलाललो  
 चनचकोरइतदीजियै॥ भाजिकैचलतकतचरनसरोजनिसेनैकाथिरताईगहोयेदकतकीजियै  
 ठाढीइतीदूरिकतधरहरकांपियतसंकहंनभरीकतस्वदजलभीजियै॥ भईलरिकईअवपुनभीव  
 सीठनईतरुनईआलीअपदेसदेतिलीजियै॥ ८३२॥ अथअपनतिलघन॥ जहंअपमेयनिषे  
 थिकैसाधतहैअपमान॥ तहांअपनूतिकहतहैपंडितसकविसजान॥ ८३३॥ यथा॥ याविधिभो  
 गियलालमनावतमानिनिमानतजोशहिंठाही प्यारीकहारितुमानकीहैयहधायमिलाव  
 लिकैगलवांही॥ फरनचंदकेमंडलहंसलिदेवदुरेखकलंककीनाही सोइगईरतिकैअ  
 मसोअजनीरमनीलपटीअनमाही॥ ८३४॥ यथा॥ देवहुआलीमनोजकोवैरकितोयह



म्राजमयोजगज्राहर॥ नंदकुमारवियोगसोद्वरीदीनवरीमृगनैनिनमाहर॥ कुंजनिकुंज  
 निमारेनसालनिराजतहैनमृलीइतिग्राहर॥ साइकसाइकमध्यइहीमृति यायकनैलपटायो  
 हराहर॥ ६३५ यथावा॥ जोरतिनाइककोहमरीहरनैनहुतासनज्वालजनायो॥ जोरतिनाइक  
 सोतुवनामिसुधासनमैमृंगमृंगाननम्रायबुजायो॥ तामधितेमृगलोचनीमेचकधूमसमह  
 अछोमनभायो साइकमावलिकोयलपाइदुहं कुचकुंभनिकेविचम्रायो॥ ६३६ मृथमृथस्ते  
 वलधन ॥ श्रंद॥ एकमृथप्रतिपादकसदनिरहंमृनेकभासतहैमृथ॥ ताहिसृथकोस्लेषवसा  
 नतपंडितसुकाविसमहसमर्थ॥ ६३७ यथा॥ दिनधरतअदयमृतिदीहप्रभाजुतदिपतदसोदि  
 सविमलकरै॥ जगकरतअजागरजोतिभस्योसमकर्मप्रवृत्तिनिभुवनभरै चलवोरचार  
 स्वश्रंदगामिजनदुराचारकोमेटिधरै नितसरसकरनिकमलाकरभोगीम्रापप्रभाकरत  
 तमहिहरै ६३८ मृथसमासोक्तिल॥ <sup>मृथ</sup>प्रकृतकैकहतवाक्यमैस्लिखविसिधनहंकिजोर॥  
 जोमृप्रकृतमृथकरियतसोसमासोक्तिसुकविनिचितचार॥ ६३९ यथा॥ लागीसत्रुकंठमं  
 नसपागीमृनुनागीतहांजागीरनरजनिरचितिमनभायोहै मातंगनिरूपरपरतपरन



रदेखीमैसीतिगतासोइनचितमटकायोहै होंतोकविपंडितविविधधुनिमंडितनिभांतिभां  
 तिदीनीनेहनैकनलंगायोहै यहैकहवेकोभपरासचंद्रनावेनासुजसदूतइंदरानैसिंधुपैप  
 ठायोहै ८४०॥ यथावा॥ वेधतिहैवृजवालनकेमनरूपविसेषविलासनिजागी॥ पानकनैम्रध  
 नामतकोनिसवासरिपानिपनैरसपागी॥ कामकुतहलकीमनुधामरहैनितहीवदुरंगनिना  
 गी॥ कुंजनिकुंजनभावतिहैमनमोहनकेमुखलीमुहलागी ८४१ यथावा॥ एकैमनमाईकैक  
 नारैकरलाईम्रएकैसरसाईम्रडुवैननिबुलायकै॥ एकैऊहिगोरेमुखचंदसोसाधंदलगि  
 पियतिपियषपरसंततसहायकै॥ एकैरसरूपरंगरंगितविनाजैतातैतैहीवृजनाथीम्रतिकूह  
 रीमचायकै ॥ छविमदयाकीइतरातिइनरातिनमैमुखलीम्रकेलीहरिसंगसुखपायकै ८४२  
 यथावा॥ विद्युतीवदनपरममजलविंदुलसैवाननकोभारछटिजातवानवानहै विधिपाध  
 नककिंकिनीगनगनकनेवरनकीरनकम्रवननिसुखसारहै॥ दीरघनितंवनअनजअ  
 तंगउरदुहरीसीहोतितनहालैअनहारहै पानकोप्रहारदियैहुलसतिहिंयैतंतोकेंडुककी  
 केलिकीयैहोतवेसंभारहै ८४३ म्रयनिदर्शनालंकारलघन॥ जहांवसुसंवंधनहिवन



तस्य पुत्रिः अपमाहि ॥ पत्रिकल्पकैर्है निरवहति निदर्शना कर्हिताहि ॥ ८४४ यथा ॥ कित्तिकहान पश्री  
 रघुवीरकीचित्रपवित्रचरित्रनिफरी ॥ उद्विक्ता पुनियो मनकीतिहि भाषनकोऊतकंठतिरु  
 री ॥ दुस्तरसागरकोचदिनोपनयनभयोचैहो लैमगकरी ॥ मेरुमहीधनकोभरिवाघअठ  
 योचैहो पुनियागगकरी ॥ ८४५ यथावा ॥ एकदिना तुवतिष्यप्रतापदुलासतमित्रसरोजसलो  
 भा ॥ द्रुजीदिना तुवकीनतिदेति जुचितकुमोदनिश्चानंदगोभा ॥ साहवशीरघुवीरभुवालड  
 हंमिलिर्विसतानतजोभा धारतहै जगसुखजचंदसमेतसुमेरुकेअंगकीसोभा ॥ ८४६ ॥ वा  
 हनसोअतिदीहसुथाहतरंगिनीनाहमलैतयोचाहै ॥ लीयोचहैकरमैरासिविवहितारनके  
 जनवेकोऊआहै मेरुहिलायोचहैनिहवोकरितोलनकोधरनीहिअमाहै राघववीरभु  
 वालजुतोअनवंदससंअगिनाअवगाहै ॥ ८४७ अथअन्यनिदर्शनाल ॥ आपुनअपनेहै  
 तुकेअन्यकीजहंअक्ति ॥ होतिकियाहीकरितहांनिदर्शनाइहिंजुक्त ॥ ८४८ यथायेदा ॥ लघु  
 अन्नतपदपाइपदैअनयासही इहिंविधिलोकानिकहतसिलाकनिकासही सैलसिखरपर  
 चढीपदैअधतधना मंदपवनहीहलिलवोसुविचयना ॥ ८४९ अथअप्रसूतप्रसेसा



लघना॥ अथ प्रसृतुत अर्थ हिकाहत लघियत अथ्यु अर्थ॥ अथ प्रसृतुत परसंस सोभा घत सक विसम  
 र्थ ८५०॥ कारिज कारन वरूप प्रसंग कक हिसा मान्य विसेष प्रसंग॥ तिहिते अथ्य वचन अरु तु  
 ल्य हि प्रसृतुतु ल्य वचन करंग॥ ८५१॥ इति विधि पंच प्रकाश की अथ प्रसृतुत परसंस॥ या सो अ  
 न्यो कति कहत कविता कंज निहंस॥ ८५२॥ कारिज के प्रसंग मै कारन को वचन यथा॥ रंच कधी  
 रज को गहियो सहियो जिय नैक मंग की मै डनि॥ की नी पद्या न समैं विनती मै जल य अही अ  
 नु नाग की मै डनि॥ फरी न दी अर नै न के नी र नि मुं ट नि को प र दे स के पै ड नि॥ वार हि नो कि  
 ल ई व डु वार सु वेल नि सी व हिया न के वै ड नि॥ ८५३॥ ईहां प्रस्थान ते को निवृत्ति भये यह का  
 रिज प्रस की ये कारण कसो अरु कारन के प्रसंग मै कारिज को वचन यथा॥ मान व्रज बाल  
 मै न ता मर स ताल मै न काम र स जाल मै न जो कूज जि आ रे मै॥ स न द स मा ज मै न फले रि तु  
 रा ज मै न सैं क स घ सा ज मै न सी त ल फु हा रे मै॥ घिर त च प ल लाल लो च न कु रंग जु ग भि न त  
 फिर त रूप कान न कि ना रे मै॥ सु ल फ क पो ल प र जु ल फ जं जी री डा रि कु ल पा की ये ते तु म  
 ता रे नै न ता रे मै॥ ८५४॥ ईहां नायक को नेह कारण है ता के प्रसाव मै कारिज कसो यथा वा॥



शानससौकषूहै उपज्योकर शानसलै मुखसानसदेवति॥ चौगुनेचो जमनो जके सो जऊनो जनि  
 कंज कली मवनेवति॥ लालनयेन सकेवस है अठि जाय मकेलिय मंगनि पेषति जाने हं जो  
 वन कौन जसावति वालही वै सविलास विसेवति ८५५॥ ईहां ग्यात जो वना तकारण के प्र  
 संग कारिज को हे सामान्य यो प्रसंग मै विसेव को वचन यथा॥ यों गल कै नलिनी दल पै जिमि मंवर  
 मै ऊडु जो तिलवा वै॥ कोऊ महामुक्ता फल जानि कै मंगुली मंगुसों जौ लौ लगावै तौ लौ विला  
 य गयो जल विंदु वट्टोत वसंत रसोचन मावै॥ मेरे ही भाग गयो ऊडि मै सेविचार करै निस  
 नीदन मावै॥ ८५६॥ ईहां जटन को महत्व है यर सामान्य प्रकृत भए विसेव कसो विसेव  
 के प्रसंग मै सामान्य वचन यथा॥ ताको रूप जो वन सफल करि जानियत देवन को रति सो न  
 तीस मभिलाखे है ताके भाल भवन कै रसो धरनी को भाग सारद सो नारद सरस मुख भा  
 खे है ताके जुगलोचन चकोर धवि या के मरुपा के प्रेम पाई सख सखा रस चाखे है जिन नि  
 ज माधे नैन को॥ रल धिरा घे मति साधे हित वीच हरिवस करि नाखे है॥ ८५७॥ ईहां तूं मै  
 सी है या विसेव के प्रसंग मै सामान्य कह्यो ॥ तुल्य प्रसंग तुल्य मभिधान हितीनि प्रकार



लघोवहुजान॥ स्नेहसमासोक्तिमरुअपमातुल्यमाधेपनिदान॥ ४५८ स्नेहयथा॥ फै  
 लावतसुलेकमलाकरकेकोसकरफरतससेयमासभासमधिकाऊहै॥ मेटतविषय  
 तमवढतप्रतापपुंजदीनद्विजचक्रचितमानंदकोचाऊहै खंडतनखत्रकुलतेजहिस्रघं  
 डजाकोमंडलप्रचंडरुचिअदयकोदाऊहै कीनतिसवासरहीफैलिदीपदीपरुचिसोहत  
 सहजयहसूनकोसमाऊहै॥ ४५९॥ समासोक्तियथा॥ फलिसनिकाननमैधावतभ्रमर  
 हैसुकौनरुचिनीकीऊहिकंटकनिकेतकी॥ संगनिपिराईपुनिपेधियतिनिसदिनसेपतिप  
 रागतनधाईधविहैतकी॥ वसैमधुमासमधिसहजविकासजासुसंकरहैजापनऊदास  
 मतिचेतकी समनमनेकमौरजोवनप्रकासमानसेवैकिहिकामतौकठिनतनकेत  
 की ४६०॥ इहांकुतसितनायकाकेप्रसंगमैकेतकीकोमभिधानहै तहांसमासोक्तिमलहै  
 अपमाहीयथा॥ मंडलजासुस्रघंडलसैकहुंखंडितहंरुचिदीहलसैहीहै मासमने  
 कप्रकासकीयैवहुभासविलोकिमहीअमहीहै नैनचकोरसुधावसफरितभरितहांनस  
 फरसहीहै॥ जोनैनहीकमलाकरसोंकरकौनमयंकनैवानिगहीहै ४६१ यहपुनिको



वाच्यमैप्रतीपमानजोमर्थताकेस्योपविनाहीहोययथा॥ सागरयाजगमैऊजागरवडाई  
 तरीकाहाभयोमंजुलीजुलीनोमुनिरोसकै॥ वासवविपथकैराधैतंसपथगिरिजिन  
 कोवडाऊकोऊजानैकाहाकोसकै॥ ताऊपरवारिविसतारहैस्यथाहतेरोसूकिहूँजोजाहु  
 काहूँकाहुँएकदोसकै॥ तोहूँउवसाईपरैसातयेपतालतांईमानवसौदानवअलंघिता  
 हि कोसकै॥ ८६२॥ ईहांप्रसूतप्रभुकीडुषग्राहताहीमैतातपरिजहैसूकिवोनाहीविव  
 धित॥ कोऊअध्यायोपहीकरिहोययथा॥ कौनहैतंसनिऊत्तरदैऊसरोवरहोमरुदेस  
 केनेरो॥ परनहैतवदीनकोवाँवालतमित्रसूनोडुषमोहिघनेरो॥ सावनकेऊनयेघन  
 तेदिनजाचिकियोजलमैवहुतेरो॥ सोसमहीहरिहैकरसोनिरदैवहजेठकोभानकरे  
 रो॥ ८६३॥ ईहांदीनतादिककेस्योपहीकरिप्रसूतमर्थकोस्रभिधानहै॥ कोऊसंस  
 हीकेस्योपकरिहोतहैयथा॥ याकीसूनीरसनाविपरीतरुकाननकीस्रधिकीचपला  
 ई॥ डीठिनहीमदसोवहुभलिसीजानैनस्यापनीस्योरपराईभीतरहैकरसूनोमहाई  
 हतेपरवाननकितिकहाई॥ वातसूनायकोहोस्रलिहोवलिसेवनयाहिकहारुचिपाई



८६४॥ इहां रसना विपरीत ता रुसुत्तर्पता भ्रमन को स्रसेवन की हेतु नाही करुं चापल पुनि स्र  
 वन को हेतु ही है मद ऊलटी सेवन को निमित्त ही है ॥ ताते संसकरि स्या रोप है ॥ अथ स्रतिस ये  
 क्तिल यन ॥ दोहरा ॥ उपमान जु उपमेय को गिलिके होत प्रकास ॥ प्रसूत की जो मृग्य ता  
 जवत वस्रर्थ विकास ॥ ८६५ ॥ कारिज कारन को जु कछु फर्क पन विपरीत स्रतिस य ऊ  
 क्तिव धानिये चारि भांत पन तीत ८६६ ॥ प्रथम यथा वृत्त चंद्रिकायां छंद मोती दाम ॥  
 कनै च पलागन व्योम विहार ॥ सुमेर त रैज मुना जल धार ॥ मिलैंति न सों सर सिंधु तरंग ॥  
 धिलै स्रविंद साधा कन संग ८६७ ॥ कपोल कुलाहल को मल कंठ ॥ सनै जु वढै स्रति ही ऊत  
 कंठ ॥ दवै फल विंव जु कुंद कलीन ॥ वढै रस गुंजत पुंज सलीन ॥ ८६८ ॥ लसै जु गकं च न  
 केलिन वीन ॥ चला चल होइ रही दल हीन ॥ रही कल हंस कुली गहि मैन ॥ लघो सधिया यह  
 सो सर कौन ॥ ८६९ यथावा ॥ चंचल विना जैल ता कंचन की ता पै चंद तहां स्रति चारु स्रधा  
 र सकेत रंग है तिन की धवी लीख विवि दुम के वी च वी च विदुम के सदा ऊदै सर ज सों जेग  
 है ॥ चांदनी के चहूं सो रजै संध कार कुल तिन को सदा ही चक्र वाक नि के संग है ॥ लोचन स